RNI No. DELHIN/2012/48773 मासिक, विशेषांक 2020 वर्ष 9, अंक 4 ₹100

फेम इंडिया

सोच बदलें, समाज बदलेगा

50 प्रभावशाली भारतीय

एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे 2020

Shambhu's Foundation

(To creat Endless Happiness)

Address -
F Block - sector -50 , Noida -201304
(Delhi NCR)

Contact - +91-9911976808
Email ID - ss.fameindia@gmail.com
Website- www.shambhusfoundation.in

संपादकीय

फेम इंडिया
thefameindia.com
वर्ष 9, अंक 4, विशेषांक 2020

पैट्रॉन – ई आर महादेवन
फाउंडर /एडिटर इन चीफ – राज श्री
एडिटोरियल डायरेक्टर – यू एस सोंथालिया
चीफ आपरेटिंग आफिसर – शंकर सोंथालिया
को फाउंडर / मैनेजिंग एडिटर – श्वेता श्री
एग्जिक्यूटिव डायरेक्टर – रोहित श्रीवास्तव
एग्जिक्यूटिव डायरेक्टर – राघवेश अस्थाना

एसोसिएट एडिटर – धीरज कुमार
आर्ट डायरेक्टर – स्वर्ण लता
एग्जिक्यूटिव एडिटर – मुकेश कुमार
सिनियर एडिटर – भानु प्रकाश

एडिटोरियल टीम :-
सुरेंद्र पहल
शत्रुघ्न प्रसाद
धर्मेश ठक्कर
शाकाभंरी नंदन सोंथालिया
साहिल श्रीवास्तव
शाम पुजारी
अंजू भरमौरिया
आनंद वर्मा
लता चौहान
हेमंत सिंह
मिथिलेश पाठक

मैनेजमेंट टीम :-
फाइनेंस – हिमांशु नथानी
सर्कुलेशन – प्रवीण मिश्रा
एडमिन – सत्येंद्र सिंह
एडवर्टाइजमेंट – नीतू चौधरी
लीगल – एडवोकेट रश्मी भूषण
फोटो रिसर्च – राजेश वर्मा

(स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक राजश्री द्वारा ज्योति प्रिंटर्स, ई-94, सेक्टर 6, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर से मुद्रित एवं ए-533, जीडी कालोनी, मयूर विहार फेज-3, दिल्ली से प्रकाशित, संपादक - राज श्री)

संपादकीय एवं मार्केटिंग ऑफिस
फेम इंडिया पब्लिकेशन प्रा.लि।
762,ब्लाक-एफ 8, सेक्टर-50, नोएडा 201304 (उ.प्र.)
फोन नं.- +91-7004450124
ई मेल: contact@thefameindia.com

RNI No. DELHIN/2012/48773

यूँ ही नही बनता कोई प्रभावशाली

प्रभावशाली एक ऐसा शब्द है जिसमें गजब का आकर्षण छुपा है। लगभग हर व्यक्ति अपने जीवन में प्रभावशाली अवश्य बनना चाहता है। हालांकि कम ही लोग ऐसे हैं जो इस प्रभाव को पाने के लिए आवश्यक प्रयास करते हैं। एक प्रभावशाली व्यक्ति सच्चा, पारदर्शी, जागरूक, दूरदर्शी और सुखद व्यक्तित्व वाला होता है। उसमें एक मिशन, एक दर्शन, और प्रतिबद्धता की भावना होती है। समान्य जनता के जीवन को प्रभावित करना प्रभावशाली व्यक्तियों का प्रतिबिम्ब है।

इसका अर्थ यह हुआ कि प्रभावशाली बनने के गुण कुछ अंश तक हर व्यक्ति में छुपे होते हैं। इन गुणों को सामने लाना चुनौती है। प्रभावशाली व्यक्ति बनने के लिए दस गुण जरूरी हैं। प्रभावशाली व्यक्ति चाहे जिस क्षेत्र से हों, उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उन्हें सही समय पर उचित निर्णय लेने के लिए वांछित बुद्धिमत्ता की जरूरत होती है। प्रभावशाली व्यक्तियों को सबको साथ लेकर चलना आता है। इसके अलावे, वे आलोचना से डर कर अपनी राह नहीं बदलते। सच्चे प्रभावशाली व्यक्तियों में धैर्य और साहस होते हैं और वे विफलता व सफलता को एक भाव से लेते हैं। वे आदर्शवादिता, व्यावहारिकता से पूर्ण और दूरगामी लक्ष्यों व छोटी अवधि वाली जरूरतों के बीच सामंजस्य बनाने में सफल रहते हैं। प्रभावशाली व्यक्ति समूह, समाज एवं राष्ट्र के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण रखते हैं। वे स्पष्टवादी होते हैं। उनका संतुलित व्यवहार समाज में आदर्श स्थापित करने में सफल रहता है और वे अपनी टीम और समूह को सफलता का श्रेय देने से नहीं चूकते। प्रभावशाली व्यक्तियों में बुद्धिमान नेतृत्व क्षमता होती है जो किसी भी समूह, आंदोलन या विकास और बदलाव के लिए आवश्यक होता है।

हालांकि प्रभाव ऐसी खासियत है जो इंसान का जीवन सुगम बना देती है, लेकिन इसके साथ कई जिम्मेदारियां भी आती हैं। जो वास्तव में प्रभावशाली हैं उन्होंने कभी अपनी जिम्मेदारियों से मुँह नहीं मोड़ा। उन्होंने न सिर्फ अपने करीबियों के लिये, बल्कि पूरे समाज और मानवता के लिये कल्याणकारी कार्य किये हैं।

फेम इंडिया ने इस सूची को बनाने में प्रसिद्ध सर्वे एजेंसी एशिया पोस्ट की मदद ली। सूची में शीर्ष नेताओं, कलाकारों, उद्योगपतियों, अधिकारियों, समाजसेवकों और अन्य दिग्गजों के नाम शामिल हैं।

राजश्री

राजश्री

50 प्रभावशाली भारतीय

05 **नरेंद्र मोदी**
भारत के सार्वाधिक प्रभावशाली व्यक्ति

13 **अजीत डोभाल**
हर मुश्किल में
संकटमोचक की भूमिका में

19 **नीतिश कुमार**
सात निश्चय के चैंपियन
मुख्यमंत्री

26 **सदगुरु जग्गी वासुदेव**
रन फॉर वाटर के प्रणेता ईशा
फाउंडेशन के प्रमुख

35 **जनरल विपिन रावत**
भारत के पहले सीडीएस
जनरल

43 **डॉ. रणदीप गुलेरिया**
सौम्य और साहसी चिकित्सक
हैं एम्स के निदेशक

46 **भूषण कुमार**
भारतीय फिल्म व संगीत जगत
के सफल कारोबारी

50 **पंकज भाई पटेल**
हौसलों की ऊँची उड़ान भरने
वाले उद्योगपति

54 **रवीश कुमार**
मैगसेसे अवॉर्ड से मिली दुनिया
भर में शोहरत

भारत के सार्वाधिक प्रभावशाली व्यक्ति
नरेंद्र मोदी

नरेंद्र दामोदरदास मोदी भारत के लगातार दूसरी बार प्रधानमंत्री बने हैं। वर्ष 2019 में भारतीय जनता पार्टी ने उनके नेतृत्व में दोबारा चुनाव लड़ा और इस बार पहले से ज्यादा बड़ी जीत हासिल हुई। पार्टी ने कुल 303 सीटों पर जीत हासिल की। एनडीए को कुल 352 सीटें प्राप्त हुईं। 30 मई 2019 को नरेंद्र मोदी लगातार दूसरी बार प्रधानमंत्री बने। नरेन्द्र मोदी विकास पुरुष के नाम से भी जाने जाते हैं और वे वर्तमान समय में देश के सबसे लोकप्रिय नेता हैं। इससे पहले उनके नेतृत्व में एनडीए ने वर्ष 2014 का लोकसभा चुनाव लड़ा और 336 सीटें जीतकर अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। अकेले भाजपा को 282 सीटें हासिल हुईं थी।

नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2014 में उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक नगरी वाराणसी एवं गुजरात के वडोदरा से पहली बार संसदीय चुनाव लड़ा और दोनों जगह से जीत दर्ज़ की थी। उनके नेतृत्व में भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश एवं देश के अंदर बुनियादी सुविधाओं पर खर्च तेज़ी से बढ़ा। उन्होंने ब्युरोक्रैसी में भी कई बड़े सुधार किये। 17 सितम्बर 1950 को गुजरात के मेहसाणा जिले के वडनगर में एक गुजराती परिवार में पैदा हुए नरेंद्र मोदी के विषय में कहा जाता है कि उन्होंने बचपन में चाय बेचने में अपने पिता की मदद की थी। आठ साल की उम्र में ही वे आरएसएस से जुड़ गये थे। ग्रेजुएशन करने के बाद उन्होंने अपना घर छोड़ दिया और देश भर में स्वयंसेवक के तौर पर घूम-घूम कर सेवा कार्यों में जुटे रहे। वर्ष 1971 से वे आरएसएस के पूर्णकालिक कार्यकर्ता बन गये थे। साल 1975 में जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने आपातकाल लगाया और विपक्षी नेताओं की प्रताड़ना शुरू हुई, तो उस दौरान उन्होंने भूमिगत होकर आंदोलन का संचलन किया। वर्ष 1985 में वे बीजेपी से जुड़े और 2001 तक पार्टी संगठन में विभिन्न पदों पर कार्य किया। वर्ष 2001 में गुजरात में भूकंप ने भारी तबाही मचायी और तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने नरेंद्र मोदी को 2001 में गुजरात का मुख्यमंत्री नियुक्त किया। वे 7 अक्तूबर 2001 से 22 मई 2014 तक चार बार गुजरात के मुख्यमंत्री रहे हैं। मुख्यमंत्री के तौर पर उनकी नीतियों को लोकप्रिय व आर्थिक विकास को बढ़ावा देने वाला माना जाता है।

नरेंद्र मोदी देश की जनता के बीच खासे लोकप्रिय हैं। उन्हें 'नमो' नाम से भी जाना जाता है। अंतर्राष्ट्रीय मैगजीन टाइम ने पहली बार वर्ष 2013 के "पर्सन ऑफ़ द ईयर" की सूची में नरेंद्र मोदी को शामिल किया था। आज वे विश्व के सबसे चर्चित राजनेताओं में एक हैं, माइक्रो-ब्लॉगिंग साइट ट्विटर और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर भी वे सबसे ज्यादा फॉलोअर वाले भारतीय राजनेता हैं। उनकी कार्यशैली की धमक आज पूरी दुनिया में है, जननायक और बेहद प्रभावशाली नरेन्द्र मोदी गुजराती भाषा के अलावा हिन्दी में भी देशप्रेम से ओतप्रोत कविताएँ लिखते हैं।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में नरेंद्र मोदी पहले स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

99.6

प्रभावशाली भारतीय

देश के सबसे पॉवरफुल मुख्यमंत्री
योगी आदित्यनाथ

2

उत्तराखण्ड के पौड़ी गढ़वाल जिले स्थित यमकेश्वर तहसील के पंचुर गाँव के एक गढ़वाली क्षत्रिय परिवार में 5 जून 1972 को फॉरेस्ट रेंजर आनन्दसिंह बिष्ट और सावित्री देवी के घर एक अत्यंत दिव्य बालक का जन्म हुआ और उन्होंने प्यार से उनका नाम रखा अजय। अजय की शुरुआती पढाई गांव और आसपास ही हुई, फिर बाद में बीएससी की परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने ऋषिकेश में एमएससी में दाखिला लिया। राम मंदिर आंदोलन के दौरान वे उस आंदोलन से जुड़ गये। वर्ष 1993 में एमएससी की पढ़ाई के दौरान वे गुरु गोरखनाथ पर शोध करने गोरखपुर आये एवं इस दौरान ही वे महंत अवैद्यनाथ के संपर्क में आये। वर्ष 1994 में उन्होंने सन्यास लेने का निर्णय लिया और पूर्ण संन्यासी बन गये, और नया नामाकरण हुआ योगी आदित्यनाथ। 12 सितंबर 2014 को महन्त अवैद्यनाथ के निधन के बाद योगी आदित्यनाथ को वहाँ का महंत बनाया गया।

वर्ष 1998 में केवल 26 वर्ष की उम्र में पहली बार योगी आदित्यनाथ गोरखपुर से भाजपा प्रत्याशी के तौर पर चुनाव लड़े और जीते। वर्ष 2014 में वे पांचवी बार दो लाख से ज्यादा वोटों से जीतकर सांसद चुने गये। बुलंद इरादे, ईमानदार छवि एवं दूरदर्शिता के धनी योगी आदित्यनाथ ने 19 मार्च 2017 को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली। उन्हें प्रखर राष्ट्रवादी राजनेता माना जाता है, योगी आदित्यनाथ की छवि शुरू से ही बेदाग रही है और उन्होंने बतौर मुख्यमंत्री उत्तर-प्रदेश की स्थिति को एक टर्न अराउंड दिया है। वे खुद को एक्शन मैन के तौर पर प्रोजेक्ट करने में कामयाब रहे हैं और अपराध व अपराधियों पर काफी सख्ती से लगाम कसा हैं। बेहतर और स्मार्ट पुलिसिंग के लिए उनके नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार ने व्यापक सुधार किया हैं। योगी आदित्यनाथ प्रदेश को एक इनवेस्टमेंट हब के रूप में स्थापित कर रहे हैं, राज्य में आयोजित यूपी इन्वेस्टर्स समिट के जरिये उन्होंने राज्य में लाखों करोड़ के निवेश को आकर्षित किया, राज्य के विकास के लिए भी उन्होंने हजारों करोड़ रुपये की योजनाओं की नींव रखी। कोरोना संकट में भी मुख्यमंत्री योगी के कार्य को अव्वल माना जाता है, संक्रमण पर लगाम लगाने व लोगों को सहूलियत देने वाले उनके फैसले अन्य राज्यों के नजीर बन रहे हैं।

योगी, संन्यासी, महन्त और एक राजनेता.. जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता के शीर्ष पर हैं योगी आदित्यनाथ। वे नाथ संप्रदाय के सार्वाधिक सम्मानित साधुओं में गिने जाते हैं। उन्होंने कम उम्र में ही संन्यास ले लिया और कठिन तपस्या व साधना की। वे गोरखपुर के प्रसिद्ध बाबा गोरखनाथ मन्दिर के पीठाधीश्वर महन्त हैं। बतौर राजनेता वे भारतीय संसद में गोरखपुर का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं और 19 मार्च 2017 से देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में योगी आदित्यनाथ दूसरे स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

57.0

प्रभावशाली **भारतीय**

मजबूत निर्णय लेने वाले दमदार राजनेता

अमित शाह

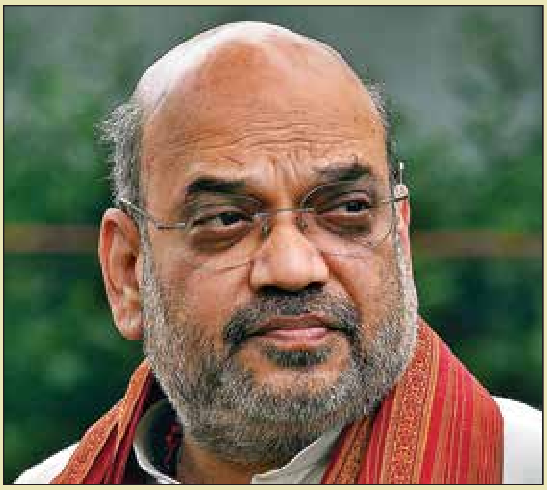

अमित शाह का जन्म 22 अक्टूबर 1964 को मुंबई में हुआ। वे गुजरात के एक व्यापारी परिवार से ताल्लुक रखते हैं। 1982 में कॉलेज के दिनों में उनकी मुलाकात नरेंद्र मोदी से हुई। वे 1983 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़े। 1988 में सक्रिय राजनीति में कदम रखने वाले शाह की कामयाबी का मूलमंत्र है कि वे मेहनत करने और साहसिक फैसले लेने में कभी नहीं हिचकते। वर्ष 2019 चुनाव में बीजेपी को मिली भारी कामयाबी के बाद वे गृहमंत्री बनाये गये।

कैबिनेट में आने के साथ ही उन्होंने कई बड़े फैसले लिये जिनमें 70 साल से देश के लिए नासूर बनी धारा 370 को हटाना भी शामिल था। उन्होंने पड़ोसी देश में हिंदुओं की दयनीय दशा को देखते हुए नागरिकता देने के लिए सीएए लागू करवाया और तमाम विरोधों के बावजूद अपने फैसले पर अडिग रहे। बायोकेमिस्ट्री से बीएससी की पढ़ाई करने वाले अमित शाह की बीजेपी के साथ देश की राजनीतिक केमिस्ट्री पर भी खासी पकड़ मानी जाती है। 2014 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने देश के सबसे बड़े सूबे उत्तर प्रदेश में बीजेपी गठबंधन को 80 में से 73 सीटें दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, जिसके बाद उन्हें पार्टी अध्यक्ष बनाया गया। पद संभालने के साथ ही वे मिशन 2019 में जुट गए थे। भाजपा अध्यक्ष बनने के बाद शाह ने सबसे पहला लक्ष्य बीजेपी की सदस्यता को 10 करोड़ तक ले जाने को बनाया और सफल रहे। लोकसभा चुनाव में बीजेपी अध्यक्ष के तौर पर उन्होंने देशभर में पार्टी के सीट बंटवारे, उम्मीदवारों के चयन और प्रचार तक की सारी जिम्मेदारियां निभायीं और अमित शाह बीजेपी का दूसरा सबसे बड़ा चेहरा बनकर उभरे। अमित शाह जमीन से जुड़े चिंतनशील और मेहनती राजनेता हैं। वे जोखिम उठाने से कभी परहेज नहीं करते। विरोधियों की लहर का हवा निकालना उनकी सबसे बड़ी खासियत है। आज तक खुद एक भी चुनाव में नहीं हारने वाले अमित शाह पार्टी की जीत के चाणक्य साबित हुए है। अमित शाह की पार्टी में खासी मजबूत पकड़ है। बीजेपी की कामयाबी का अंकगणित उनसे ज्यादा कोई नहीं जानता। ऐसे में बिहार व पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव और देश में कोरोना संकट दोनों में संकटमोचक तौर पर उनके सामने काफी चुनौतियां हैं, जिन्हें आने वाले दिनों में उन्हें बखूबी निभाना है।

भारत के गृह मंत्री अमित शाह मजबूत निर्णय क्षमता वाले राजनेता माने जाते हैं। उनकी सोच और सख्त फैसले लेने की क्षमता उन्हें कई परंपरागत राजनेताओं से अलग ला खड़ा करती है। एक स्टूडेंट लीडर से शेयर कारोबारी और फिर प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर के राजनेता बनने के लंबे सफर में उनका कई स्तरों का संघर्ष छुपा है। केवल तीन दशक में ही अपनी उपलब्धियों और खूबियों की वजह से वे पहले गुजरात और फिर देश की राजनीति की सबसे प्रमुख शख्सियतों में से एक बन गये हैं। ट्रिपल तलाक, धारा 370 और सीएए के मुद्दों पर उनके दृढ़ फैसलों ने उनकी छवि दूरदर्शी व दमदार नेता की बना दी है।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में अमित शाह तीसरे स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

96.5

प्रभावशाली भारतीय

भारतीय उद्योग जगत के अनमोल रत्न

रतन टाटा

रतन टाटा देश के सबसे बड़े समुह टाटा ट्रस्ट के चेयरमैन हैं। उनकी छवि एक शालीन और दांव-पेंच से दूर रहने वाले उद्योगपति की है। साल 2008 में भारत सरकार ने उद्योग एवं व्यापार क्षेत्र में रतन टाटा को पद्म विभूषण से सम्मानित किया। रतन टाटा को टाटा ग्रुप में वर्ष 1971 में नाल्को का डायरेक्टर इन चार्ज बनाया गया, जहां उन्होने कंपनी को आगे बढ़ाने में अपनी कार्यक्षमता को सिद्ध किया। दस वर्ष बाद उन्हें टाटा इंडस्ट्रीज और टाटा ग्रुप के अन्य होल्डिंग कंपनीयों का अध्यक्ष बनाया गया और वर्ष 1991 में उन्हे पूरे टाटा ग्रुप का चेयरमैन नियुक्त किया गया।

टाटा समूह उनके नेतृत्व में भारतीय शेयर बाजार में व्यापारिक उद्यम से सबसे अधिक पूँजी वाली कंपनी बनी। 28 दिसंबर 1937 को मुम्बई में जन्मे रतन नवल टाटा बड़े निर्णय लेने वाले दूरदर्शी उद्योगपति हैं। इन्होने टाटा कंसलटेंसी सर्विसेस को पब्लिक लिमिटेड बनाया और टाटा मोटर्स को न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध करवाया। 31 जनवरी 2007 को रतन टाटा की अध्यक्षता में, टाटा संस ने कोरस समूह को सफलतापूर्वक अधिग्रहित किया। इसके कारण टाटा दुनिया की पांचवीं सबसे बडी इस्पात उत्पादक कंपनी बन गयी।

26 मार्च 2008 को रतन टाटा के अधीन टाटा मोटर्स ने फोर्ड मोटर कंपनी से जगुआर और लैंड रोवर को खरीद लिया। दुनिया की सबसे सस्ती कार नैनो के निर्माण का इन्होने वादा किया और उसे पूरा करके भी दिखाया। उन्हे लन्दन स्कूल ऑफ़ इकॉनॉमिक्स से मानद डॉक्टरेट की उपाधि भी हासिल है। रतन टाटा को उद्योग जगत का बहुत लंबा अनुभव है, स्टार्टअप में दिलचस्पी के लिए वह काफी मशहूर हैं। उन्होंने कई स्टार्टअप में पैसा भी लगाया है। रतन टाटा सादा जीवन उच्च विचार को मानने वाले सफल उद्यमी है। सामान्य जीवनशैली के रतन टाटा एक ओर एडवांस टेक्नोलॉजी प्रमोट करते हैं, वहीं दूसरी ओर समाज विकास के लिए भी प्रयासरत रहते हैं। वे विश्व की उन महत्वपूर्ण व्यक्तियों में शामिल हैं, जो अपने वायदे को निभाने के लिये जाने जाते हैं। पद्म भूषण, पद्म विभूषण सहित कई सम्मानों से सम्मानित रतन टाटा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न संस्थाओं में वरिष्ठ पदों पर पदस्थापित भी हैं। 83 वर्षीय रतन टाटा के नेतृत्व में टाटा समूह ने कोरोना संकट में सबसे पहले पीएम-केयर्स फंड में 500 करोड़ रुपये का योगदान किया। उन्होंने साबित किया कि हमेशा की तरह टाटा ग्रुप देश के समर्थन में पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। टाटा समूह ने इस आपदा के लिए 1,500 करोड़ रुपये देने का संकल्प लिया।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में रतन टाटा चौथे स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

95.0

वर्चुअल ही नहीं, रीयल वर्ल्ड के भी बेताज बादशाह

5

मुकेश अंबानी

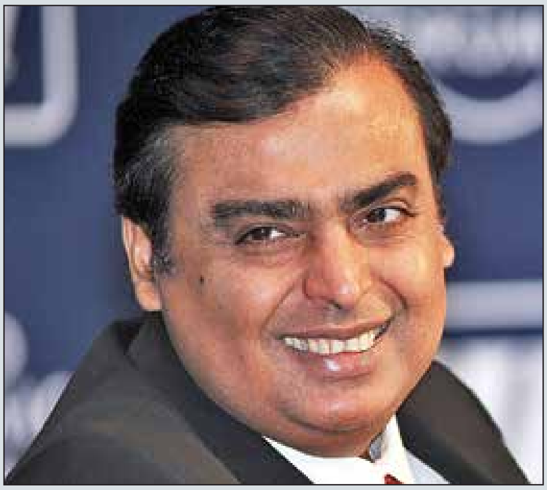

भारत ही नहीं, एशिया के सबसे अमीर उद्योगपति और रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर मुकेश अंबानी एक सरल किन्तु तेज-तर्रार उद्योगपति हैं। वे अवसर को पहचानने की कला में निपुण हैं और हर व्यापार में मास्टर स्ट्रोक लगाना जानते हैं। चाहे उनका पुश्तैनी व्यापार हो या पेट्रोकेमिकल्स, या टेलीकॉम हो या फिर रिटेल, हर क्षेत्र में वे एक बादशाह बन कर उभरे हैं। मुकेश अंबानी का जन्म 19 अप्रैल 1957 को यमन के अदन में हुआ। इनकी शुरुआती शिक्षा मुंबई में और उच्च शिक्षा अमेरिका में हुई।

केमिकल इंजीनियरिंग में बीई की डिग्री प्राप्त करने के बाद वे स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय से एमबीए करना चाहते थे और वहां एडमिशन भी ले लिया था, परन्तु अपने पिता धीरूभाई अंबानी के कहने पर उन्होंने स्टैनफोर्ट यूनिवर्सिटी की पढ़ाई बीच में छोड़कर 1981 मे रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड को ज्वाइन किया। उन्होने पिता धीरूभाई अंबानी के साथ रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड को आगे बढ़ाया और बाद में रिलायंस कम्युनिकेशंस लिमिटेड की स्थापना भी की। वर्तमान में मुकेश अंबानी की कुल संपति करीब 70 अरब अमेरिकी डॉलर है।

मुकेश अंबानी बेहद शांत और अपने बिजनेस के प्रति गंभीर माने जाते हैं। कारोबार को बढ़ाने के लिए सदैव ऊंची सोच रखते हैं। उनका मानना है कि बड़े सपने ही बड़ी सफलता दिलाते हैं। वे अक्सर कहते हैं कि ऊंचे ख्वाब देखो और उनके पूरे होने तक उम्मीद न छोड़ो। वे नाकामियों से घबराते नहीं बल्कि उससे सबक लेते हैं। भीड़ से अलग चलने की चाहत की वजह से उन्होंने देश में संचार क्रांति के एक नये युग की शुरुआत की।

दरअसल, मुकेश अंबानी के बेशुमार दौलत में बढ़ोतरी की सबसे बड़ी वजह उनका ड्रीम प्रोजेक्ट रिलायंस जियो है। ग्लोबल लेवल पर इसे 1 लाख करोड़ रूपये से ज्यादा का निवेश मिल चुका है। इस निवेश की वजह से रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयर ने भी रिकॉर्ड भाव को छू लिया। मुकेश अंबानी की शक्ति उनकी टीम है। जिसके बदौलत उन्होंने फेसबुक से 5.7 अरब डॉलर की डील पक्की की। एक तरफ जहां कोरोना की वजह से दुनिया आर्थिक मंदी की ओर जा रही थी ऐसे में 14 महीनों से चल रही डील को वर्चुअल मीटिंग के जरिये फाइनल कर उन्होंने अपने व्यापार को एक अलग ही आयाम दिया।

देश के सबसे अमीर व्यक्ति मुकेश अंबानी का घर एंटीलिया दुनिया के सबसे महंगे घरों में शुमार है। मुकेश अंबानी क्रिकेट ऑर फुटबॉल के भी बड़े शौकीन है। वे मीडिया फ्रेंडली हैं और लगभग हर मीडिया कनक्लेव में देखे जाते हैं। कोरोना संकट में भी उन्होंने पीएम केयर में आर्थिक मदद देने के साथ ही सीधे तौर पर भी जरूरतमंदों की मदद की है। 63 साल के मुकेश अंबानी को 2010 में बिजनेस कॉउंसिल ऑफ इंटरनेशनल अंडरस्टैंडिंग ने ग्लोबल लीडरशिप अवार्ड से सम्मानित किया, केमिकल हेरिटेज फाउंडेशन की तरफ से उन्हें ओथेमर गोल्ड मेडल भी मिल चुका है।

FAME INDIA

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में मुकेश अंबानी पांचवे स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

55.7

प्रभावशाली भारतीय

6

विपरीत परिस्थिति से निपटने में सफल पी. विजयन

पिनाराई विजयन केरल के ऐसे मुख्यमंत्री हैं जिन्हें वास्तविक अर्थों में जमीन से जुड़ा राजनेता माना जाता है। वे स्वभाव से रूखे, लेकिन गरीबों और जरूरतमंदों के लिए बेहद संवेदनशील हैं और अपने कार्यों को लेकर बेहद अनुशासित हैं। वे मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (मकपा) पोलित ब्यूरो के मेंबर हैं, उन्होंने 1998 में केरल प्रदेश माकपा के पार्टी सचिव का पदभार संभाला और करीब दो दशक तक इस पद पर बने रहे। 1996 से 1998 तक वे केरल सरकार में मंत्री रह चुके हैं।

पी. विजयन का जन्म 21 मार्च 1944 को कन्नूर जिले के पिनराई में एक गरीब परिवार में हुआ था। उनकी शुरुआती पढ़ाई पेरलास्सेरी स्कूल में हुई। उन्होंने गर्वनमेंट ब्रेनन कॉलेज से इकोनॉमिक्स में ग्रैजुएशन किया। वे 1964 में सीपीएम में शामिल हुए। उससे पहले उन्होंने कॉलेज लाइफ में एसएफआई ज्वाइन की और यहीं से उनके राजनीति सफर की नींव पड़ी। केरल में विभिन्न राजनीतिक गतिविधियों में उन्हें करीब डेढ़ साल तक जेल में बंद रहना पड़ा। 1970 में वे पहली बार केरल विधानसभा के सदस्य चुने गये। इसके बाद विजयन 1977, 1991 और 1996 में विधानसभा के लिए चुने गये। 1996 से 1998 तक मुख्यमंत्री के नयनार की सरकार में वे बिजली और सहकारिता मंत्री रहे। पार्टी को मजबूती के शिखर पर ले जाने के लिए हमेशा बेहतरीन कार्य करने में विश्वास रखने वाले पी. विजयन के लिए 2016 का साल अहम साबित हुए। केरल में 2016 में हुए विधानसभा चुनाव में लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट को भारी जीत मिली।

पी. विजयन ने 25 मई को राज्य के 12वें मुख्यमंत्री के रुप में शपथ ली। दरअसल उन्होंने मुख्यमंत्री बनने की पटकथा विधानसभा चुनाव से पहले ही रच दी थी। उन्होंने विधानसभा चुनाव से पहले पार्टी कार्यकर्ताओं में जान फूंकने और लोगों से मिलने के लिए 'नवा केरल मार्च' निकाला था जिसे लोगों का जबरदस्त समर्थन मिला था। लोग बड़ी सख्या में विजयन के साथ जुड़े। उनकी कोशिश का नतीजा हुआ कि वी.एस.अच्युतानंदन की तमाम दावेदारी के बावजूद विजयन केरल के मुख्यमंत्री बने। पिनाराई विजयन कार्यों को समय पर पूरा करने में विश्वास रखते हैं। राज्य में विकास को बढ़ावा देने के साथ सरकारी की योजनाओं को बखूबी लागू करवाना उनकी प्राथमिकता रही है। कोरोना के खिलाफ जंग में भी वे बेहद सख्ती का परिचय दे रहे हैं। उन्होंने साल भर मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग पालन करने का कानून बनाया। आगामी विधानसभा चुनाव पी. विजयन के लिए चुनौती हैं क्योंकि अक्सर कहा जाता है कि केरल में हर पांच साल पर सरकारें बदल जाती हैं। लिहाजा उनके लिए अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव अग्निपरीक्षा साबित होंगे। पार्टी को मजबूत करना और आम लोगों पार्टी से जोड़ना उनकी विशेषता रही है। उनकी सबसे बड़ी खासियत ये है कि अपने फैसलों को सख्ती से लागू करते हैं। विकास के लिए बदलाव करने से कभी परहेज नहीं करते।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में पी. विजयन छठे स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

94.8

प्रभावशाली
भारतीय

जीने की कला सिखाते विश्वशांति गुरु श्रीश्री रविशंकर

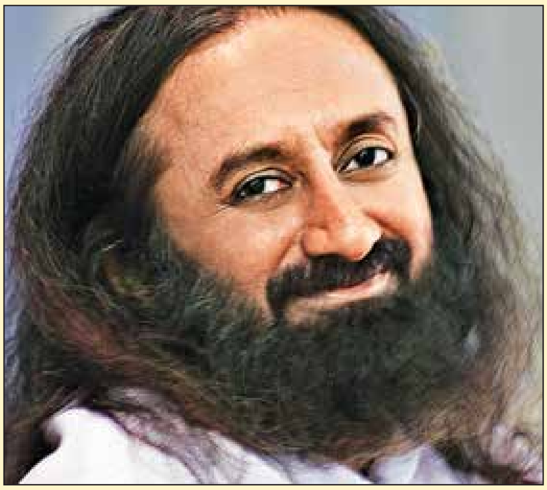

आध्यात्मिक गुरु श्रीश्री रविशंकर विश्व शांति गुरु और आर्ट ऑफ लिविंग के फाउंडर के तौर में जाने जाते हैं। चेहरे पर मुस्कान और करुणाभाव उनकी पहचान है। आर्ट ऑफ लिविंग एवं इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर ह्यूमन वैल्यूज जैसे संगठन के द्वारा 155 देशों से भी अधिक देशों के 370 मिलियन से भी अधिक लोगों उनसे जुड़े हैं और विभिन्न ध्यान, योग, प्रणायाम आदि कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों द्वारा जीने की कला सीख रहे हैं। दुनिया में बढ़ती अशांति और हिंसा के बीच आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रविशंकर ने आत्मीय शांति का मूलमंत्र देने का निर्णय लिया है। श्री श्री रविशंकर का जन्म 13 मई 1951 को तमिलनाडु के पापानासम में हुआ था। इनके पिता आरएसवी रत्नम ने आदि शंकराचार्य से प्रेरणा लेते हुए उनका नाम रविशंकर रखा।

श्री श्री रविशंकर बचपन से ही बेहद प्रतिभाशाली रहे और महज चार साल की उम्र से भगवद्गीता के श्लोकों कार्यक्रमों संस्कृत में पाठ करते थे, और अक्सर ध्यान में लीन रहते थे। उन्होंने फिजिक्स और वैदिक साहित्य में डिग्री प्राप्त की है। वर्ष 1982 में वे कर्नाटक के शिमोगा में 10 दिनों के लिए मौन व्रत पर चले गये। इस दौरान भद्रा नदी के तट पर उन्होंने सुदर्शन क्रिया को विकसित किया। दरअसल यह एक शक्तिशाली ध्यान की क्रिया है, जो शरीर और मन को जोड़ती है। ये क्रिया वैश्विक रुप से समाज पर प्रभावशाली साबित हुई है। श्रीश्री रविशंकर ने वर्ष 1982 में आर्ट ऑफ लिविंग की स्थापना की। इसके तहत उन्होंने शिक्षा, लोगों के आत्मविकास और मानवीय भावनाओं को शक्ति प्रदान करने का काम किया। श्रीश्री रविशंकर लाखों व्यक्तियों को ज्ञान व मानवता में ऊर्जा के स्रोत से परिचित करवाने में अहम भूमिका निभा रहे है। 1997 में श्रीश्री रविशंकर ने इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर ह्यूमन वैल्यू की स्थापना की।

उन्होंने मानवीय दर्शन को ध्यान में रखते हुए मानव जीवन को बेहतर बनाने के लिए रिसर्च पर आधारित प्रोग्राम को शुरू किया, जिसका मकसद तनाव कम करना, अहिंसा को बढ़ावा देना और धार्मिक विद्वेष को कम करके समाज में आपसी सामंजस्य बढ़ाना है। इसके लिए उन्होंने अपने लोगो में लीडरशिप डेवलप किया और उनको विश्व भर में शांति के प्रयास की जिम्मेदारी दी। आर्ट ऑफ लिविंग और इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर ह्यूमन वैल्यू ने मिलकर भारत, अफ्रीका, साउथ अमेरिका के ग्रामीण लोगों के बीच हजारो स्वयंसेवकों के माध्यम से करीब लाखों गांव तक अपनी पहुँच बनायी है। उन्होंने भारत में बच्चों को निशुल्क शिक्षा प्रदान करने वाले सैकड़ों स्कूलों की शुरुआत की है, जिससे करीब लाखों बच्चे लाभान्वित हो रहे है। श्री श्री रविशंकर शांति दूत के तौर पर जाने जाते हैं। श्रीश्री रविशंकर कई संवेदनशील मामलों में मध्यस्थता की भूमिका निभा चुके हैं। अपने सौम्य विचार की वजह से इराक युद्ध, कोसोवो में शांति, जम्मू-कश्मीर विवाद, राम जन्मभूमि विवाद जैसे मसलों में तालमेल कराने में अहम योगदान दे चुके हैं। इन्हीं खासियतों की वजह से आध्यात्मिक गुरु श्रीश्री को मंगोलिया, कोलंबियाऔर पराग्वे का सर्वोच्च नागरिक सम्मान मिल चुका है। अपने देश में उन्हें पद्म विभूषण और दुनिया भर के एक दर्जन से ज्यादा देशों में मानद डॉक्टरेट की उपाधि मिली है।

FAME INDIA

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में श्री श्री रविशंकर सातवें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

94.5

प्रभावशाली भारतीय

साफ-सुथरी छवि एवं विकास परक कार्यशैली के रक्षा मंत्री

राजनाथ सिंह

8

★★★★★

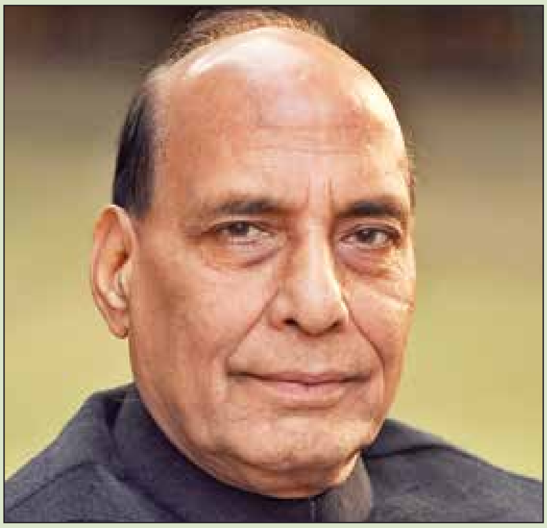

राजनाथ सिंह साफ सुथरी छवि के नेता हैं और उनकी पकड़ संघ और संगठन दोनों में है। नाप-तौल कर बोलने वाले राजनाथ सिंह हमेशा विवादों से दूर रहे हैं और पार्टी लाइन के अंदर अनुशासित तरीके से काम करने में विश्वास रखते हैं। 1974 में उन्हें भारतीय जनसंघ का सचिव नियुक्त किया गया। इमरजेंसी के दौरान कई महीनों तक जेल में बंद रहने वाले राजनाथ सिंह को संघ और बीजेपी के बीच पुल के तौर पर देखा जाता है। इन खूबियों की वजह से ही वे दो बार बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे हैं। अटल - आडवाणी की जोड़ी के वक्त भी राजनाथ सिंह का रसूख था और आज भी उनका कद काफी बड़ा है। यूपी के मुख्यमंत्री रहे राजनाथ सिंह तीन बार विधायक चुने गए, वे दो राज्यसभा सदस्य के सदस्य भी रहे हैं। 2009 से वे लगातार तीसरी बार लोकसभा सांसद हैं। 2013 में बीजेपी अध्यक्ष बनने के साथ ही उन्होंने 2014 में बीजेपी को केंद्र की सत्ता में लाने पर मेहनत शुरू कर दिया था और नरेंद्र मोदी को पीएम पद के लिए आगे करके चुनावी समर में जाने का फैसला किया था।

राजनाथ सिंह और नरेंद्र मोदी की अगुवाई में बीजेपी को जबरदस्त सफलता मिली। मोदी सरकार के पहले कैबिनेट में उन्हें गृह मंत्री बनाया गया। 2019 में दोबारा मोदी सरकार सत्ता में आयी। ऐसे में प्रधानमंत्री मोदी ने उन्हें रक्षा मंत्री बनाया। राजनाथ सिंह का रक्षामंत्री के पद पर होना आज की परिस्थितियों में काफी अहम माना जाता है। ऐसे में जब चीन और पाकिस्तान भारत के खिलाफ रोज नयी साजिश रच रहे हैं, इतना तय है कि एलएसी और एलओसी पर भारत को मजबूती से दुश्मनों का सामना करना होगा। इसके लिए सैनिकों के मनोबल को बढ़ाने के साथ सैन्य उपकरण को बढ़ाना उनकी प्राथमिकता रही है। इस मसले में राजनाथ सिंह राजनीति कौशल के साथ काम करने में सक्षम हैं। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह विकासवादी सोच रखने वाली शख्सियत हैं। वे सैनिकों के लिए आधुनिक रक्षा उपकरण के हिमायती हैं। उनके कुशल नेतृत्व में राफेल लड़ाकू विमान भारतीय जंगी बेड़ा में शामिल हुआ है। वे तेजस में उड़ान भरने वाले पहले भारतीय रक्षा मंत्री है। राजनाथ सिंह अपने कामों को बखूबी अंजाम तक पहुंचाने में विश्वास रखते हैं।

देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह वर्तमान सरकार के कद्दावर मंत्री में एक हैं। चेहरे पर तेज और छवि में शालीनता उनके व्यक्तित्व की पहचान है। बीजेपी की राजनीति में बेहतरीन पकड़ रखने वाले नेता राजनाथ सिंह 2019 में देश के रक्षा मंत्री बनाये गये। राजनाथ सिंह का जन्म 10 जुलाई 1951 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी के भाभोरा गांव में हुआ। वह किसान परिवार से आते हैं। उन्होंने गोरखपुर विश्वविद्यालय से भौतिक शास्त्र में डिग्री ली और मिर्जापुर जिले में फिजिक्स के लेक्चरर बने। उन्होंने बचपन में ही आरएसएस ज्वाइन किया और नौकरी के दौरान भी संघ से जुड़े रहे।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में राजनाथ सिंह आठवें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

94.4

हर मुश्किल में संकटमोचक की भूमिका निभाते अजीत डोभाल

9

अजीत डोभाल खासे प्रतिभाशाली छात्र थे और 1968 में यूपीएससी के जरिये केरल बैच के आईपीएस ऑफिसर बने। अपनी नियुक्ति के चार साल बाद ही वर्ष 1972 में वे इंटेलीजेंस ब्यूरो से जुड़ गये और अजीत डोभाल ने ज्यादातर समय खुफिया विभाग में काम किया। उनकी सामरिक और कूटनीतिक सोच के बारे में कहा जाता है कि जहां सबकी सोच खत्म होती है वहीं से उनकी सोच शुरू होती है। उनका काम करने का तरीका औरों से बिल्कुल अलग है। उन्होंने देश के लिए कई खतरनाक मिशनों को अंजाम दिया है। वे सात साल तक पाकिस्तान बतौर जासूस भी रहे हैं। वर्ष 2005 में अजित डोभाल इंटेलीजेंस ब्यूरो के डायरेक्टर पद से रिटायर हुए, लेकिन 2014 में देश की हालात को देखते हुए नई सरकार ने उन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बनाया। वर्तमान में भी अजीत डोभाल भारत सरकार के सुरक्षा सलाहकार हैं। देश के पांचवे सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल हिंदुस्तान की सुरक्षा कवच हैं जिसे भेद पाना किसी भी दुश्मन के लिए बेहद मुश्किल है। दरअसल शांत दिखने वाले अजीत डोभाल अंदर से बेहद मजबूत इंसान हैं।

उनका मानना है, "इतिहास का निर्णय हमेशा उसके पक्ष में गया है जो शक्तिशाली है। इसका मतलब यह है कि जहां राष्ट्रहित की बात हो वहां सख्ती से पेश आना जरूरी है।" डोभाल की यही विचारधारा उनकी शक्ति का मूल स्त्रोत है जिस पर वे कार्य करते हैं। बतौर राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार उनकी प्राथमिकता देश को सशक्त बनाने के साथ सीमा पार की खतरा से निपटने के लिए सरकार को अहम सलाह देना है । भारतीय सेना के एक अहम ऑपरेशन ब्लू स्टार के दौरान उन्होंने गुप्तचर की भूमिका निभायी और महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करायी। वे कांधार हैइजैक से लेकर हर अहम ऑपरेशन का हिस्सा रहे हैं। वे भारत के ऐसे एकमात्र नागरिक हैं, जिन्हें सैन्य सम्मान कीर्ति चक्र से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान पाने वाले वह पहले पुलिस ऑफिसर हैं। मौजूदा हालात में खासतौर पर चीन के साथ संबंधों को सुधारने का जिम्मा उनके कंधों पर है। भारत-चीन सीमा विवाद का स्थायी समाधान निकालने के लिए गठित समिति में भारत की ओर से डोभाल ही प्रतिनिधित्व करते हैं।

पाकिस्तान के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक हो, म्यांमार सीमा में रोहिंग्या उपद्रवियों को शांत करने का सर्जिकल स्ट्राइक, जम्मू-कश्मीर में धारा 370 हटाने के बाद हालात सामान्य करना, दिल्ली में दंगा फैलने पर काबू करने की बात हो या चीन के साथ एलएसी विवाद , हर जगह संकटमोचक की भूमिका में सामने आते हैं अजीत डोभाल। अजीत का मतलब होता है जिसे जीता ना जा सके। जैसा नाम ठीक वैसी ही शख्सियत। वे देश के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार हैं। भारत सरकार की हर रणनीति का अहम हिस्सा हैं वे। अजीत डोभाल का जन्म 1945 में उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल में हुआ। उन्होंने अजमेर मिलिट्री स्कूल से पढ़ाई की और आगरा यूनिवर्सिटी से इकोनॉमिक्स में एमए किया।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में अजीत डोभाल नौवें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

54.22

प्रभावशाली भारतीय

10

ओडिशा के राजनीतिक शिखर पर विनम्र मुख्यमंत्री

नवीन पटनायक

ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक विनम्र राजनेता के तौर पर जाने जाते हैं। वे प्रदेश के ऐसे अनोखे राजनेता हैं जिनका राजनीति से कोई वास्ता नहीं था। वे हमेशा देश से बाहर रहे, लेकिन ओडिशा की राजनीति की कमान संभालने के बाद उन्हें राज्य के लोगों का ऐसा प्यार मिला कि वे राज्य में सबसे लंबे समय तक कार्यरत मुख्यमंत्री बन गये हैं। नवीन पटनायक लोगों के लिए समर्पित भाव से काम करते हैं और अपने कार्यों की वजह से लगातार पांचवीं बार राज्य के मुख्यमंत्री बने हैं। 75 साल के नवीन पटनायक देश के ऐसे तीसरे मुख्यमंत्री है जो लगातार पांचवीं बार मुख्यमंत्री बने हैं।

नवीन पटनायक ने दून स्कूल और दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से पढ़ाई की। पढ़ाई के बाद नवीन पटनायक की दिलचस्पी किताब लिखने और संगीत में ज्यादा रही।

1997 में पिता बीजू पटनायक के निधन के बाद नवीन पटनायक की राजनीति में एंट्री हई , पिता की विरासत को नवीन पटनायक ने आगे बढ़ाया और तेजी से लोकप्रिय हुए। जब वे पहली बार राज्य में मुख्यमंत्री बने तो लोगों ने उड़िया ना बोलने वाले नवीन को मौका दिया परन्तु वे जल्दी ही लोगों के चहेते बन गए। इसके बाद तो उन्होंने ओडिशा की राजनीति में अंगद की तरह पैर जमा दिया। जनता दल के टूटने के बाद दिसंबर 1997 में नवीन पटनायक ने पिता के नाम पर बीजू जनता दल बनाया। 1999 के लोकसभा चुनाव में वे अस्का सीट से सांसद बने, केंद्र में अटल बिहारी वाजपेयी के मंत्रिमंडल में मंत्री बने लेकिन केंद्र की राजनीति में दिलचस्पी ना होने की वजह से वे ओडिशा लौटे आए। साल 2000 का विधानसभा चुनाव जीतकर वे सत्ता में आए और इसके बाद से ओडिशा में केवल नवीन पटनायक का ही युग चल रहा है। 2014 में मोदी लहर के बावजूद राज्य में नवीन पटनायक ने सरकार बनायी और यही कहानी 2019 में भी दोहरायी गयी।

नवीन पटनायक कम बोलते हैं , लेकिन उनका काम बोलता है। 2019 विधानसभा चुनाव से पहले उन्होंने किसानों के लिए कालिया योजना लागू किया, जिसमें हर किसान को पांच-पांच हजार रुपए पहली किस्त के तौर पर दिया गया , जिसका बड़ा असर हुआ। फैनी तूफान के दौरान उनकी सक्रियता ने उड़ीसा के लोगों का भरोसा उन पर और बढ़ाया। मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने हर वर्ग के लिए जितनी योजनाएं बनायी हैं और उन्हें बखूबी लागू किया है। इससे राज्य में पलायन रुका, बड़े उद्योग आकर्षित हुए। औद्योगिक विकास और रोजगार बढ़ाने के साथ ही उन्होंने राज्य में गरीबों के कल्याण के लिए योजनाएं लागू करवाई। हाल में अंफान तूफान और कोरोना में भी उनके कार्य की तारीफ हो रही है। नवीन पटनायक गंभीर और सादगी पूर्ण जीवन जीने वाले इंसान है। वे सिद्धांतों की राजनीति करने में विश्वास करते हैं। ना वे किसी से रिश्ते बिगाड़ते हैं, ना विशेष राजनीतिक महत्वाकांक्षा रखते हैं। उन्होंने ओडिशा की तस्वीर बदली और वहां के लोगों को आत्म-सम्मान दिया।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में नवीन पटनायक 10वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

54.0

पावर कॉरिडोर के सबसे प्रभावशाली ब्यूरोक्रेट पी. के. मिश्रा

11

प्रमोद कुमार मिश्रा प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव हैं। उनका प्रधानमंत्री के साथ काम करने का पुराना अनुभव है और वर्ष 2001 में मोदी जब गुजरात के मुख्यमंत्री बने थे तो पी. के. मिश्रा ही उनके प्रमुख सचिव थे। वे बेहद शालीन और मृदुभाषी होने साथ अपने कार्यों के लिए जाने जाते हैं। 1977 बैच के गुजरात कैंडर के आईएएस अधिकारी पी. के. मिश्रा ओडिशा के संभलपुर के हैं। उन्होंने दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से ग्रेजुएशन करने के बाद डेवलपमेंट इकोनॉमिक्स में एमए और सेंसेक्स से पीएचडी की है।

प्रमोद कुमार मिश्रा को बेहद काबिल ब्यूरोक्रेट माना जाता है। 2001 में जब कच्छ भूकंप आया तो उन्होंने आपदा प्रबंधन की जिम्मेदारी को उत्कृष्ट तरीके से निभाया। लिहाजा गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी का पी के मिश्रा के कार्यों के आधार पर विश्वास बढ़ता गया। बाद में उन्होंने इस भूकंप पर एक किताब भी लिखी। गुजरात में 24 घंटे बिजली पहुंचाने का काम मुश्किल था लेकिन उन्होंने ऐसा करके दिखा दिया। वर्ष 2013 में जब नरेंद्र मोदी को बीजेपी का प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया गया तब पी. के. मिश्रा उनके सलाहकार के तौर पर काम करने लगे। 26 मई 2014 को नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली तो गुजरात से दिल्ली बुलाये गये पहले ऑफिसर पीके ही थे। 2019 में नृपेंद्र मिश्रा के अवकाश प्राप्त करने के बाद पीएमओ का सबसे महत्वपूर्ण जिम्मा पी. के. मिश्रा को दिया गया।

वर्ष 2001 से 2019 तक अगर किसी एक अधिकारी पर नरेंद्र मोदी लगातार भरोसा करते आये हैं तो वो हैं प्रमोद कुमार मिश्रा। वे अनुशासित तरीके से काम करने में विश्वास रखते हैं। बतौर प्रशासनिक अधिकारी पी. के. मिश्रा को तय समय में काम को पूरी कुशलता से अंजाम देने के लिए जाना जाता है। वे सीधे लहजे में बात करते हैं। डेवलपमेंट मॉडल पर उन्होंने पूरी रिसर्च की है और घिसे-पिटे तरीकों से वे सरकार चलाने में यकीन नहीं रखते। वे पुराने जमाने के ऑफिसर जरूर हैं, लेकिन उनके ख्यालात बिल्कुल आधुनिक हैं। आइडिया के अलावा उनकी एक और खासियत यह है कि उनके कार्य करने का तरीका स्पष्ट और राष्ट्र हित में रहता है। मुसीबत के वक्त उनका दिमाग कंप्यूटर की तरह चलता है। आपदा प्रबंधन में उन्हें महारत हासिल है। उन्होंने राहत और पुनर्वास पर एक किताब लिखी है। पी. के. मिश्रा को राहत पुनर्वास और आपदा प्रबंधन में उत्कृष्ट योगदान के लिए संयुक्त राष्ट्र की तरफ से सम्मानित किया जा चुका है।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	✓	आदर्शवादिता	✓
लोकप्रियता	✓	व्यावहारिकता	✓
दूरदर्शिता	✓	नेतृत्व क्षमता	✓
जागरूकता	✓	कल्याणकारी कार्य	✓
कार्यशैली	✓		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में पी. के. मिश्रा 11वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

93.8

प्रभावशाली भारतीय

12

लोक कल्याण की भावना को प्रधानता देते हेमंत सोरेन

राजनीति में एकाएक कदम रखने वाले हेमंत सोरेन ने पिता की खराब तबियत के बाद जिस समझदारी और गंभीरता से शासन किया, उससे स्पष्ट है कि उनकी साफगोई और जनसेवा की भावना ने लोगों का दिल जीत लिया है। झारखंड के मुख्यमंत्री के तौर पर उनके कार्यों की उनके समर्थक ही नहीं, विपक्षी भी सराहना करते हैं। 10 अगस्त 1975 को रामगढ़ के नेमारा गांव में एक राजनीतिक परिवार में जन्मे हेमंत सोरेन के पिता झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के प्रमुख शिबू सोरेन झारखंड की राजनीति के पितामह माने जाते थे और उनके बड़े भाई दुर्गा सोरेन भी कद्दावर नेता थे। इनकी स्कूली शिक्षा पटना हाई स्कूल से हुई।

हेमंत सोरेन ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए प्रतिष्ठित बीआईटी मेसरा में दाखिला भी लिया, लेकिन बड़े भाई की अचानक मौत के बाद उन्हें राजनीति में आना पड़ा। 2009 में एक्टिव पॉलिटिक्स में आये और लगातार ऊपर ही चढ़ते गये। हेमंत सोरेन कुछ महीनों के लिए राज्यसभा के सांसद भी रहे। 2009 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने खासी मेहनत की। बीजेपी, जनता दल यूनाइटेड और झारखंड मुक्ति मोर्चा ने साथ में चुनाव लड़ा। बीजेपी और जेएमएम को बराबर 18-18 सीटें मिलीं, और हेमंत के पिता शिबू सोरेन ने सीएम पद की शपथ ली। जब बीजेपी के समर्थन वापसी से सरकार गिरी और सितंबर 2010 में ये गठबंधन दोबारा सत्ता में आया तो बीजेपी के अर्जुन मुंडा ने सीएम पद की शपथ ली। हेमंत सोरन डिप्टी-सीएम बने। इसके बाद वर्ष 2013 में दोनों पार्टियां अलग हुईं तो इसके छह महीने बाद 15 जुलाई 2013 को हेमंत सोरेन ने अपनी शक्ति दिखायी और कांग्रेस व राजद के समर्थन से झारखंड के नौंवे सीएम के तौर पर शपथ ली। हालांकि वर्ष 2014 में हुए चुनाव में उनकी पार्टी बढ़िया प्रदर्शन नहीं कर पायी, लेकिन अगले पांच साल उन्होंने जन संपर्क और लोक कल्याण की भावना से कार्य किया। वर्ष 2019 में हेमंत सोरेन की पार्टी जेएमएम ने जीत दर्ज की और वे सूबे के 11वें मुख्यमंत्री बन गये।

हेमंत सोरेन पॉजिटिव सोच रखने वाले उत्साही राजनेता हैं और अपने हर कार्यकाल में उन्होंने जनता के लिए कल्याणकारी कदम उठाये हैं। वे झारखंड के ऐतिहासिक पुरुष बिरसा मुंडा की विचारधारा के प्रबल समर्थक हैं। उन्हें अपने विधानसभा क्षेत्रों में किये गये लोक कल्याणकारी कार्यों के लिए वर्ष 2019 के चैंपियंस आफ चेंज अवॉर्ड से सम्मानित किया जा चुका है। कोरोना काल में उन्होंने राज्य की जनता और प्रवासी मजदूरों की भलाई के लिए उत्कृष्ट कार्य किया है, जिसकी सराहना देश भर में हो रही है।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में हेमंत सोरेन 12वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

93.5

प्रभावशाली
भारतीय

दिल्ली के दिल पर राज करने वाले अरविंद केजरीवाल

13

★★★★★

अरविंद केजरीवाल ने आईआईटी खड़गपुर से मेकैनिकल इंजीनियरिंग में डिग्री ली और टाटा स्टील में काम करने के बाद वे 1992 में भारतीय राजस्व सेवा में शामिल हुए। 1999 में उन्होंने नकली राशन कार्ड घोटाले को उजागर करने के लिए 'परिवर्तन' नामक एक आंदोलन की स्थापना की और इस माध्यम से आयकर, बिजली और खाद्य राशन से जुड़े मामलों में दिल्ली के नागरिकों की सहायता की। सामाजिक सरोकार को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया व 2006 में पब्लिक कॉज रिसर्च फाउंडेशन की स्थापना की। उन्हें 2006 में उत्कृष्ट नेतृत्व के लिए रेमन मैग्सेसे अवार्ड मिला। करीब चार साल बाद 2010 में केजरीवाल समाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे के साथ जुड़े। लोकपाल और भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन की शुरुआत के साथ 2012 में केजरीवाल के नेतृत्व में हर ओर 'मैं आम आदमी हूँ' के नारे की गूँज कायम हो गई। उन्होंने वर्ष 2012 में आम आदमी पार्टी (आप) नाम से राजनीतिक पार्टी का गठन किया। 2013 में अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में आम आदमी पार्टी ने राजनीति में धमाकेदार तरीके से प्रवेश किया, उस समय अरविंद केजरीवाल राजनेता कम, आंदोलनकारी ज्यादा थे। आम आदमी पार्टी ने 28 सीट जीती और अरविंद केजरीवाल दिल्ली के सीएम बने। सरकार महज 49 दिन चली। 2015 में फिर दिल्ली में फिर विधानसभा चुनाव हुए और "आप" रिकार्ड 67 सीट जीत कर दोबारा दिल्ली की सत्ता पर काबिज हुई। अरविंद केजरीवाल ने 2020 में ऐतिहासिक जीत हासिल की। हालांकि वर्ष 2020 में अरविंद केजरीवाल तीसरी बार दिल्ली के मुख्यमंत्री बने तो उनका अंदाज एकदम बदला हुआ था। वे इस विधानसभा चुनाव में संभल कर बोले और गैरजरूरी बयानों से बचें। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की सबसे बड़ी खासयित ये है कि वे दिल्ली की जनता के नब्ज को अच्छी तरह से पढ़ चुके हैं। अरविंद केजरीवाल को कामयाबी दरअसल उनके काम की वजह से मिली। उन्होंने पिछले पांच साल दिल्ली में बिजली, पानी, शिक्षा और स्वास्थ्य पर बुनियादी काम किया। कोरोना काल में केजरीवाल के लिए सबसे बड़ी चुनौती इस महामारी पर काबू करना था और वे इसमें काफी हद तक सफल रहे। इस दौरान केजरीवाल ने केंद्र के साथ मिलकर काम करने की कोशिश भी की है।

भ्रष्टाचार और पारदर्शिता की कमी के खिलाफ अलख जगाकर दिल्ली के सिंहासन पर काबिज होने वाले अरविंद केजरीवाल राजनीति में अपनी अलग पहचान बना चुके हैं। वे दिल्ली की जनता के फर्स्ट च्वाइस वाले राजनेता हैं और विरोधियों के कड़े प्रयोग के बावजूद उन्हें लोकप्रियता के शिखर से डिगाना नामुमकिन रहा है। चाहे सस्ती बिजली और सस्ते पानी के जरिये हो या शिक्षा और चिकित्सा में आमूलचूल सुधार के दम पर, इनकी आम आदमी पार्टी की सरकार ने दिल्लीवालों से पूर्ण बहुमत हासिल किया। अरविंद केजरीवाल का जन्म 1968 में हरियाणा के हिसार में हुआ है।

FAME INDIA

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में अरविंद केजरीवाल 13वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

93.2

प्रभावशाली भारतीय

14

कर्मठ और देशहित को समर्पित नितिन गडकरी

महाराष्ट्र के नागपुर में 27 मई 1957 को नितिन गडकरी का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनके पिता संघ के सामान्य कार्यकर्ता थे। उन्होंने नागपुर युनिवर्सिटी से एलएलबी और एमकॉम की शिक्षा ग्रहण की। नितिन गडकरी ने दरअसल 1976 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की। 23 साल की उम्र में नितिन गडकरी भारतीय जनता युवा मोर्चा के अध्यक्ष बने। 1995 में महाराष्ट्र में शिवसेना-बीजेपी गठबंधन सरकार में वे लोक निर्माण मंत्री बनाये गये। वे आरएसएस के भी लाडले हैं और उन्हें 2010-2013 तक बीजेपी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया।

नितिन गडकरी केंद्र में मंत्री बनने से पहले महाराष्ट्र में लोक निर्माण मंत्री रहे और राज्य में खस्ता हाल सड़कों को ठीक करने के लिए काफी उम्दा काम किया। इसी अनुभव के आधार पर उन्होंने केंद्र सरकार में सड़क और परिवहन मंत्रालय की जिम्मेदारी मांगी। सरकार द्वारा जब उनसे पूछा कि यह मिनिस्ट्री तो शीर्ष चार-पांच मंत्रालयों में नहीं आती है तो उनका जवाब था, “पिछला अनुभव और यह काम मुझे पसंद है।” 2014 में मंत्री बनने के साथ ही उन्होंने अपने काम से देश में विकास की नयी परिभाषा लिखी। हाईवे के निर्माण और फोर-लेन के निर्माण में तेजी आयी। 2019 में नितिन गडकरी ने अपनी दूसरी पारी में अगले 100 दिनों के लिए बड़ी योजनाओं की तैयारी की। इसमें उन्होंने राजमार्गों में 15 लाख करोड़ के निवेश से लेकर खादी और छोटे व मझोले श्रेणी के उद्योगों के उत्पादों को वैश्विक स्तर पर प्रोत्साहन देकर जीडीपी ग्रोथ को गति देने की योजनाएं बनायीं। वे इस पर तेजी से काम कर रहे हैं।

विकास की कार्ययोजनाओं के क्रियान्वयन में सफल रहने वाले नितिन गडकरी की सबसे बड़ी खासियत ये है कि वे काफी दूरदर्शी हैं। उनके कार्यों को देखते हुए बाला साहब ठाकरे ने उन्हें ‘रोडकरी’ नाम दिया था। उन्हें ‘इंफ्रास्ट्रक्चर मैन ऑफ इंडिया’ भी कहा जाता है। आज उनके नेतृत्व में देश की सबसे बड़ी भारत माला सड़क परियोजना का संचालन हो रहा है।

मोदी सरकार के सबसे योग्य और परफॉर्मर मंत्री नितिन गडकरी के पास फिलहाल भूतल परिवहन और राजमार्ग, जहाज़रानी, जल संसाधन, नदी विकास, एमएसएमई और गंगा संरक्षण मंत्रालय हैं। भारतीय जनता पार्टी के सबसे कम उम्र के अध्यक्ष रह चुके नितिन गडकरी हँसमुख और ऊर्जावान व्यक्तित्व के राजनेता हैं। एक तरफ जहां उन्हें उनकी उत्कृष्ट संगठात्मक क्षमता के लिए जाना जाता है वहीं दूसरी तरफ वे कुशल प्रशासक, अद्भुत अवधारणाओं और नये आइडियाज़ के लिए भी पहचाने जाते हैं।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के ‘50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020’ के सर्वे में नितिन गडकरी 14वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

93.1

सात निश्चय के चैंपियन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार

'सुशासन बाबू' के नाम से मशहूर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार राज्य में शिक्षा, सड़क और स्वास्थ्य पर किये कार्यों के लिए भी खासे लोकप्रिय हैं। नीतीश कुमार शुरू से जन-विरोधी नीतियों के खिलाफ मुखर रहे हैं। पेशे से इलेक्ट्रिकल इंजीनियर रहे इस राजनेता ने प्रदेश में विकास की ऐसी तस्वीर चमकायी है कि लगातार तीन फुल टर्म मुख्यमंत्री रहने के बावजूद वे इस बार भी जनता की पहली पसंद बने हुए हैं। नीतीश कुमार का जन्म 1 मार्च 1951 को बिहार के बख्तियारपुर के कल्याण बिगहा में हुआ था। उनके पिता एक वैद्य और स्वतंत्रता सेनानी थे।

नीतीश कुमार पिता के सिद्धांतों पर चलकर 1974 से 1977 तक लोकनायक जयप्रकाश नारायण के संपूर्ण क्रांति आंदोलन में शामिल हो गये। इसी आंदोलन से नीतीश कुमार सक्रिय राजनीति में आये और वे विधायक , सांसद और केंद्र की विभिन्न सरकारों में मंत्री रह चुके है। नीतीश कुमार का राजनीतिक सफर जनता पार्टी से शुरू होकर लोकदल, समता पार्टी , जनता दल और जनता दल (यू) तक पहुंचा है। नीतीश कुमार वर्ष 2000 से अब तक बिहार के मुख्यमंत्री पद की शपथ कुल छह बार ले चुके हैं। नीतीश कुमार सादगी पसंद और स्वच्छ छवि के राजनेता है ।इनके अब तक के शासन काल में कई सुधार हुआ , लड़कियों को साइकिल देने से साक्षरता बढ़ी, शराबबंदी से लोगों के रहन-सहन में सुधार हुआ , गरीबी दर घटी और सड़कों की दशा बिहार में सुधरी है। साथ ही लॉ एंड ऑर्डर दुरुस्त करना उनकी प्राथमिकता रही है ।

बतौर मुख्यमंत्री उन्होंने 2016-17 से 2020-21 तक सात निश्चय योजना को पूरा करने का लक्ष्य रखा । इन सात निश्चय योजनाओं द्वारा नीतीश कुमार ने युवा पीढ़ी को शिक्षा, कौशल विकास, शिक्षा ऋण, सभी गांवों में बिजली कनेक्शन, हर परिवार को पाइप वाले पानी की आपूर्ति प्रदान करना, शहरी क्षेत्रों में सड़क और निकास व्यवस्था के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने का लक्ष्य रखा, जिसे पुरा करने में नीतीश कुमार काफी हद तक सफल भी रहें है ।नीतीश कुमार को ईमानदार और विकासवादी सोच का नेता माना जाता है। वे बिहार की राजनीति के माहिर दिग्गज हैं। अपने विरोधियों की हर चाल को समय रहते पहचान कर नई व्यूह रचना से मात देने की सलाहियत रखते हैं। बीजेपी से दुबारा उनकी नजदीकियां उनकी राजनीतिक समझदारी को दर्शाता है। उन्होंने नोटबंदी के समय केंद्र सरकार की सराहना की और कोरोना काल में भी वे केंद्र के हर फैसले के साथ रहे । यूँ तो नीतीश कुमार की ईमानदारी और विकासनीति की प्रशंसा पूरे देश में की जाती है, नरेंद्र मोदी भी नीतीश कुमार के कामों की तारीफ करने में देरी नहीं करते है।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में नीतीश कुमार 15वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

92.9

प्रभावशाली भारतीय

16

संसदीय परंपरा और जिम्मेदारी को बखूबी निभाते
ओम बिड़ला

ओम बिड़ला 17वीं लोकसभा के अध्यक्ष है और उनकी छवि ने सभी दलों के सांसदों और राजनेताओं को प्रभावित किया है। राजस्थान के कोटा से सांसद ओम बिड़ला जब से लोकसभा के अध्यक्ष बनाये गये हैं तभी से वे सत्ता पक्ष हो या विपक्ष, सभी के आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। इससे पहले ओम बिड़ला का नाम बतौर श्रेष्ठ सांसद चर्चा में था । लोकसभा के पहले संसद सत्र के दौरान जब ओम बिड़ला का नाम नए स्पीकर के लिए नामित किया गया तो अचानक वह हर ओर चर्चा का विषय बन गये। 1962 में जन्मे ओम बिड़ला विनम्र और उदार ह्रदय के व्यक्ति हैं। वे कॉमर्स से पोस्ट ग्रेजुएट हैं और अपने काम को लेकर ज्यादा फोकस्ड रहते हैं। उनकी प्रबंधन क्षमता अद्भुत है।

ओम बिड़ला राजस्थान में बीजेपी के गढ़ हाडौती क्षेत्र से आते हैं। छात्र राजनीति से उभरे ओम 6 साल तक राजस्थान बीजेपी युवा मोर्चा के अध्यक्ष रहे।

1997 से 2003 तक युवा मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रहे।ओम बिड़ला ने 2003 में कोटा (साउथ) सीट से अपना पहला विधानसभा चुनाव जीता। उन्हें 2008 में फिर से असेंबली चुनावों में जीत मिली और इसके बाद वे 2013 में तीसरी बार विधायक बने। 2014 में लोकसभा के चुनाव में जीतकर वे पहली बार सांसद बने। फिर 2019 के लोकसभा चुनाव में ओम बिड़ला दोबारा इसी सीट से सांसद बने। भारतीय लोकतंत्र में लोकसभा स्पीकर का पद गरिमा और जवाबदेही का माना जाता है। लोकसभा स्पीकर की कुर्सी पर कौन आसीन होगा इसकी चर्चा लोकसभा गठन होने के साथ शुरू हो जाती है।

17 वीं लोकसभा के अध्यक्ष ओम बिड़ला ने जिस कार्यकुशलता और वाकपटुता से लोकसभा का संचालन किया है, वे हर किसी की प्रशंसा के पात्र बन गये हैं। बतौर लोकसभा स्पीकर वे लोकसभा की कार्यवाही को लेकर गंभीर रहते हैं। लोकसभा की मर्यादा का पूरा ख्याल रखते हैं और समय-समय पर सांसदों को उनकी गरिमा का भी भान कराने से भी नहीं चूकते। व्यवहार कुशल लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला समाज के प्रति भी बेहद संवेदनशील हैं। राष्ट्र सेवा और जरूरतमंदों की सहायता में उनकी रुचियों में शामिल है। वे सामाजिक संगठनों के माध्यम से दिव्यांग, कैंसर रोगी और थैलेसेमिया के रोगियों की मदद करते हैं। वर्ष 2006 में स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर आजादी के स्वर नामक प्रोग्राम की शुरूआत कर अबतक उन्होंने 15 हजार से अधिक अधिकारियों को सम्मानित किया था। उन्होंने ग्रीन कोटा वन अभियान लॉन्च कर एक लाख से ज्यादा पेड़ लगवाया हैं। ओम बिड़ला ऊर्जावान राजनेता हैं और वे जरूरतमंदों, बेसहारा महिलाओं और दिव्यांगों की सेवा को समर्पित हैं।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में ओम बिड़ला 16वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

92.5

17

बेजोड़ रणनीतिकार माने जाते हैं

जगत प्रकाश नड्डा

जगत प्रकाश नड्डा देश के एक कद्दावर नेता हैं और देश ही नहीं, दुनिया के सबसे बड़े राजनीतिक दल भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। वे एक बेजोड़ रणनीतिकार माने जाते हैं ।उन्होंने छात्र जीवन से ही राजनीति की शुरुआत कर दी थी और आज उनकी गिनती देश के बड़े नेता के तौर पर होती है। जेपी नड्डा मूल रूप से हिमाचल प्रदेश के ब्राह्मण परिवार से ताल्लुक रखते हैं। दरअसल उनके पिता डॉक्टर नारायण लाल नड्डा पटना विश्वविद्यालय में कुलपति थे। उनका जन्म 2 दिसंबर 1960 को बिहार की राजधानी पटना में हुआ था। शुरुआती शिक्षा पटना के सेंट जेवियर्स से हुई। पटना यूनिवर्सिटी से उन्होंने अपना ग्रेजुएशन पूरा किया।

जेपी नड्डा ने भारतीय जनता पार्टी के छात्र विंग अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के बैनर तले 1977 में पटना यूनिवर्सिटी में छात्र संघ का चुनाव लड़ा और जीत कर छात्र संघ के सेक्रेटरी बने। वर्ष 1982 में 22 बरस के नड्डा को उनके पैतृक राज्य हिमाचल प्रदेश विद्यार्थी परिषद का प्रचारक बनाकर भेज गया। जहाँ जेपी नड्डा एक तरफ संगठन को मजबूत करने में जुट गये तो दूसरी तरफ उन्होंने हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी से वकालत की पढ़ाई भी शुरू की । 1983-1984 में जेपी नड्डा हिमाचल प्रदेश युनिवर्सिटी में विद्यार्थी परिषद के पहले अध्यक्ष बने। वर्ष 1986 से 1989 तक जेपी नड्डा विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय महासचिव भी रहे। वर्ष 1989 में जेपी नड्डा ने केंद्र की तत्कालीन कांग्रेस सरकार के भ्रष्टाचार के खिलाफ राष्ट्रीय संघर्ष मोर्चा का गठन किया । युवाओं में लोकप्रिय हो चुके नड्डा को 1991 में भारतीय जनता युवा मोर्चा का अध्यक्ष बना दिया गया।

वर्ष 1993 में जेपी नड्डा बिलासपुर सीट से जीत हासिल कर विधायक बने ।पार्टी ने उन्हें विधानसभा में विपक्ष का नेता चुना। तेज-तर्रार और मुखर वक्ता नड्डा को इस दौरान सर्वश्रेष्ठ विधायक चुना गया। 1998 में प्रदेश में भाजपा की सरकार बनने पर जेपी नड्डा सूबे के स्वास्थ्य मंत्री बने। बाद में दुबारा वर्ष 2008 में उन्होंने वन एवं पर्यावरण तथा साइंस और टेक्नोलॉजी मंत्रालय का जिम्मा संभाला। कुछ वर्षों तक राज्य की सेवा करने के बाद बीजेपी के तत्कालीन अध्यक्ष नितिन गडकरी ने उन्हें अपनी टीम में राष्ट्रीय महासचिव व प्रवक्ता का जिम्मा दिया। केंद्रीय राजनीति में जेपी नड्डा का कद धीरे-धीरे बढ़ता गया। जेपी नड्डा 2012 और फिर 2018 में लगातार दो बार राज्य सभा के सदस्य बने। 20 जनवरी 2020 को उन्हें भारतीय जनता पार्टी के 11वें अध्यक्ष के तौर पर नियुक्त किया गया। जेपी नड्डा मोदी के काफी करीबी माने जाते हैं। जब मोदी हिमाचल प्रदेश के प्रभारी हुआ करते थे, तभी से वे नड्डा की रणनीति से प्रभावित हैं। केंद्र सरकार में जेपी नड्डा को कैबिनेट की पहली फेरबदल में स्वास्थ्य मंत्रालय का अहम जिम्मा दिया गया ।उनके स्वास्थ्य मंत्री रहते हुए ही "सभी के लिए स्वाथ्य" व 50 करोड़ लोगों के लिए 5 लाख तक का बीमा देने वाली "आयुष्मान भारत योजना" की रूप रेखा तैयार की गई। विश्व तंबाकू नियंत्रण के लिए उन्हें विश्व स्वास्थ्य संगठन से विशेष मान्यता पुरस्कार भी मिला है।

FAME INDIA

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में जगत प्रकाश नड्डा 17वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

92.3

प्रभावशाली भारतीय

18

सरल और सुलझे हुए राजनेता

डॉ. हर्षवर्धन

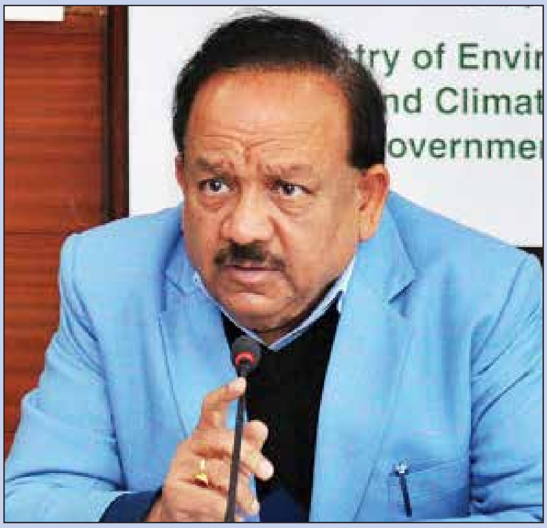

डॉ. हर्षवर्धन का जैसा नाम ठीक वैसा ही सरल और सुलझा हुआ व्यक्तित्व है उनका। उनसे मिलकर कोई साधारण व्यक्ति भी प्रसन्न हो जाता है। साफ-सुथरी छवि के हर्षवर्धन में दिखावा बिल्कुल नहीं हैं। वे समाज कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है और राजनीति में भी ईमानदारी और शुद्ध विचार से काम करने के लिए जाने जाते हैं। उन्हें जो भी दायित्व मिला है उसे बेहतरीन तरीके से निभाते रहे हैं ।डॉ. हर्षवर्धन को विश्व स्वास्थ्य संगठन के 34 सदस्यीय कार्यकारी बोर्ड का चेयरमैन बनाए गया हैं। 66 साल के डॉ. हर्षवर्धन का जन्म दिल्ली में हुआ है।

डॉ. हर्षवर्धन ने कानपुर के जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस और एमएस की डिग्री हासिल की है। आंख, नाक और गला के स्पेशलिस्ट हर्षवर्धन आरंभिक जीवन से हीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े रहे हैं। यहीं से उनमें समाज कल्याण की भावना जागृत हुई ।डॉ. हर्षवर्धन 1993 से चुनावी राजनीति में आ गए और वे कृष्णानगर सीट से लगातार जीतते रहे हैं। 2003 में उन्हें दिल्ली बीजेपी का अध्यक्ष बनाया गया। वे सुलझे हुए इंसान हैं और लोगों की सेवा को कर्तव्य मानते हैं। वे पार्टी लाइन के तहत काम करने के लिए जाने जाते हैं। मिलनसार व्यक्तित्व की वजह से उन्हें समाज के हर तबके का समर्थन हासिल हैं। डॉक्टर साहब' के नाम से मशहूर ,डॉ. हर्षवर्धन दिल्ली में बीजेपी के नेतृत्व में बनी पहली सरकार में स्वास्थ्य मंत्री रहे हैं। उन्हें दिल्ली में पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम में अहम भूमिका निभाने के लिए भी जाना जाता है। उन्हें हेल्थ के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए 1994 में आईएमए प्रेसिडेंट स्पेशल अवार्ड ऑफ इंस्पिरेशनल से सम्मानित किया गया था। उन्हें तंबाकू मुक्त भारत के लिए डबल्यूएचओ के डीजी कमेंडेशन मेडल अवार्ड से सम्मानित किया। रोटरी इंटरनेशनल का पोलियो इरेडिकेशन चैंपियन अवार्ड अटल बिहारी वाजपेयी ने उन्हें प्रदान किया था। 2014 में वे दिल्ली के चांदनी चौक लोकसभा सीट से कपिल सिब्बल को हराकर संसद में पहुंचे। 2019 में वे दोबारा चांदनी चौक से सांसद चुने गए। उनके पूर्व के अनुभव को देखते हुए डॉ. हर्षवर्धन को केंद्र सरकार में हेल्थ मिनिस्टर बनाया गया।

वे अपने चिकित्सा पेशे के अनुभव से भी देश को लाभान्वित करने का कोई अवसर नहीं छोड़ते और अपने काम को उत्कृष्ट तरीके से कर रहे हैं। कोरोना काल में उनके कार्य को बेहद सराहनीय माना जा रहा है ,डॉ. हर्षवर्धन का अगला कदम देश को जानलेवा महामारी से बचाना है। जिसके लिए वे दिन रात चिकित्सा विशेषज्ञों के संपर्क में रहते हैं ।डॉ. हर्षवर्धन का मानना है समाज उनका परिवार है , पूरा विश्व उनका कुटुंब है। वे महंगी चिकित्सा के मुखर विरोधी है। चिकित्सा के क्षेत्र में भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए उन्होंने जय-विज्ञान, जय-अनुसंधान का नारा दिया।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में डा. हर्षवर्धन, 18वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

91.9

उत्कृष्ट कार्यों के बलबूते बनायी अलग पहचान

पीयूष गोयल

19

मोदी सरकार के हाई प्रोफाइल मंत्रियों में एक पीयूष गोयल ने अपने उत्कृष्ट कार्यों के बलबूते अलग पहचान बनायी है। उन्होंने मंत्रालय का हर चुनौतीपूर्ण कार्य जवाबदेही और समझदारी से किया और उनकी साख बढ़ती गयी। मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल में उन्हें कॉमर्स एंव इंडस्ट्री और रेलमंत्री बनाया गया है। महाराष्ट्र से राज्यसभा के सदस्य पीयूष गोयल राज्यसभा में बीजेपी के डिप्टी लीडर हैं। वे राजनीति में आने से पहले एक सफल चार्टर्ड अकाउंटेंट और इन्वेस्टमेंट बैंकर भी रहे हैं। पीयूष गोयल का जन्म 13 जून 1964 को मुंबई में हुआ। उनके पिता वेद प्रकाश गोयल अटल बिहारी वाजपेयी के मंत्रिमंडल में शिपिंग मिनिस्टर थे और माता चंद्रकांता गोयल महाराष्ट्र विधानसभा में तीन बार बीजेपी की विधायक थी।

एक राजनीतिक परिवार से आने के साथ पीयूष पढ़ने-लिखने में काफी योग्य और मेधावी छात्र रहे हैं। चार्टर्ड अकाउंटेंसी की पढ़ाई में वे भारत में दूसरे स्थान पर रहे और लॉ की पढ़ाई में भी मुंबई में सेकेंड टॉपर किया था। पीयूष गोयल 1984 में बीजेपी में शामिल हुए। उन्होंने पार्टी के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष की भूमिका भी निभायी है। बीजेपी ने साल 2014 के चुनाव के दौरान गोयल को पार्टी के विज्ञापन और सोशल मीडिया प्रचार की जिम्मेदारी दी गयी थी जिसे उन्होंने बखूबी निभाया। जुलाई 2010 में वे पहली बार और जुलाई 2016 में दूसरी बार राज्यसभा सांसद बने।

56 साल के पीयूष गोयल को शांत रह कर, बिना किसी लाग-लपेट के अपना काम करने के लिए जाना जाता है। 2014 में केंद्रीय मंत्रिमंडल में उन्हें पावर, रिन्यूएबल एनर्जी और कोयला मंत्रालय का स्वतंत्र प्रभार देकर पूरी तरह से कार्य करने का मौका दिया गया। उनके कार्यकाल में भारत के ऊर्जा क्षेत्र में कई बदलाव हुए और देश के करीब 18 हजार गांवों का त्वरित विद्युतीकरण किया गया और उन्होंने 'उदय' एवं 'उजाला' जैसी परियोजनाओं को लागू करने में अहम भूमिका निभायी। 2017 में उन्हें प्रमोट करके कैबिनट मंत्री बनाया गया और रेल एवं कोयला मंत्रालय की जिम्मेदारी दी गयी। तत्कालीन वित्त मंत्री अरुण जेटली के अस्वस्थ होने पर पीयूष गोयल को वित्त मंत्री का प्रभार भी दिया गया। अपने परफार्मेंस की बदौलत बुलंदियों पर पहुंचे पीयूष 2019 में केंद्रीय रेल और वाणिज्य मंत्री बनाये गये। पीयूष गोयल शालीन व्यक्ति होने के साथ अपने काम के प्रति तेज तर्रार हैं। समय पर कार्यों को पूरा करना उनकी नीति रही है और वे जिम्मेदारियों से कभी मुंह नहीं मोड़ते। रेलवे का विकास, आधुनिकीकरण और सुरक्षा उनकी पहली प्राथमिकता है। कॉमर्स मिनिस्ट्री में भी उनके कार्यों की तारीफ होती है। उनकी देश के कॉरपोरेट घरानों पर भी तगड़ी पकड़ है। पीयूष गोयल ने समय के साथ-साथ अपनी छवि को निखारा है और वे बीजेपी के कद्दावर नेता में शुमार हो गये हैं।

FAME INDIA

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में पीयूष गोयल 19वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

91.5

प्रभावशाली भारतीय

योग, आयुर्वेद और स्वदेशी को समर्पित

स्वामी रामदेव

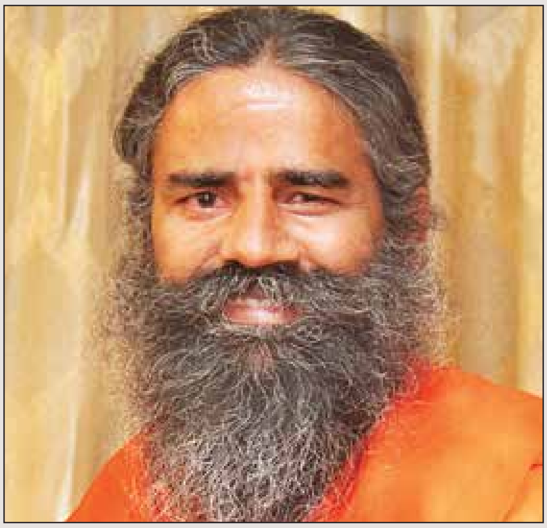

स्वामी रामदेव आज किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। भारत ही नहीं, दुनिया भर में योग की पताका फहराने वाले योगगुरु रामदेव का कद किसी एक परिचय तक सीमित नहीं रह गया है। उन्हें एक सेलेब्रिटी का दर्जा हासिल हो गया है और एक तरह से वे देश में सबकी पसंद बन चुके हैं। स्वामी रामदेव की योग के साथ-साथ अध्यात्म, आयुर्वेद, राजनीति और व्यापार में विशेष रुचि है। बाबा रामदेव एक ऐसे गुरु है जिन्होंने आधुनिकता के दौर में भारत के लोगों को स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग के लिए प्रेरित किया। बाबा रामदेव पतंजलि योगपीठ व पतंजलि आयुर्वेद और दिव्य योग मंदिर के संस्थापक हैं।

स्वामी रामदेव का जन्म 1965 में हरियाणा के महेंद्रगढ़ के अली सैयदपुर गांव में हुआ। उन्होंने आठवी तक स्कूल में पढ़ाई की, उसके बाद उन्होंने गुरुकुल और गुरुओं के आश्रम में जाकर धर्म, वेद ग्रंथों, योग और साहित्य के बारे में गहन चिंतन किया। पहले रामदेव योग के लिए जाने जाते थे। हाल के वर्षों में उन्होंने अपना दायरा बढ़ाया है। देश पर किसी तरह की संकट हो तो बाबा रामदेव सबसे पहले अपने विचार और सहायता के लिए आगे आते हैं। बाबा रामदेव बड़े ही सरल और प्रभावी तरीके से अपनी बात को रखते हैं। वैराग्य और योग उनके जीवन का दर्शन है जिससे वे आम लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। योग में प्राणायाम, अनुलोम विलोम, कपालभांति और स्वदेशी स्वावलंबन उनकी शक्ति का स्रोत है। देश में उन्होंने कई संस्थानों की स्थापना की जिससे की लोगों को लाभान्वित कर पायें।हिमालय में तप के बाद हरिद्वार में जा कर बाबा रामदेव ने 1995 में दिव्य योग्य मंदिर ट्रस्ट की स्थापना की। उन्होंने 2006 में महर्षि दयानंद ग्राम हरिद्वार में पतंजलि योगपीठ ट्रस्ट के साथ अत्याधुनिक औषधि निर्माण इकाई पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड की स्थापना की। इसके दो संस्थान भारत में हैं। इस के अलावा अमेरिका, यूके, कनाडा, मॉरिशश और नेपाल में भी इनके संस्थान हैं।

बाद के वर्षों में पतंजलि ने दैनिक जरूरत की चीजों का विक्रय शुरू किया। फिलहाल उनकी कंपनी पातंजलि का टर्नओवर 25000 करोड़ के आस पास है, स्वामी रामदेव स्वदेशी के साथ राजनीतिक मिशन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। उन्होंने 2010 में भारत स्वाभिमान नाम की पॉलिटिकल पार्टी भी बनायी, लेकिन बाद में 2014 के चुनाव में उन्होंने नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने के कैंपेन का समर्थन किया। वे भ्रष्टाचार के खिलाफ और जनलोकपाल के समर्थन में हुए आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभा चुके हैं। योगगुरु रामदेव की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि उन्होंने देश और दुनिया को योग की अहमियत को समझाया है। उन्हें जनवरी 2007 में भुवनेश्वर की कलिंगा यूनिवर्सिटी से डॉक्टरेट की उपाधि मिल चुकी है। 2015 में हरियाणा सरकार ने उन्हें योग और आयुर्वेद का ब्रांड एम्बेसडर बनाया। कोरोना काल में स्वामी रामदेव बेहद कम कीमत में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली दवाओं को बाजार में उतार करकर सुर्खियों में हैं।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में स्वामी रामदेव 20वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

91.2

बेबाक, कर्मठ और निर्विवाद राजनीतिज्ञ

राहुल गांधी

राजनेता और संसद सदस्य राहुल गांधी देश की सबसे पुराने राजनीतिक दल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष हैं। संसद के निचले सदन लोकसभा में केरल के वायनाड सीट का प्रतिनिधित्व कर रहे राहुल गांधी की छवि शांत, मृदुभाषी राजनेता की है। वे देश के प्रसिद्ध नेहरू-गांधी परिवार की तीसरी पीढ़ी के अगुआ हैं और 50 वर्ष की आयु में ही सार्वाधिक मैच्योर राजनेताओं में गिने जाते हैं। 2009 के आम चुनावों में कांग्रेस को मिली बड़ी जीत के मुखिया रहे राहुल को हालांकि आगामी राष्ट्रीय चुनावों में अपेक्षित सफलता नहीं मिल पायी, लेकिन कई प्रदेशों में उनके नेतृत्त्व और दिशा-निर्देशन व नेतृत्त्व में पार्टी ने सत्ता हासिल की है।

राहुल गांधी ने कोरोना काल में सबसे पहले लॉकडाउन की आवाज उठायी थी। देश की अर्थव्यवस्था पर भी वे लगातार चिंतित रहते हैं और आर्थिक विशेषज्ञों से मंत्रणा कर सरकार को महत्त्वपूर्ण सकारात्मक सलाह देते रहते हैं। 19 जून 1970 को नई दिल्ली में जन्मे राहुल गांधी ने स्नातक की पढ़ाई के बाद प्रबंधन गुरु माइकल पोर्टर की प्रबंधन परामर्श कंपनी मॉनीटर ग्रुप के साथ 3 साल तक काम किया और बाजार का अनुभव प्राप्त किया। कंपनी और सहकर्मियों को इस बात का पता न चले कि वे किसके साथ कार्यरत हैं इसके लिये सुरक्षा एजेंसियों ने उन्हें एक छद्म नाम से रोजगार हासिल करने की सलाह दी।

सन 2002 के अंत में राहुल मुंबई में स्थित अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी से संबंधित एक कम्पनी 'आउटसोर्सिंग कंपनी बैकअप्स सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड' के निदेशक-मंडल के भी सदस्य बने। बाद में वे पूरी तरह राजनीति में उतर गये और सफलता की नयी उँचाइयाँ हासिल कीं। राहुल गांधी की खासियत है कि वे जमीनी स्तर की सक्रियता पर बल देते हैं और ग्रामीण जनता के साथ गहरे संबंध स्थापित करते हैं। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और जुझारू राजनेता राहुल गांधी सीधा संवाद करने में महारत हासिल कर चुके हैं। आगामी राज्यों के चुनावों में कांग्रेस को पुराना गौरव दिलाने के लिये प्रतिबद्ध राहुल वहां अपनी राजनीतिक बिसात बिछाने में जुटे हैं। स्थानीय सरकारों को प्रशासन में कमियां और बेरोजगारी के मुद्दों पर घेरने के अलावे वे केंद्र सरकार को भी महंगाई और अर्थव्यवस्था में कमजोरी के मुद्दों पर आड़े हाथों ले रहे हैं।

FAME INDIA

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में राहुल गांधी 21वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

51.2

प्रभावशाली भारतीय

रन फॉर वाटर के प्रणेता है

सदगुरु जग्गी वासुदेव

22 ★★★★★

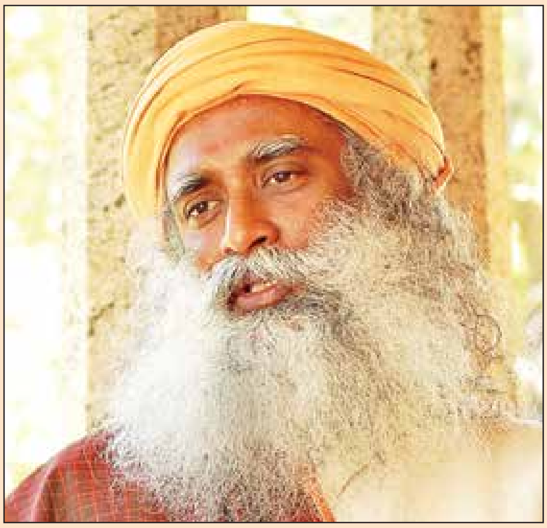

सदगुरु जग्गी वासुदेव 25 साल की उम्र में मैसूर में चामुंडा पहाड़ी पर एक चट्टान पर बैठ थे। अचानक उन्हें विशेष अनुभूति हुई। जब वे होश में आए तब तक शाम हो गई थी। कुछ दिन बाद फिर उन्हें ऐसी अनुभूति हई। इस घटना से सदगुरु के जीवन में बदलाव आया। उन्होंने इन अनुभवों को आम लोगों को समर्पित करने का मन बनाया और आध्यात्म और योग के प्रसार में लग गए। 1983 में मैसूर में अपने सहयोगियों के साथ योग क्लास की शुरुआत की। इसके बाद उन्होंने कर्नाटक के दूसरे शहरों और हैदराबाद में योग इंस्टीट्यूट की स्थापना की। बाद में उन्होंने ईशा फाउंडेशन की स्थापना की। सदगुरु जग्गी वासुदेव के ईशा फाउंडेशन संस्थान की स्थापना का मकसद योग के जरिए लोगों की शारीरिक, मानसिक और आतंरिक बेहतरी पर विशेष जोर देना है। उन्होंने कोयंबटूर के पास पूंडी में वेल्लिंगिरी पहाडियों पर करीब 150 एकड़ में आश्रम बनाया, जिसमें 135 फीट ऊंचा विशाल ध्यानलिंग और एक अत्यंत धार्मिक मंदिर भी है, जो 1999 में बनकर तैयार हुआ। सदगुरु जग्गी वासुदेव ने यूनाइटेड स्टेट में योग सेंटर के अलावा दुनिया भर में कुल 25 योग सेंटर स्थापित किया है।

वे दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ सदैव रचनात्मक कार्य करने और बदलाव को स्वीकार करने के लिए जाने जाते हैं। तकनीकी शब्दों का बेहिचक इस्तेमाल करके वे सिखाते हैं कि कैसे मॉडर्न जिंदगी के कामकाजी जीवन और आध्यात्मिकता में तालमेल बैठाया जा सकता है। ईशा फाउंडेशन ने उनके नेतृत्व में ग्रीन हैंड्स परियोजना के तहत करीब 16 करोड़ पेड़ लगाने का लक्ष्य रखा है। जिसमें अब तक तमिलनाडु और पुडुच्चेरी में 21 लाख से अधिक लोगों ने करीब 85 लाख पौधे लगाया है जो गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल है। पर्यावरण में उत्कृष्ट कार्य के लिए सदगुरु जग्गी वासुदेव को 2008 का इंदिरा गांधी पर्यावरण पुरस्कार दिया गया था। सदगुरु नदियों के संरक्षण के लिए 'रैली फॉर रिवर' और रन फॉर वाटर अभियान चला रहे हैं। यह अभियान 2017 से चल रहा है, इस, अभियान का मकसद नदियों में घटते पानी के प्रति लोगों को सजग करना है। इसके लिए उन्हें 2017 में पदम विभूषण से भी समानित किया गया।

सदगुरु जग्गी वासुदेव ट्रेडिशन्ल गुरुओं से एकदम अलग है। वे गेरुआ वस्त्र के बदले सफेद या कलर्ड कुर्ता और पगड़ी में देखे जाते हैं और अमेरिकी अंदाज में इंग्लिश बोलते हैं। जग्गी वासुदेव आध्यात्म की दुनिया में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। सदगुरु के नाम से प्रसिद्ध वासुदेव का जन्म 1957 में कर्नाटक के मैसूर में हुआ। महज 11 साल की उम्र में योग गुरु राघवेंद्र राव के सानिध्य में जग्गी वासुदेव ने योग का अभ्यास करना शुरू किया। जग्गी वासुदेव ने मैसूर यूनिवर्सिटी से अंग्रेजी में स्नातक की डिग्री हासिल की है। देशभक्ति को समर्पित जग्गी वासुदेव धार्मिक वैमनस्यता दूर करने के लिए इनर इंजीनियरिंग और आपसी बंधुत्व की प्रेरणा देते हैं।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में सदगुरु जग्गी वासुदेव 22वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

50.7

23

★★★★★

मिट्टी से जुड़े कर्मठ राजनेता

नरेंद्र सिंह तोमर

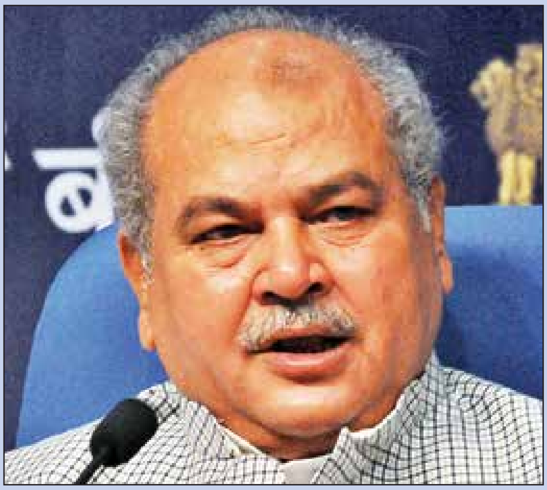

नरेंद्र सिंह तोमर बीजेपी के तेजी से उभरते राजनेता और कुशल प्रशासक के तौर पर जाने जाते हैं। वे केंद्र सरकार के बेस्ट परफार्मिंग मिनिस्टर में से एक माने जाते हैं और फिलहाल चार महत्त्वपूर्ण मंत्रालयों का कार्यभार संभाल रहे हैं। उनकी अहमियत का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मोदी सरकार पार्ट-1 में उनके पास पाँच अहम सरकारी विभागों की कमान बतौर कैबिनेट मंत्री थी। वर्ष 2009 से ही लोकसभा में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कराने वाले तोमर लगातार तीसरी बार सांसद चुने गये हैं। वे किसान परिवार से ताल्लुक रखते हैं और कायदे-कानून से काम करने में विश्वास रखते हैं।

ग्वालियर में 12 जून 1957 को संपन्न किसान मुंशी सिंह तोमर और उनकी पत्नी शारदा देवी के घर जन्मे नरेंद्र की प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही हुई।

उन्होंने स्नातक तक पढ़ाई की और इस दौरान वे छात्र संघ के अध्यक्ष भी रहे। 1980 में बीजेपी युवा मोर्चा के नगर अध्यक्ष के पद से अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की। 1998 और 2008 में वे ग्वालियर से बीजेपी के विधायक रहे। 2003 से 2007 तक वे मंत्रिमंडल में अलग-अलग विभागों के मंत्री बने।

उन्हें बेहतरीन काम करने के लिए उस वक्त के लोकसभा स्पीकर सोमनाथ चटर्जी ने उत्कृष्ट मंत्री के रुप में सम्मानित किया था। वे वर्ष 2008 और 2012 में मध्य प्रदेश बीजेपी के अध्यक्ष रहे ।2009 में वे पहली बार मुरैना से लोकसभा में पहुंचे ।2014 में वे ग्वालियर से सांसद बने ।2019 में एक बार फिर मुरैना लोकसभा सीट से चुने गए ।नरेंद्र सिंह तोमर आरएसएस की शाखा से निकले भाजपा नेता हैं और पार्टी में उनकी छवि काफी अच्छी है। उनकी संगठनात्मक क्षमता और प्रशासनिक पकड़ बेजोड़ है। वे बीजेपी के अहम रणनीतिकार माने जाते हैं। वे प्रधानमंत्री मोदी के भरोसेमंद नेताओं में से एक माने जाते हैं। पीएम आवास योजना भाजपा सरकार के पहले कार्यकाल की महत्वाकांक्षी योजना थी। इस योजना को ग्रामीण विकास मंत्री रहते हुए उन्होंने बखूबी निभाया। इसे देखते हुए उन्हें केंद्र सरकार में कृषि मंत्री की जिम्मेदारी दी गई। जिससे उन्हें देश में किसानों की दशा को सुधारने का एक बेहतर अवसर मिला है। भारत कृषि प्रधान देश है। सरकार के लक्ष्य के मुताबिक किसानों की आय को दोगुना करना उनकी प्राथमिकता है। नरेंद्र सिंह तोमर लक्ष्य निर्धारित काम करते हैं और वे सामाजिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक कार्यों का आयोजन करने में रुचि रखते हैं। इसके अलावा, गरीबों की मदद, रक्तदान शिविरों के आयोजन और वृक्षारोपण में उनकी विशेष रुचि है।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में नरेंद्र सिंह तोमर 23वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

50.4

प्रभावशाली भारतीय

24 ★★★★★

जिम्मेदार और कर्तव्यपरायण

प्रह्लाद जोशी

कर्नाटक के विजयापुर में 11 सितंबर 1962 को प्रह्लाद जोशी का जन्म हुआ। उनके पिता वेंकटेश जोशी रेलवे में कर्मचारी थे। उनकी शुरुआती पढ़ाई रेलवे स्कूल में हुई और उन्होंने न्यू इंग्लिश स्कूल हुबली से हाईस्कूल और हुबली के ही श्री कडाईसिद्धेश्वर आर्ट्स कॉलेज से स्नातक तक की शिक्षा हासिल की। वे स्टूडेंट लाइफ में राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ से जुड़े और बाद में बीजेपी के सक्रिय कार्यकर्ता बन गये। प्रह्लाद जोशी को 1990 की शुरुआत में 'कश्मीर बचाओ' आंदोलन से तब खासी पहचान मिली जब उन्होंने हुबली के ईदगाह मैदान में तिरंगा फहराने को लेकर आंदोलन चलाया था। प्रह्लाद जोशी 2014 से 2016 तक कर्नाटक बीजेपी के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। 2004 में पहली बार प्रह्लाद जोशी धारवाड़ उत्तर से लोकसभा चुनाव जीत कर सांसद बने। वे दूसरी बार भी यहां से जीते। ये सिलसिला थमा नहीं 2014 और 2019 में लगातार चुनाव जीतने में सफल रहे। प्रह्लाद जोशी को संसद का लंबा अनुभव है। वे संसद की कार्यवाही की बारीकियों को काफी बेहतर तरीके से जानते और समझते हैं। 2006 से 2018 के बीच कई संसदीय समितियों के सदस्य रहे हैं और अपने दायित्वों को लेकर सजग रहते हैं। माप-तोल कर बोलने की वजह से पार्टी और दूसरे दलों के सांसदों के बीच उनकी छवि अच्छी है। इतना ही नहीं वे 2014 से 2018 तक लोकसभा स्पीकर के पैनल में रहे हैं। कोरोना काल में संसद की कार्यवाही सुचारु तरीके से चलाने में उन्होंने अच्छी जिम्मेदारी निभाई है , क्योंकि इस दौरान सरकार के कई अहम बिल संसद से पारित हुए है। प्रह्लाद जोशी संसदीय और मानवीय मामलों की उम्दा समझ रखते हैं। वे अहम पदों पर रहते हुए भी सामाजिक उत्थान के लिए काम करते रहे हैं। उन्होंने प्राइमरी स्कूल में बच्चों के लिए मिड-डे मील की योजना बनायी, जिसके तहत 86000 बच्चों को भोजन दिया जाता है। इसके साथ हजारों रोगियों के लिए मुफ्त हेल्थ सुविधा और निःशुल्क नेत्र चिकित्सा की व्यवस्था की है। वे गरीबों और सामाजिक रुप से वंचितों की सेवा में विशेष रुचि रखते हैं। उन्होंने कन्नड़ भाषा में 'साधनेय संकल्प' नाम की किताब लिखी है।

प्रह्लाद जोशी को 17वीं लोकसभा में चुन कर आने के बाद केंद्र सरकार में बड़ी जिम्मेदारी मिली है। संसदीय कार्य मंत्री के तौर पर वे सरकार और सांसदों के बीच की अहम कड़ी हैं। प्रह्लाद जोशी संसदीय परंपरा के लिए आदर्श ख्याल रखते हैं। स्वभाव से मृदुल और पार्टी की नीतियों के प्रखर समर्थक होना उनकी शक्ति है। वे सबको साथ लेकर चलने के लिए जाने जाते हैं। उन पर संसदीय मंत्रालय के साथ कोयला एवं खदान मंत्रालय का भार है , हालांकि पहली बार केंद्र में मंत्री बने हैं लेकिन उनका राजनीतिक अनुभव दो दशक पुराना है।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में प्रह्लाद जोशी 24वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

50.1

25

शौर्य, कार्यकुशलता और लोकप्रियता अद्भुत संगम

कैप्टन अमरिंदर सिंह

पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह चंद गिने-चुने राजनेताओं में से हैं जो एक राजा, एक फौजी और राजनेता तीनों का मिश्रण हैं। वे कांग्रेस के वरिष्ठतम नेताओं में से एक हैं और पंजाब में कांग्रेस को बार-बार सत्ता दिलाने में उनका खासा योगदान रहा है। पंजाब की राजनीति में उन्होंने अपना इतिहास बनाया है। वर्ष 2017 में जब पूरे देश में भाजपा की लहर थी, कैप्टन अमरिंदर सिंह ने पंजाब की 117 विधान सभा सीटों में से कुल 77 सीटें जीतकर बहुतमत हासिल किया। उनके सुशासन और कार्यकुशलता का लोहा उनके विपक्षी भी मानते हैं। वे अपनी बातों को सहज तरीके से कहते हैं जो आम जनता को अपने दिल के करीब लगता है।

पटियाला राजघराने में 11 मार्च 1942 को अमरिंदर सिंह का जन्म हुआ। उनके पिता का नाम महाराज यादविंदर सिंह और उनकी माता का नाम महारानी मोहिंदर कौर था।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा वेल्हम बॉयज स्कूल और लॉरेन्स स्कूल सनावर से हुई। देश सेवा के लिए वे राष्ट्रीय रक्षा अकादमी और भारतीय सैन्य अकादमी ज्वाइन कर एक सैन्य अधिकारी बने। 1963 में सेना उन्हें कमीशंड ऑफिसर के तौर पर सेना में शामिल किया गया, लेकिन 1965 में इस्तीफा दे दिया। उसी साल पाकिस्तान के साथ युद्ध छिड़ने पर वे पुनः सेना में शामिल हो गये और सिख रेजीमेंट के कैप्टन के तौर पर उन्होंने युद्ध में हिस्सा भी लिया। राजीव गांधी के करीबी रहे कैप्टन अमरिंदर सिंह 1980 में कांग्रेस में शामिल हुए और उसी साल लोकसभा के लिए चुने गये। अमृतसर के स्वर्ण मंदिर 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' के खिलाफ उन्होंने पार्टी से इस्तीफा दे दिया। फिर वे 1998 तक कांग्रेस से दूर रहे, 1992 में उन्होंने शिरोमणि अकाली दल (पंथिक) का गठन किया।

1998 में उन्होंने अपनी पार्टी का कांग्रेस में विलय कर दिया। वे 1999 से 2002 तथा 2010 से 2013 तक पंजाब कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष और 2002 से 2007 तक राज्य के मुख्यमंत्री भी रहे। कांग्रेस आलाकमान के करीबी अमरिंदर सिंह किसी भी मसले पर बेधड़क राय रखते हैं। 2014 में लोकसभा चुनावों में कैप्टन सिंह ने अमृतसर सीट पर बीजेपी के हाई प्रोफाइल नेता अरुण जेटली को पराजित किया। प्रकाश सिंह बादल को सत्ता से बेदखल करने में अहम भूमिका निभाने वाले कैप्टन अमरिंदर सिंह 16 मार्च 2017 को राज्य के 26वें मुख्यमंत्री बने। सेना में रहे अमरिंदर सिंह विरोधियों की नाकामी को सियासी मुद्दा बनाने से नहीं चूकते। पटियाला राजपरिवार के होने के बावजूद किसानों की समस्याओं को लेकर फिक्रमंद रहते हैं। कैप्टन अमरिंदर सिंह नेक शख्सियत होने के बावजूद प्रशासनिक मामले में जीरो टॉलरेंस रखते है, जो उनके कार्य कौशल को उत्कृष्ट बनाता है। इसके साथ वे अच्छे लेखक भी हैं। उन्होंने अंग्रेजी में 'द लास्ट सनसेट' और 'द राइज एंड फॉल ऑफ द लाहौर दरबार' नाम से दो किताबें लिखी है।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में कैप्टन अमरिंदर सिंह 25वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

50.0

प्रभावशाली भारतीय

26 ★★★★★

ऊर्जा और जोश से भरपूर हैं केंद्रीय मंत्री

राज कुमार सिंह

राज कुमार सिंह केंद्र सरकार में ऊर्जा और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री स्वतंत्र प्रभार हैं। वरिष्ठ आईएएस रह कर पॉलिटिक्स में पहुँचे राज कुमार सिंह अपनी प्रशासनिक क्षमता और कड़क मिजाजी के लिए जाने जाते हैं। वर्तमान कैबिनेट में परफॉर्मर मिनिस्टर के तौर पर उनकी पहचान है। ईमानदार व कर्मठ छवि के राज कुमार सिंह की कार्य-शैली आम लोगों से बिल्कुल अलग है। वे विकास और आधुनिकीकरण के पक्षधर हैं। 20 जनवरी 1952 को बिहार के सुपौल में जन्मे राजकुमार सिंह ने दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से इंग्लिश में ग्रैजुएशन करने के बाद 1975 में सिविल सेवा की परीक्षा में सफलता पायी। महज 23 साल में आईएएस बने राजकुमार सिंह बिहार में कई अहम प्रशासनिक पदों पर रहे हैं।

आर. के. सिंह 1990 में सुर्खियों में आये जब उन्होंने बीजेपी के सीनियर नेता लालकृष्ण आडवाणी की सोमनाथ से निकली रथयात्रा को समस्तीपुर में रोका और उन्हें गिरफ्तार किया। लेकिन एनडीए के सत्ता में आने पर गृह मंत्रालय संभाल रहे लालकृष्ण आडवाणी ने उन्हें वर्ष 1999 में होम मिनिस्ट्री में ज्वाइंट सेक्रेटरी बना दिया। वहां वे वर्ष 2004 तक रहे। प्रशासनिक सेवा में बेहतरीन प्रदर्शन की बदौलत बुलंदियों पर पहुंचे आर. के. सिंह 2011 से 2013 तक भारत के गृह सचिव रहे हैं। उनका राजनीतिक सफर भी खासा दिलचस्पी भरा है। उन्हें बीजेपी ने 2014 में बिहार के आरा से लोकसभा सीट के लिए टिकट दिया और वे आरा संसदीय क्षेत्र से चुनाव जीत कर लोकसभा पहुंचे। 2019 में वे दूसरी बार आरा लोकसभा क्षेत्र से सासंद हैं।

राज कुमार सिंह को 2017 में मोदी मंत्रिमंडल में स्थान मिला था। उन्हें ऊर्जा एवं गैर परंपरागत ऊर्जा मंत्रालय का स्वतंत्र प्रभार सौंपा गया। उन्होंने मंत्री रहते हुए जबरदस्त काम किया और देश में विद्युतीकरण की योजना में उनका अहम योगदान रहा। 2019 के केंद्रीय मंत्रिमंडल में भी कार्यों की बदौलत उन्हें ऊर्जा मंत्रालय यानी एनर्जी मिनिस्ट्री में दोबारा स्वतंत्र प्रभार दिया गया। वे समय से कार्य करने और सरकार की नीतियों के सही क्रियान्वयन को अहमियत देने के लिए जाने जाते हैं। बतौर मंत्री भी उन्होंने पावर सेक्टर के काम को तेजी से आगे बढ़ाया है। वे ऊर्जा के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने को लेकर कटिबद्ध हैं। वे भारत सरकार के ऊर्जा नवीकरणीय के लक्ष्य को पाने के लिए तत्पर हैं। वे समस्या को तेजी से निपटाने में विश्वास रखते हैं। भ्रष्टाचार और आतंकवाद के मसले पर पर जीरो टॉलरेंस रखने वाले राज कुमार सिंह सोशल मीडिया पर भी बेहद एक्टिव हैं।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में राज कुमार सिंह 26वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

89.8

प्रभावशाली **भारतीय**

27 ★★★★★

कम उम्र के कामयाब युवा राजनीतिज्ञ डॉ. प्रमोद सावंत

डॉ. प्रमोद पांडुरंग सावंत एक ऐसे युवा राजनीतिज्ञ हैं जिन्होंने कम समय में ही देश भर में पहचान कायम कर लिया है। वे गोवा के वर्तमान मुख्यमंत्री हैं। वे गोवा विधानसभा में सनक्वेलिम सीट का प्रतिनिधित्व करते हैं और प्रदेश की राजनीति में एक मिसाल बनकर उभरे हैं। वे पेशे से आयुर्वेदिक चिकित्सक रहे हैं और मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने से पहले गोवा विधानसभा के स्पीकर थे। प्रमोद सावंत का जन्म 24 अप्रैल 1973 को गोवा के एक मराठा परिवार में हुआ था। उनके पिता पांडुरंग सावंत जिला पंचायत सदस्य रह चुके हैं. वे भारतीय जनसंघ और भारतीय मजदूर संघ में भी एक्टिव थे। बीजेपी में काफी समर्पित कार्यकर्ता के तौर पर उनकी पहचान रही इसलिये घर में संघ का माहौल था। इसका असर प्रमोद सावंत पर भी पड़ा।

प्रमोद सावंत और उनका पूरा परिवार भाजपा को समर्पित है। उनकी पत्नी सुलक्षणा सावंत बिचोलिम के श्री शांतादुर्गा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में रसायन शास्त्र की शिक्षिका हैं और वर्तमान में भाजपा महिला मोर्चा की गोवा इकाई की अध्यक्षा हैं। प्रमोद सावंत ने कोल्हापुर में गंगा एजुकेशन सोसाइटी के आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज से आयुर्वेद, चिकित्सा और शल्य चिकित्सा की डिग्री प्राप्त की और पुणे में तिलक महाराष्ट्र विश्वविद्यालय से मास्टर ऑफ सोशल वर्क में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की है। प्रमोद सावंत पढ़ाई के बाद सरकारी नौकरी में आ गये। साल 2008 में मनोहर पर्रिकर उनको राजनीति में ले आये जब वे मापुसा के उत्तरी जिला अस्पताल में आयुर्वेद के डॉक्टर थे। बीजेपी नेतृत्व के कहने पर उन्होंने नौकरी से इस्तीफा दे दिया और पार्टी ने उनको सांक्वेलिम सीट से उपचुनाव लड़ाया। हालांकि प्रमोद वह उपचुनाव हार गये, लेकिन उन्होंने जनसंपर्क बढ़ाना शुरू कर दिया। इस बीच सांकेलिम सीट का नाम बदलकर साखली हो गया। प्रमोद 2012 में यहां से चुनाव जीते, फिर साल 2017 में यहां से एक बार फिर विधायक बने। मनोहर पर्रिकर मुख्यमंत्री बने तो प्रमोद सावंत विधानसभा अध्यक्ष बने।

22 मार्च 2017 को उन्हें गोवा विधानसभा का अध्यक्ष चुना गया। गोवा के राजनीतिक इतिहास में वे सबसे कम उम्र के विधानसभा अध्यक्ष थे। प्रमोद सावंत भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष और युवा मोर्चा के ही राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं। वे कुछ समय के लिए भारतीय जनता पार्टी की गोवा इकाई के प्रवक्ता के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। सावंत के समर्थक अक्सर उनको नेक्स्ट सीएम कहकर उत्साहित करते रहते थे। मनोहर पर्रिकर के निधन के बाद जब गोवा के मुख्यमंत्री की सीट खाली महसूस हुई तो अचानक एक राजनीतिक शून्य उत्पन्न हो गया। ऐसी स्थिति में भाजपा नेतृत्व ने प्रमोद सावंत पर विश्वास दिखाया और 19 मार्च 2019 को उन्हें गोवा के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ दिलाई गई । बतौर मुख्यमंत्री उन्होंने कार्यकाल में बेहतर प्रभाव कायम किया है, कोरोना संकट के समय भी उनकी कार्यशैली की चर्चा चारो तरफ हो रही है । इतने कम समय में उनकी प्रभावशाली कार्यों की एक लंबी फेहरिस्त है।

FAME INDIA

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में डॉ. प्रमोद सावंत 27वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

89.8

प्रभावशाली भारतीय

28

★★★★★

देश के सार्वाधिक कुशल प्रशासकों में शुमार

अजय भल्ला

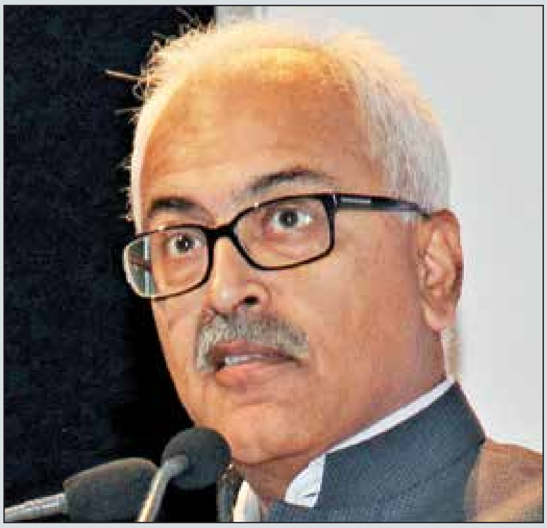

सीनियर आईएएस अधिकारी अजय कुमार भल्ला देश के गृह सचिव हैं। असम-मेघालय कैडर के 1984 बैच के इस आईएएस अधिकारी को देश के सबसे कुशल प्रशासकों में गिना जाता है। करीब 59 वर्षीय अजय भल्ला मूल रूप से दिल्ली के हैं और असम, मेघालय तथा केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर उनका प्रशासनिक अनुभव लंबा है। वे कई अहम पदों पर रह चुके हैं। वे चुनौती पूर्ण कार्यों को सहज तरीके से निपटाने के लिए जाने जाते हैं। देश के गृह सचिव के तौर पर उनकी अहम जवाबदेही है।

अजय कुमार भल्ला ने दिल्ली यूनिवर्सिटी से, वनस्पति विज्ञान में एमएससी और समाज शास्त्र में एमफिल भी किया है।आईएएस के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान अजय कुमार भल्ला असम एवं मेघालय तथा केंद्र सरकार में अहम पदों पर काम कर चुके हैं। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया की क्वीन्सलैंड यूनिवर्सिटी से एमबीए की डिग्री भी हासिल की है। वे केंद्रीय वाणिज्य मंत्रालय में एडिशनल सेक्रेटरी, कोयला मंत्रालय में ज्वाइंट सेक्रेटरी, जहाजरानी मंत्रालय में डायरेक्टर पोर्ट्स रह चुके हैं। 20 अक्टूबर 2016 से लेकर 30 जून 2017 तक वे विदेश व्यापार महानिदेशक रहे। 30 जून 2017 को अजय कुमार भल्ला को भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय में सचिव नियुक्त किया गया था। अजय कुमार भल्ला को जुलाई 2019 के अंत में, गृह मंत्रालय में विशेष कार्य अधिकारी नियुक्त किया गया था। इस दौरान उन्होंने जिम्मेदारियों के अनुरूप काम किया। देश की आतंरिक स्थिति और चुनौतियों को देखते हुए गृह मंत्रालय में एक जिम्मेदार, कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदार ऑफिसर की दरकार थी। ऐसे में पूर्व के सफल कार्यकाल को देखते हुए प्रधानमंत्री की अगुवाई वाली चयन समिति ने गृह सचिव बनाने के लिए अजय कुमार भल्ला के नाम पर मुहर लगा दी।

गृह सचिव अजय कुमार भल्ला प्रशासनिक लिहाज से गंभीर इंसान हैं। वे अपने दायित्वों को भलीभांति जानते हैं। देश की आतंरिक सुरक्षा और संवेदनशील मसलों की अहमियत को समझते हैं और समय पर खास रणनीति बनाने में माहिर हैं। आतंकवाद, नक्सलवाद और कोरोना जैसे मामलों में उन्हें अपने प्रशासनिक अनुभव से देश की सेवा का अहम अवसर मिला है। कोरोना संकट के दौर में उन्होंने राज्यों के मुख्य सचिवों को समय समय पर लॉकडाउन को सख्ती से लागू करने की हिदायत दी है। लॉकडाउन में प्रवासी मजदूरों को लेकर उनके काम की तारीफ हुई है। कठिन समय में सख्ती से सरकारी आदेश को लागू करवाना उनकी खासियत रही है। वे सरकारी कार्यों में किसी प्रकार की कोताही बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करते। कोरोना काल में डॉक्टर्स और पैरा मेडिकल स्टाफ के अंतर-राज्यीय आवाजाही को जरूरत के मुताबिक उन्होंने सुगम बनाया है। वे संकट और विषम परिस्थितियों में बेहद शांत रहकर काम करते हैं।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में अजय भल्ला 28वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

55.5

29 ★★★★★

देश की रक्षा को आत्मनिर्भरता का संबल देते

अजय कुमार

जब चीन और पाकिस्तान जैसा पड़ोसी हो तो आतंरिक और वाह्य सुरक्षा की अहमियत काफी बढ़ जाती है । ऐसे में देश को हर स्तर पर तैयार रहने की जरूरत है। इन मानकों को पूरा करने की जिम्मेदारी रक्षा मंत्रालय की होती है। जिसे देखते हुए रक्षा मंत्रालय रणनीति कौशल और क्षमतावान टीम बनाती है। रक्षा सचिव अजय कुमार इस दृष्टिकोण से फिट बैठते हैं। लिहाजा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में कैबिनेट नियुक्ति समिति ने अजय कुमार को रक्षा सचिव नियुक्त किए जाने को मंजूरी दी। 1985 बैच के केरल कैडर के आईएएस अजय कुमार एक बेहद सुलझे हुए और सफल अधिकारी हैं। रक्षा सचिव अजय कुमार प्रशासनिक स्तर पर काम के मामले में बेहद संवेदनशील और गंभीर व्यक्ति है।

अजय कुमार का जन्म 2 अक्टूबर, 1962 को उत्तर प्रदेश में हुआ था। उन्होंने आईआईटी कानपुर से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है। उन्होंने अपनी सेवा के तीन दशक केरल राज्य सरकार को दिये, जहां उन्होंने तीन अलग-अलग विभागों का जवाबदेही के साथ नेतृत्व किया। रक्षा सचिव का पद भार संभालने से पहले वे केरल सरकार में प्रमुख सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी), केरल राज्य इलेक्ट्रॉनिक्स विकास निगम के प्रबंध निदेशक, सचिव (उद्योग), केरल राज्य सह-प्रबंध निदेशक जैसे अहम पदों पर रह चुके हैं।

अजय कुमार हाल ही में उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में डिफेंस एक्सपो को सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए सुर्खियों में रहे हैं। देश में अब तक की सबसे बड़ी रक्षा प्रदर्शनी में देश-विदेश की करीब एक हजार कंपनियों ने हिस्सा लिया, जिनमें 165 विदेशी कंपनियां शामिल थीं। प्रधानमंत्री ने इसी साल 5 फरवरी को इस-एक्सपो का उद्घाटन किया। इसमें यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) सहित तीनों सेनाओं के प्रमुख शामिल रहे। इतना ही नहीं इस डिफेंस एक्सपो में 14 अफ्रीकी देशों ने भी हिस्सा लिया। इसके सफल आयोजन का श्रेय रक्षा सचिव अजय कुमार को जाता है। रक्षा सचिव अजय कुमार के डिफेंस एक्सपो के शानदार आयोजन का नतीजा है कि देश में रक्षा उत्पाद को बढ़ावा मिल रहा है। उन्होंने सरकार की नीतियों को बखूबी आगे बढ़ाया है। रक्षा क्षेत्र में विकास की संभावना को देखते हुए सरकार ने डिफेंस सेक्टर के नियमों को आसान बनाया है। 100 फीसदी एफडीआई का रास्ता साफ हुआ है। अजय कुमार के रक्षा सचिव बनने के बाद 2025 तक दुनिया के 5 प्रमुख रक्षा हार्डवेयर उत्पादकों में भारत का नाम शामिल होने की उम्मीद जतायी जा रही है। उनकी प्रशासनिक कुशलता की वजह से ही भीरतीय सेना और रक्षा मंत्रालय को संबल मिला है। राफेल विमानों की फ्रांस से शीघ्र डिलीवरी में भी उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने रक्षा उत्पाद के क्षेत्र में कई अहम काम किये हैं जो आने वाले समय में देश के लिए बेहद फायदेमंद साबित होगा।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में अजय कुमार 29वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

89.6

प्रभावशाली भारतीय

सपनों को पूरा करने वाले उद्योगपति

गौतम अडानी

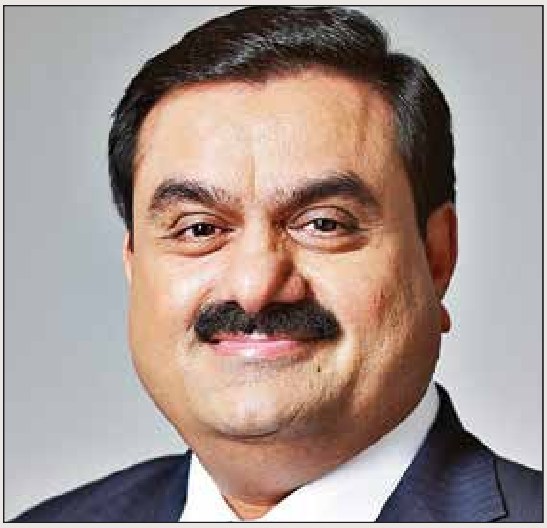

गौतम अडानी का बचपन गरीबी में बीता है। उनके पिता शांतिलाल अडानी जब थराद से अहमदाबाद शिफ्ट हुए थे, तब वे पोल इलाके की सेठ की चॉल में रहते थे। इसी चॉल में गौतम अडानी और उनके छह भाई-बहनों का बचपन व्यतीत हुआ। आर्थिक तंगी की वजह से उनकी बी कॉम की पढ़ाई पूरी ना हो पायी, लेकिन परिस्थितियों से हार ना मानने वाले गौतम रोजी-रोटी के लिए मुंबई चले गये। एक डायमंड कंपनी में मामूली तनख्वाह पर नौकरी की, लेकिन गौतम अडानी ने परिवार को बुरे दौर से बाहर निकालने के लिए एक सपना देखा था। इसी सपने को साकार करने के लिए 20 साल की उम्र में हीरे का ब्रोकरेज आउटफिट खोला। यहीं से किस्मत ने करवट ली। अगले ही साल अडानी के आउटलेट का टर्नओवर लाखों का हो गया। अब फिर एक बदलाव की बारी थी।

अपने भाई मनसुखलाल के कहने पर उन्होंने अहमदाबाद की एक प्लास्टिक फैक्ट्री में काम किया। वहां जो भी ट्रेनिंग ली, उसकी बदौलत पीवीसी पाइप्स के इंपोर्ट को शुरू किया और काफी सफलता हासिल की। गौतम अडानी ने 1988 में एक्सपोर्ट - इम्पोर्ट कंपनी अडानी इंटरप्राइजेज की स्थापना की। इसके बाद उनका बिजनेस का साम्राज्य बढ़ता गया और उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नही देखा। उनकी पत्नी का नाम प्रीति है और वह पेशे से डेंटिस्ट थीं। अब वे अडानी फाउंडेशन की मुख्य कर्ताधर्ता हैं। गौतम अडानी पहली पीढ़ी के इंटरप्रेन्योर हैं। आज अडानी समूह का कारोबार कोयला व्यापार, कोयला खनन, तेल एवं गैस खोज, बंदरगाहों, मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक, एनर्जी और गैस वितरण के साथ रक्षा के क्षेत्र में फैला है। उन्हें सफलता आसानी से हासिल नहीं हुई है। इसके पीछे उनका समर्पण, त्याग और ईमानदारी है। 5 लाख से बिजनेस की दुनिया में कदम रखने वाले गौतम अडानी फिलहाल पोर्ट्स टायकून के नाम से जाने जाते हैं। उनकी संपति 14 अरब डॉलर हैं। लेकिन वे अपने पुराने दिनों को नहीं भूलते और सेठ की चॉल पर अपने पुराने दोस्तों से मिलने जरूर जाते हैं और वहां जरूरतमंदों की सेवा में कोई कोर कसर नहीं छोड़ते।

भारत के टॉप उद्योगपतियों में से एक गौतम अडानी का बिजनेस कई देशों में फैला है। गुजरात के एक निम्न मध्यमवर्गीय जैन परिवार में जन्मे और कभी दोस्तों के स्कूटर पर पीछे बैठे देखे जाने वाले गौतम अडानी आज एयरपोर्ट जाने के लिए अपना हेलिकॉप्टर का इस्तेमाल करते हैं। उनके पास हेलिकॉप्टर, बौम्बार्डियर और बीचक्राफ्ट विमान हैं। गौतम अडानी एक स्वनिर्मित अरबपति हैं जो अडानी समूह के अध्यक्ष हैं। गौतम अडानी एक ऐसे इंसान हैं जो कभी परेशानियों से मुंह नहीं मोड़ते। वे संघर्ष को सफलता का माध्यम मानते हैं। इसी वजह से वे फर्श से अर्श पर पहुंचने वाले कामयाब अरबपति हैं।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में गौतम अडानी 30वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

89.3

भारत के पहले सीडीएस जनरल बिपिन रावत

देश के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत ने इसी साल एक जनवरी को पद भार ग्रहण किया। वे 31 दिसंबर 2019 को थल सेना प्रमुख के पद से रिटायर हुए थे। 30 दिसंबर 2019 को ही देश के चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ के लिए सेना के नियमों में संशोधन किया गया। जनरल बिपिन रावत 37 साल तक आर्मी में रहने के बाद चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ बने हैं। जनरल बिपिन रावत की सबसे बड़ी खासियत ये है कि वे टीम वर्क को अहमियत देते हैं।

उत्तराखंड के पौड़ी में जन्मे बिपिन रावत को सेना का संस्कार विरासत में मिला है। उनके पिता लक्ष्मण सिंह रावत भी लेफ्टिनेंट जनरल थे। बिपिन रावत की शुरुआती पढ़ाई सेंट एडवर्ड स्कूल शिमला में हुई। इसके बाद नैशनल डिफेंस अकादमी, खड़कवासला से ग्रैजुएशन कर इंडियन मिलिट्री अकादमी, देहरादून में ट्रेनिंग ली। इस दौरान उनकी परफॉर्मेंस को देखते हुए उन्हें स्वोर्ड ऑफ ऑनर से भी सम्मानित किया गया। 16 दिसंबर 1978 को वे 11वीं गोरखा राइफल्स की 5वीं बटालियन में शामिल किए गए। यहीं से शुरू हुआ उनका आर्मी का सफर।

वे गोरखा राइफल्स में रहते हुए जीओसी- सी, सदर्न कमांड, आईएमए देहरादून और लॉजिस्टिक स्टाफ ऑफिसर के पद पर रहे। सेना में सर्विस के दौरान उन्होंने चेन्नई के वेलिंगटन कॉलेज से भी एडवांस कोर्स में ग्रेजुएशन किया और अमेरिका के सर्विस स्टाफ से हाई कमांड कोर्स भी किया। इतना ही नहीं उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सेवाएं भी दी हैं। वे कांगों में यूएन मिशन के तहत सेवा दे चुके हैं। बिपिन रावत ने इस मिशन में करीब 7000 हजार लोगों की जान बचायी। सेना में रहते हुए उन्होंने अपने युद्ध कौशल का कई बार परिचय दिया है, जिससे उन्हें उत्तम युद्ध सेवा मेडल, अतिविशिष्ट सेना मेडल और युद्ध सेना मेडल से सम्मानित भी किया गया है। 31 दिसंबर 2016 को वे आर्मी चीफ बने। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ बनने से पहले बिपिन रावत का आर्मी में पूर्वी सेक्टर में वास्तविक नियंत्रण रेखा, कश्मीर घाटी और पूर्वोत्तर में काम करने का लंबा अनुभव रहा है। 1986 में चीन से लगी वास्तविक नियंत्रण रेखा पर वे इंफैंट्री बटालियन के प्रमुख थे। उनके नेतृत्व में भारतीय सेना ने सीमा पार जाकर आतंकी शिविरों को ध्वस्त किया। इसके अलावा म्यांमार और पाकिस्तान दोनों ही देशों में हुए सर्जिकल स्ट्राइक्स में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी जिनमें कई आतंकियों को मार गिराया गया था। वे भारतीय समाज को बहुत करीब से समझते हैं। वे पढ़ने-लिखने में रुचि रखते हैं और एक अच्छे लेखक भी हैं। उनके बेबाक लेख पत्र-पत्रिकाओं में पब्लिश होते रहते हैं जिनमें वे भारतीय राजनीति पर भी कटाक्ष करने में संकोच नहीं करते।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में बिपिन रावत 31वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

89.2

प्रभावशाली भारतीय

32

★★★★★

देश के साथ हमेशा खड़े रहने वाले उद्योगपति

सज्जन जिंदल

एक उद्योगपति परिवार में 5 दिसंबर 1959 को जन्मे सज्जन जिंदल के पिता ओम प्रकाश जिंदल ने छोटे स्तर से बिजनेस शुरू किया और बड़ा कारोबार खड़ा किया।

सज्जन ने बेंगलुरू के एम. एस. रमैय्या इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉल्जी से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बीटेक किया, फिर अपने पिता के मुंबई दफ्तर का कामकाज देखने लगे। जिंदल परिवार का बिजनेस बहुत बड़ा है। अभी पूरा ग्रुप उनकी मां सावित्री जिंदल के नाम पर चलता है। सज्जन जिंदल ने अपनी मेहनत से विरासत में मिले बिजनेस को आगे बढ़ाया। 1983 में सज्जन जिंदल ने बिजनेस में कदम रखा और कारोबार को तेजी से आगे बढ़ाया । उन्होंने 1989 में जिंदल स्टील कंपनी यानी 'जिस्को' और जिंदल विजयनगर स्टील लिमिडेट को प्रमोट किया। बाद में 2005 में दोनों कंपनियों को मिलाकर जेएसडब्ल्यू बनाया गया। सज्जन जिंदल की उद्योग के साथ-साथ राजनीति पर भी अच्छी पकड़ है। उनके छोटे भाई नवीन जिंदल कांग्रेस के सांसद हैं और मां सावित्री देवी भी हरियाणा सरकार में मंत्री रह चुकी हैं।

सज्जन का पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ और अफगानिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति हामिद करजई से भी अच्छे संबंध रहे हैं। कोरोना काल में भी उन्होंने अपने बिजनेस को सही तरीके से आगे बढ़ाया है।कोरोना काल में उन्होंने ग्राहकों को गुणवत्तापूर्ण डिलीवरी देने की दिशा में सप्लाई चेन को सरल-सुगम बनाने, कार्यक्षमता सुधारने, उत्पादकता बढ़ाने पर जोर दिया है। वे 2020-21 को लेकर आशावादी हैं। उन्हें भरोसा है कि सेकंड हाफ के बाद इकोनॉमी बहुत मजबूत वापसी करेगी। साथ ही उनका मानना है कि सरकारी नीतियां और वित्तीय पैकेज इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट को उभारने में अग्रणी भूमिका निभायेंगे।बतौर उद्योगपति सज्जन जिंदल एक साहसिक इंसान हैं। वे हालात को लेकर चिंतित नहीं होते बल्कि बिजनेस लीडर के तौर पर प्रोएक्टिव एप्रोच रखते हैं। डिजिटाइजेश के मामले में भी उनका नजरिया औरों से बिल्कुल जुदा है वे लेबर फोर्स को कम करने के बजाए ग्राहकों को गुणवत्तापूर्ण सर्विस देने को प्रधानता मानते हैं। 14 बिलियन डॉलर यानी करीब 1.06 लाख करोड़ रुपए वाली कंपनी जेएसडब्ल्यू ग्रुप के चेयरमैन सज्जन जिंदल को जनवरी 2019 में आउटस्टेंडिग बिजनेस लीडर अवार्ड और जेआरडी टाटा अवार्ड-2017 से भी सम्मानित किया जा चुका है।

सदैव देश के लिए खड़े रहने वाले सज्जन जिंदल कभी राष्ट्रहित से समझौता नहीं करते। देश के प्रमुख उद्योगपतियों में शुमार रहे ये कारोबारी जेएसडब्ल्यू ग्रुप के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। उनकी कंपनियां स्टील, माइनिंग, एनर्जी, बंदरगाह, इन्फ्रास्ट्रक्चर और सॉफ्टवेयर बिजनेस में कारोबार करती हैं। ये इंडिया की सबसे बड़ी प्राइवेट स्टील कंपनी है। हाल ही में एलएसी पर चीन के साथ भारतीय सैनिकों की हिंसक झड़प के बाद उन्होंने चीन से आयात बंद करने के लिए उद्योगपतियों के बीच एकजुटता का आह्वान कर खासी प्रशंसा बटोरी।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में सज्जन जिंदल 32वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

88.9

एथिकल बिजनेस की मिसाल हैं डी-मार्ट फेम

राधा कृष्ण दमानी

अगर किसी से पूछा जाये कि देश में सबसे अमीर व्यक्ति कौन है तो निसंदेह हर कोई मुकेश अंबानी का नाम लेगा, लेकिन अगर भारत के दूसरे सबसे अमीर इंसान का नाम पूछा जाये तो अधिकतर लोग शिव नाडर, गौतम अडानी, उदय कोटक, लक्ष्मी मित्तल या अजीम प्रेमजी का नाम लेंगे। कम लोगों को ही पता है कि राधाकृष्ण दमानी नाम के एक शख्स ऐसे भी हैं जो खामोशी से इन सबको पीछे छोड़ते हुए दूसरे पायदान पर पहुंच चुके हैं।

करीब 18 साल पहले उन्होंने अपनी कंपनी एवेन्यू सुपर मार्ट के रिटेल स्टोर्स की श्रृँखला डी-मार्ट शुरू की और जहां एक तरफ बड़ी-बड़ी रिटेलिंग कंपनियां नफा-नुकसान के झंझावातों को झेलते हुए अपना अस्तित्व बचाने में जुटी हैं वहीं दमानी का डी-मार्ट अपने सधे हुए कदमों से सफलता की सीढ़ियां चढ़ता जा रहा है। दमानी ने 47 साल की उम्र में यानी वर्ष 2002 में पहला डी-मार्ट स्टोर खोला। कुछ ही वर्षों में उन्होंने इसे एक बड़े ब्रांड के तौर पर स्थापित कर लिया और पूरे देश में इसकी शाखाएं खोलीं। हाल ही में एक अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका ने भारत के अमीरों की जो सूची जारी की है उसमें राधाकृष्ण दमानी को दूसरा स्थान दिया है। राधा कृष्ण दमानी को शेयर बाजार की गजब की जानकारी है, लिहाजा निवेश के मामले में उन्हें महारत हासिल है। उन्होंने अपने बाजार ज्ञान और कारोबारी कुशलता से डी-मार्ट और इसे संचालित करने वाली कंपनी एवेन्यू सुपरमार्केट को भारत का एक सफल सुपरमार्केट चेन बना दिया है। राधा कृष्ण ने 18 साल पहले पहला रिटेल शो रुम मुंबई में खोला। फिलहाल उनके करीब 200 स्टोर हैं। पिछले साल उनकी कंपनी एवेन्यू सुपरमार्केट के शेयरों में 30 फीसदी से ज्यादा की बढ़त हुई है।

राधा कृष्ण दमानी को सुपर मार्केट का किंग कहा जाता है। वे मुंबई के अलीबाग में 156 कमरों वाले फाइव स्टार ब्लू रिजॉर्ट के भी मालिक भी हैं। राधा कृष्ण दमानी की शुद्ध कारोबारी सोच और साहसिक कदम उठाने से जरा भी नहीं हिचकने के स्वभाव ने उन्हें कामयाबी के इस मुकाम तक पहुँचाया है। ज्यादा पढ़े-लिखे ना होने के बावजूद उन्होंने यह दिखा दिया कि डिग्री से ज्यादा जरुरी नये विचार हैं, जिसके दम पर अपनी पहचान बनायी जा सकती है। राधा कृष्ण दमानी हमेशा सफेद शर्ट और सफेद पैंट में दिखते हैं और यह पोशाक एक तरह से उनकी पहचान बन गयी है। कई लोग उन्हें मिस्टर व्हाइट एंड व्हाइट भी कहते हैं। इसके साथ ही वे मीडिया और मार्केटिंग की गतिविधियों से दूर रहते हैं और ज्यादा सोशल भी नहीं हैं, लेकिन अपनी कंपनी के जरिये देशभर में कहीब दस हजार लोगों को प्रत्यक्ष तौर पर और लाखों लोगों को संबद्ध तौर पर रोजगार दिया है। इन्हीं गुणों की वजह से वे युवाओं के लिए आइडियल बिजनेसमैन बन गये है।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में राधा कृष्ण दमानी 33वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

38.5

प्रभावशाली भारतीय

कमजोरों के लिए अनुकरणीय कार्य करने वाले

आनंद महिंद्रा

34 ★★★★★

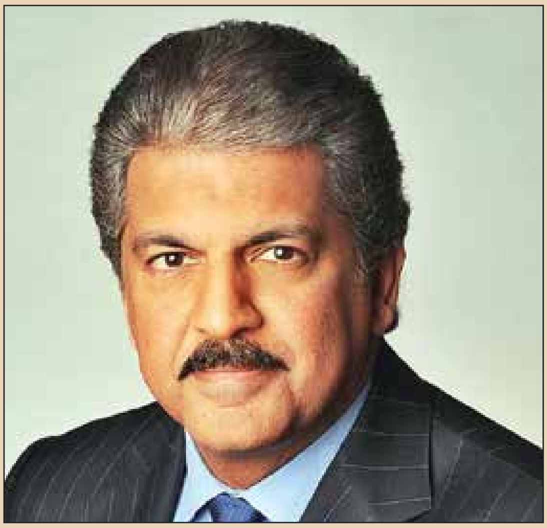

आनंद महिंद्रा महिंद्रा समूह के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक हैं। स्टील ट्रेडिंग कंपनी के रूप में स्थापित महिंद्रा ग्रुप आज कृषि व्यवसाय से लेकर एयरोस्पेस तक कई क्षेत्रों में मौजूद है। यह ग्रुप देश के कई प्रतिष्ठित औद्योगिक घरानों में से एक माना जाता है।आनंद महिंद्रा के कार्य-कुशलता की बदौलत भारत सहित विश्व के अनेक देशों में महिंद्रा ट्रैक्टर, बोलेरो, एक्सयूवी500 और महिंद्रा स्कॉर्पियो सरीखे वाहन 'महिंद्रा उद्योग समूह' की पहचान बन गए हैं। वित्तीय सेवाओं, पर्यटन, इंफ्रास्ट्रक्चर डेव्हलपमेंट, ट्रेड एवं लॉजिस्टिक्स क्षेत्रों में भी इस समूह की अहम भागीदारी है। सबसे बड़ी बात ग्रुप के हेड आनंद महिंद्रा आम लोगो की मदद को लेकर खासे चर्चा में रहते है।

आनंद महिंद्रा का जन्म 1 मई, 1955 को मुंबई में हुआ। 1977 में उन्होंने अमेरिका के हार्वर्ड कॉलेज के 'डिपार्टमेंट ऑफ विजुअल एंड एनवायरॉनमेंटल स्टडीज' से ग्रेजुएट किया। 1981 में आनंद ने 'हार्वर्ड बिजनेस स्कूल' बोस्टन से 'बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन' में मास्टर्स की डिग्री हासिल की। आनंद महिंद्रा 1981 में भारत लौटे, उन्होंने 'महिन्द्रा यूजाइन स्टील कंपनी में वित्त निदेशक के कार्यकारी सहायक के रूप में अपना पहला कार्यभार ग्रहण किया। 1989 में जब महिंद्रा एंड महिंद्रा समूह का विस्तार हुआ तो ये 'रियल स्टेट डेवलपमेंट और हॉस्पिटैलिटी' इकाई के अध्यक्ष बने। उन्होंने 1997 में कंपनी में प्रबंध निदेशक की जिम्मेदारी ली और इसके बाद 2003 में वे कंपनी के वाइस चेयरमैन बनाए गए। इसके अतिरिक्त वे 'कोटक महिंद्रा फाइनेंस लिमिटेड' के को-प्रमोटर बने और 2003 में उन्होंने इसे बैंक के रूप में तब्दील कर दिया। वर्ष 2002 में महिंद्रा एंड महिंद्रा समूह ने स्वदेशी तकनीकी से एसयूवी के नए मॉडल को 'स्कार्पियो' नाम से लांच किया। जिसने कंपनी को वैश्विक स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाने में सकारात्मक भूमिका निभाई है। महिंद्रा ने 'सत्यम् कंप्यूटर सर्विसेज' को 2009 में और 'रेवा इलेक्ट्रिक व्हीकल्स' और 'संग्योंग मोटर कंपनी' को भी 2010 में अधिगृहीत किया। इतना ही नहीं आनंद महिंद्रा ने रेनो, निसान और इंटरनेशनल ट्रक एंड इंजन कारपोरेशन कंपनी अमेरिका के सहयोग से स्थापित किया। आनंद आधुनिक सोच के उद्योगपति है। आनंद महिंद्रा ने अपनी मां इंदिरा महिंद्रा के नाम पर हार्वर्ड विश्वविद्यालय को 100 करोड़ डॉलर का योगदान दिया। उन्होंने हैदराबाद के पास महिंद्रा विश्वविद्यालय भी शुरुआत की है।

वे सोशल मीडिया पर बेहद एक्टिव हैं और राजनीतिक और समाजिक मुद्दों पर बेबाक राय रखते है, साथ ही वे नये इनोवेटर्स को आगे बढने में हर संभव मदद भी करते है। कोरोना काल में उन्होंने एक इलेक्ट्रिक ऑटो चलाने वाले युवक की क्रिएटिविटी को देखकर रिसर्च एंड डेवलपमेंट स्टाफ के तौर पर नौकरी ऑफर किया। भले ही आनंद लंबे लॉकडाउन के विरोधी थे, लेकिन कोरोना काल में उन्होंने अपनी पूरी सैलरी जरूरतमंदों के इलाज के लिए दान कर दिया है। 2004 में फ्रांस के राष्ट्रपति ने आनंद महिंद्रा को विशेष सम्मान 'ऑर्डर ऑफ मेरिट' से सम्मानित किया। वे 26 जनवरी 2020 को 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किए गए हैं।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	✓	आदर्शवादिता	✓
लोकप्रियता	✓	व्यावहारिकता	✓
दूरदर्शिता	✓	नेतृत्व क्षमता	✓
जागरूकता	✓	कल्याणकारी कार्य	✓
कार्यशैली	✓		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में आनंद महिंद्रा 34वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

88.4

स्वच्छता की सोच से कायम कर दी मिसाल

डॉ बिंदेश्वर पाठक

35

★★★★★

डॉक्टर बिंदेश्वर पाठक वो शख्सियत हैं जिनकी स्वच्छता की सोच ने भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में एक मिसाल कायम कर दी। करीब पांच दशक पहले उन्होंने एक ऐसा अभियान शुरू किया जो एक विशाल आंदोलन बन गया। स्वच्छ भारत अभियान के करीब तीन दशक पहले उन्होंने खुले में शौच, दूसरों से शौचालय साफ करवाने और प्रदूषण जैसी तमाम सामाजिक बुराइयों या और कमियों पर रोक लगाने का जनांदोलन खड़ा कर पूरी दुनिया को अचंभित कर दिया। समाज में सुधार आया और उनकी संस्था सुलभ इंटरनैशनल ने साफ-सफाई का एक मॉडल बनाया जिसने न सिर्फ स्वच्छता के क्षेत्र में, बल्कि रोजगार और आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में भी कामयाबी के झंडे गाड़े।

बिहार के वैशाली जिले के रामनगर ग्राम में 2 अप्रैल 1943 को एक ब्राह्मण परिवार में जन्मे बिंदेश्वर पाठक बचपन से ही कुछ अलग करने की सोच रखते थे। वे छोटी उम्र से ही बेहद संवेदनशील और सामाजिक कमियों के प्रति सजग थे और जातिवादी मानसिकता में बदलाव के प्रखर पक्षधर थे। जब उन्होंने वर्ष 1964 में पटना यूनिवर्सिटी से समाज शास्त्र में स्नातक कर लिया तो कुछ ही वर्षों बाद उन्हें 1968-69 में बिहार सरकार के गांधी जन्म शताब्दी समारोह समिति के भंगी मुक्ति विभाग में नौकरी करने का मौका मिला। उनकी कार्यकुशलता और वैज्ञानिक सोच को परखते हुए समिति के अधिकारियों ने उन्हें एक अलग ही कार्य सौंपा। अधिकारी चाहते थे कि दलितों को समाज की मुख्य धारा में शामिल करने के लिए सुरक्षित और सस्ती शौचालय तकनीक विकसित की जा सके।

पाठक ने तभी इसपर कार्य शुरू कर दिया, लेकिन बाद में उन्होंने देखा कि सरकारी व्यवस्था में कोई भी निर्णय लेने और उसपर अमल करने में बहुत समय लगता है तो उन्होंने खुद ही कुछ करने की ठानी। बिंदेश्वर पाठक ने वर्ष 1974 में 'पे एंड यूज' टॉयलेट की शुरुआत की। जल्दी ही उनका ये कॉन्सेप्ट पूरे देश और कई पड़ोसी देशों में लोकप्रिय हो गया। उन्होंने अपनी संस्था का नाम रखा 'सुलभ इंटरनैशनल'। 1980 में उन्होंने सुलभ इंटरनेशनल का नाम सुलभ इंटरनेशनल सोशल सर्विस ऑर्गनाइजेशन किया। सुलभ को अन्तर्राष्ट्रीय गौरव उस समय प्राप्त हुआ जब संयुक्त राष्ट्र संघ की आर्थिक एवं सामाजिक परिषद द्वारा सुलभ इंटरनेशनल को विशेष सलाहकार का दर्जा प्रदान किया गया। उन्हें 1991 में पद्म भूषण पुरस्कार से नवाजा गया। उनको एनर्जी ग्लोब, इंदिरा गांधी, स्टॉकहोम वॉटर जैसे तमाम पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। 2009 में इंटरनेशनल अक्षय ऊर्जा संगठन(आईआरईओ) का अक्षय उर्जा पुरस्कार भी मिला है।

FAME INDIA

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में डॉ. बिंदेश्वर पाठक 35वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

88.2

प्रभावशाली भारतीय

36

कोऑपरेटिव इम्पॉवरमेंट को सफल बनाने वाले शख्स

उदय शंकर अवस्थी

उत्तर प्रदेश के छोटे से गाँव में 12 जुलाई 1945 को स्वतंत्रता सेनानियों के परिवार में जन्मे उदय शंकर अवस्थी के पिता मात्र 2 वर्ष की आयु में चल बसे थे। विपरीत परिस्थितियों में भी इनकी माँ ने इन्हें पाला और बेहतर शिक्षा व उत्तम संस्कार दिये। प्राथमिक शिक्षा गाँव में, फिर आगे की पढ़ाई सेंट जॉर्ज स्कूल, कानपुर में फिर बनारस हिंदू युनिवर्सिटी (बीएचयू) से केमिकल इंजीनियरिंग किया। वर्ष 1966 में पढ़ाई पूरी की तब देश चीन के साथ युद्ध और भीषण अकाल के दौर से गुजर रहा था। तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के नारे "जय जवान–जय किसान" से प्रभावित होकर वे किसानों को सशक्त बनाने का संकल्प लेकर फर्टिलाइजर इंडस्ट्री में उतर गये। वर्ष 1966 में इन्होंने श्रीराम फर्टिलाइजर्स के कोटा स्थित मॉडर्न प्लांट से करीयर शुरु किया। विभिन्न कंपनियों में एक लंबा अनुभव प्राप्त करने के बाद वर्ष 1993 में उदय शंकर अवस्थी इफको के सीईओ और फिर मैनेजिंग डायरेक्टर बनाये गये।इंडियन किसान फर्टिलाइजर को-ऑपरेटिव लिमिटेड (इफको) के प्रबंध निदेशक डॉ. यू. एस. अवस्थी ने दिन रात की मेहनत और लगन से सफलता का वो मुकाम हासिल किया जो इफको से जुड़े करीब चालीस हजार कोऑपरेटिव सोसाइटियों और साढ़े पांच करोड़ किसानों के गर्व का कारण बना है। विगत 27 वर्षों में इन्होंने इफको को दुनिया की सबसे बड़ी फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव बना कर कॉर्पोरेट सेक्टर की बड़ी-बड़ी कम्पनियों के समकक्ष ला खड़ा किया है।

अपनी सुयोग्य कार्यशैली व दूरदर्शितापूर्ण योजनाओं के कारण कृषि जगत में विशिष्ट पहचान रखने वाले डॉ. यू. एस. अवस्थी को वर्ष 2006 में धाड़वाड़ कृषि विश्वविद्यालय ने पीएचडी से सम्मानित किया। उन्हें ग्रीनटेक सेफ्टी अवॉर्ड, बेस्ट सीईओ अवॉर्ड, डेविडसन फ्रेम अवॉर्ड जैसे दर्जनों विश्व-प्रसिद्ध पुरस्कारों व सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। हालांकि उनका एक मात्र लक्ष्य है – उन्नत किसान, सुदृढ़ भारत, लेकिन कोविड हमले के बाद इस दिशा में चुनौतियां बहुत बढ़ गयी है । दूरदर्शी योजनाकार डॉ. यू. एस. अवस्थी ने इस स्थिति से निपटने का पूरा खाका तैयार कर लिया है ।

डॉ. यू. एस. अवस्थी इंडियन फॉरमर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव यानी इफको के प्रमुख हैं। भारत में कोऑपरेटिव इम्पॉवरमेंट को सफल बनाने और इफको को इक्कीसवीं सदी के अनुरूप अत्याधुनिक बनाने का श्रेय उनकी कुशल प्रबंधन क्षमता और व्यवहारिक दृष्टिकोण को जाता है। देश भर के किसानों और कृषि उद्योग से जुड़े लोगों के लिये आज ईफको सबसे भरोसेमंद नाम है और इसका श्रेय डॉ. अवस्थी को ही जाता है। उन्हें फर्टिलाइजर मैन के नाम से भी जाना जाता है।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में उदय शंकर अवस्थी 36वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

88.1

विकास की परिभाषा गढ़ रहे हैं वरिष्ठ आईएएस

प्रवीर कृष्ण

37 ★★★★★

"एक अंदाजे बयां ही रंग बदल देता है, वरना दुनिया में कोई बात नयी बात नहीं"। आदिवासी क्षेत्रों के विकास को तीव्र गति प्रदान कर बड़े बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना- "प्रधानमंत्री वन-धन योजना" को सफल बनाने की जिम्मेवारी 1987 बैच के वरिष्ठ आईएएस अधिकारी प्रवीर कृष्ण के कंधों पर है। वर्तमान में वे ट्राइफेड के प्रबंध निदेशक हैं। ट्राइफेड भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण उपक्रम है, जो देश भर के आदिवासी, वनवासी और जनजातियों को आर्थिक तौर पर मजबूत बनाने के लिये क्रियाशील है।

यह संस्थान कुछ समय पहले एक सुप्त उपक्रम था, जिसे देश के भरोसे और सफलता के उदाहरण में बदलने का पूरा श्रेय कर्मठ और लगनशील आईएएस अधिकारी प्रवीर कृष्ण को जाता है। प्रवीर कृष्ण ने ट्राइफेड को मजबूत बनाने के साथ ही साबित कर दिया है कि जनकल्याण के लिये विकासवादी सोच जरूरी है। वे बचपन से देश के विकास में अपना योगदान देना चाहते थे, इसीलिए उन्होंने सिविल सेवा को अपना लक्ष्य बनाया। पटना विश्वविद्यालय से इकोनॉमिक्स में प्रथम श्रेणी से पीजी की डिग्री प्राप्त करने के बाद वे यूपीएससी की सिविल सेवा के लिये चुने गये और इन्हें मध्य प्रदेश कैडर मिला। पहली पोस्टिंग महासमुंद में एसडीएम के पद पर हुई।

प्रवीर कृष्ण की ख्याति "इमली कृष्ण" के तौर पर पूरे देश में तब फैली थी, जब बस्तर जिलाधिकारी के तौर पर उन्होंने इमली आंदोलन के दौरान आदिवासियों के 2400 स्वंय सहायता समूह को हर तरह से सक्षम बनाया, जो अत्यंत जन कल्याणकारी बना। वे जहां भी रहे उन्होने अपने कार्यों की एक अमिट छाप छोड़ी है। अंबिकापुर के जिलाधिकारी के रुप में उन्होने ग्रामीण विकास और शिक्षा के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य किया परिणामस्वरूप पिछड़ा हुआ अंबिकापुर जिला राज्य के बेहतर जिलों में शामिल हो गया। इसके अलावे प्रवीर कृष्ण ने प्रबंध निदेशक के पद पर रहते हुए मध्य प्रदेश सिविल सप्लाई कारपोरेशन को सक्षम संस्था बनाया, वे राज्य में स्वास्थ्य विभाग के प्रधान सचिव के तौर पर "संपूर्ण स्वास्थ्य योजना" को प्रदेश में लागू कर सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में बदलाव लाने में सफल रहे। हर पद पर उन्होने अपने कार्य की एक बड़ी छाप छोड़ी है। केंद्र सरकार में प्रतिनियुक्ति के दौरान भी वे जहां भी रहे वहाँ की कायाकल्प करके उन्होंने एकअच्छी पहचान कायम की। उन्होने 2008-09 में आईआईएम, बैंगलोर से निगोशिएशन स्ट्रेट्रजी एंड पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप की ट्रेनिंग भी ली है। अपनी दूरदर्शी, विकासपरक कार्यशैली, व्यक्तित्व, छवि और जन कल्याणकारी योजनाओं के कारण विशिष्ट पहचान रखने वाले वरिष्ठ आईएएस प्रवीर कृष्ण इकोनॉमिक पालिसी के अच्छा जानकार माने जाते है।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में प्रवीर कृष्ण 37वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

88.0

प्रभावशाली **भारतीय**

38

देश की शान हैं रॉकेट मैन

कैलासवटिवु शिवन

भारत के प्रसिद्ध अन्तरिक्ष वैज्ञानिक कैलासवटिवु शिवन एक ऐसे शख्स हैं जो वास्तविक अर्थों में गुदड़ी के लाल हैं। कॉलेज तक पैरों में चप्पल तक न पहन पाने वाले इस कर्मयोगी के कदमों में आज पूरा ब्रह्मांड है। वर्तमान में वे इसरो के अध्यक्ष हैं। इसके पहले वे विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र और लिक्विड प्रोपल्शन सिस्टम सेंटर के निदेशक रह चुके हैं। मजबूत इरादों के शिवन उस वक्त सुर्खियों में आये जब चंद्रयान-2 मिशन पूरा ना हो पाया, वे भावुक हो गये और उस वक्त प्रधानमंत्री ने उन्हें ढांढस बंधाया। उत्साह के धनी शिवन इसके बाद और मजबूती के साथ फिर से मिशन को सफल बनाने की कोशिश में जुट गये।

के. शिवन का जन्म एक साधारण किसान परिवार में 14 अप्रैल 1957 को तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में नागरकोइल के पास मेला सरक्कलविलाई में हुआ। उनके पिता किसान थे , शिवन को भी बचपन में अपने पिता का हाथ बंटाने के लिए आम बागान में काम-काज करना पड़ा था। जब उनका चयन महंगे इंजीनियरिंग कॉलेज के लिए हुआ तो परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण वे वहां एडमिशन नहीं ले पाये और मजबूरन पास के कॉलेज से ही गणित में बीएससी करना पड़ा। परन्तु जब उन्हें बीएससी में मैथ्स में 100 फीसदी अंक मिले, तो उनकी लगन और बढ़िया रिजल्ट को देखते हुए उनके पिता ने उन्हें बीटेक कराने के लिए अपने पास मौजूद खेत का कुछ हिस्सा बेचकर मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एडमिशन कराया। उन्हें एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में दाखिला मिला और बीटेक की डिग्री लेने के बाद के.शिवन ने आईआईएससी यानी इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एरोस्पेस साइंस से स्नातकोत्तर की पढ़ाई की। उन्होंने आईआईटी बॉम्बे से ऐरोस्पेस में पीएचडी की डिग्री भी हासिल की है।

मेहनती शिवन ने 1982 में इसरो के विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर को ज्वाइन किया। उन्होंने साइक्रोजेनिक इंजन, पीएसएलवी, जीएसएलवी और रियूजेबल लॉन्च व्हीकल कार्यक्रमों में भी योगदान दिया है। इसी कारण से उन्हें इसरो का 'रॉकेट मैन' भी कहा जाता है। 1 जून 2015 को उन्हें विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर का डायरेक्टर बनाया गया। 15 फरवरी 2017 को भारत ने एक साथ 104 सैटेलाइट्स को प्रक्षेपित किया गया था, शिवन ने इस मिशन में अहम भूमिका निभायी थी। यह मिशन इसरो का विश्व रिकॉर्ड भी है। उनके स्किल और लीडरशिप को देखते हुए 2018 में उन्हें इसरो का चीफ बनाया गया। के. शिवन इसरो के प्रमुख बने लेकिन शालीनता को कभी नहीं छोड़ी। हर कामयाबी को टीम के साथ शेयर किया। उन्हें 2007 में इसरो मेरिट अवॉर्ड मिला। इसके बाद 2019 में के. शिवन को डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवॉर्ड से नवाजा गया। शिवन को 2014 में सत्यभामा यूनिवर्सिटी, चेन्नई से डॉक्टर ऑफ साइंस की उपाधि दी गयी। 2020 का एरोनॉटिक्स के क्षेत्र में दिया जाने वाला सर्वोच्च वॉन कार्मन पुरस्कार भी के.शिवन को देने की घोषणा की गयी है जिसे मार्च 2021 को फ्रांस के पेरिस में दिया जायेगा।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में कैलासवटिवु सिवन 38वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

87.6

39

सौम्य और जानकार चिकित्सक हैं

डॉ. रणदीप गुलेरिया

देश के सबसे प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थान ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के सबसे जानकार माने जाने वाले डायरेक्टर डॉक्टर रणदीप गुलेरिया एक बेहद सौम्य और साहसी चिकित्सक हैं। कहा जा रहा है कि उनके नेतृत्व में एम्स सही मायनों में अस्पताल के साथ-साथ शोध संस्थान भी बना है। उन्होंने कई दवाओं और विकृतियों पर विस्तृत शोध करवाया है जिनमें बहुचर्चित कोरोना वैक्सीन भी शामिल है। डॉ. गुलेरिया शुरुआत से ही विनम्र और मरीजों को लेकर बेहद संवेदशील रहे हैं। मेडिसिन पर उनकी गजब की पकड़ है। डॉ. गुलेरिया के पिता जगदेव सिंह गुलेरिया एम्स के डीन रह चुके हैं।

हिमाचल प्रदेश में 5 अप्रैल 1959 को जन्मे डॉ. रणदीप गुलेरिया ने शिमला के आईजीएमसी से मेडिसिन में एमबीबीएस की डिग्री हासिल की। इसके बाद उन्होंने चंडीगढ़ के पीजीआईएईआर से जेनरल मेडिसिन में एमडी और पल्मोनरी मेडिसिन में डीएम की डिग्री हासिल की। डॉ. गुलेरिया ने 1992 में बतौर असिस्टेंट प्रोफेसर डिपार्टमेंट ऑफ मेडिसिन एम्स में ज्वाइन किया। इसके बाद उन्हें पल्मोनरी मेडिसिन एंड स्लीप डिसऑर्डर डिपार्टमेंट में प्रोफेसर और डिपार्टमेंट का हेड बना दिया गया । श्वास संबंधित बीमारियों के इलाज में उनकी काबिलियत की कोई सानी नहीं है। रेस्पिरेट्री मसल फंक्शन, लंग्स कैंसर, अस्थमा, सीओपीडी में उन्होंने लंबे समय तक योगदान दिया है, और उनके अब तक 400 से अधिक नेशनल और इंटरनेशनल पब्लिकेशंस में रिसर्च प्रकाशित हो चुके हैं। वे 1998 से अटल बिहारी वाजपेयी के पर्सनल फिजिशियन थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता वाली कैबिनेट की नियुक्ति संबंधी समिति ने उन्हें पांच साल के लिए एम्स का निदेशक नियुक्त किया है। इसके अलावा भारत में नयी बीमारियों का पता लगाने और नेशनल लेवल पर एंटीबायोटिक के रेसिस्टेंस को कंट्रोल करने वाली कमेटी के मेंबर भी हैं। कोरोना काल में उनकी जिम्मेदारी काफी बढ़ गयी है। डॉ. रणदीप गुलेरिया कोरोना के रोकथाम के लिए केंद्र और राज्य सरकारों को अहम सुझाव दे रहे हैं। एम्स, नई दिल्ली के निदेशक डॉ. रणदीप गुलेरिया अपने रिसर्च वर्क के लिए मशहूर है। 298 रिसर्च और 36 किताबों के लिए उन्हें राज नंदा ट्रस्ट और रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशियन लंदन की ओर से फेलोशिप दी जा चुकी है। वे रेस्पिरेट्री और कार्डियोवैस्कुलर कंडिशन में संबंध तलाशने के अलावा एयर क्वालिटी पर स्टडी कर रहे हैं। इसके अलावा वे इंटरनेशनल एटॉमिक एनर्जी एजेंसी वियना में रेडिएशन प्रोटेक्शन पर बतौर कंसल्टेंट काम कर रहे हैं। डॉ. रणदीप गुलेरिया 2014 में डॉ. बी सी राय नेशनल अवॉर्ड से सम्मानित किये गये थे । वर्ष 2015 में सरकार ने डॉ. रणदीप गुलेरिया को पद्मश्री से नवाजा था।

FAME INDIA

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में डॉ. रणदीप गुलेरिया 39वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

37.2

प्रभावशाली भारतीय

40

जैव प्रौद्योगिकी रिसर्च को नई दिशा देती डॉ. रेणु स्वरूप

देश की मशहूर साइंटिस्ट डॉ. रेणु स्वरूप जैव प्रौद्योगिकी विभाग की सचिव हैं। वैसे तो वे अनेक खोजों से जुड़ी हैं, लेकिन हाल के महीनों में कोरोना संक्रमण से जारी हुई जंग में वे भारतीय टीम की एक अहम सदस्य बन गयी हैं। वे भारत सरकार की साइंस एंड टेक्नोलॉजी मिनिस्ट्री में डिपार्टमेंट ऑफ बायोटेक की प्रमुख हैं और देश के सबसे बड़े माइक्रोबियल रिसोर्स सेंटर की स्थापना का श्रेय उन्हें ही जाता है। डॉ. रेणु स्वरूप का मानना है कि जैव प्रौद्योगिकी विज्ञान का एक ऐसा क्षेत्र है जो मानवीय जीवन को निरंतर प्रभावित करती है। भारत ने जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कई उपलब्धियां हासिल की है और इसे आगे बढ़ाने के रिसर्च पर जोर देते रहना होगा।

डॉ. रेणु स्वरूप ने जेनेटिक्स और प्लांट ब्रीडिंग में पीएचडी की है। उन्होंने पोस्ट डॉक़्टरल वर्क जॉन इन्स सेंटर, नॉरविच यूके से किया है। वे 1989 में भारत लौटीं। इसके बाद उन्हें भारत सरकार के डिपार्टमेंट ऑफ बायो-टेक्नोलॉजी में साइंस मैनेजर का दायित्व मिला। डॉ. रेणु स्वरूप बायो-टेक्नोलॉजी में रिसर्च को बढ़ावा देने में विश्वास रखती हैं। वे युवा साइंटिस्टों को आगे लाने के लिए हमेशा प्रयासरत रहती हैं। हाल ही में उनकी कोशिशों की वजह से राजस्थान में जैव प्रौद्योगिकी इनक्यूबेशन सेंटर खोला गया है। जिससे युवा साइंटिस्ट को रिसर्च और रोजगार दोनों के बेहतर अवसर प्राप्त होंगे। डॉ. रेणु स्वरूप ने महिला रिसर्चर्स को बढ़ावा देने के साथ महिला किसानों को बायो-टेक्नोलॉजी की मदद से सशक्त बनाने के अनेकों प्रयास किए हैं। इतना ही नहीं उन्होंने महिला वैज्ञानिकों को समाज के प्रति अपने अनुसंधान के लिए प्रोत्साहित करने के लिए एक लाख तक के अवॉर्ड का ऐलान किया है।

जैव प्रौद्योगिकी विभाग की सचिव डॉ. रेणु स्वरूप बायो साइंस से बायो-इकोनॉमी की ओर लगातार आगे बढ़ने में भी अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। डॉ. रेणु स्वरूप स्वभाव से गंभीर महिला हैं। उन्होंने जैव-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपने तीन दशक के अनुभव से देश को सदैव लाभान्वित किया है। वे महिलाओं के लिए विकासशील देशों की साइंस संगठन की भी सदस्य हैं। अपने उत्कृष्ट कामों के लिए वे वर्ष 2012 में 'बायोस्पेक्ट्रम पर्सन ऑफ द ईयर' अवार्ड पा चुकी है। इसके साथ ही वे एग्रीकल्चर रिसर्च अवार्ड 2019 और साथ ही बी डब्ल्यू सबसे प्रभावशाली महिला का सम्मान भी पा चुकी है। 2020 में नेशनल सेंटर फॉर सेल साइंस ने नयी माइक्रोबियल प्रजाति की खोज की जिसका नाम रेणु स्वरूप के सम्मान में नैट्रियलबा स्वारूप रखा गया है। हालांकि वे इसी साल अवकाश प्राप्त करने वाली थीं, लेकिन उनके उत्कृष्ट कार्यों को देखते हुए केंद्र सरकार ने अप्रैल में उनके कार्यकाल को एक साल के लिए बढ़ा दिया है।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में डॉ. रेणु स्वरूप 40वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

57.22

भारत की सबसे बड़ी फार्मा कंपनी के चेयरमैन

दिलीप शांघवी

दुनिया के सबसे बड़े दवा कारोबारीयों में शामिल दिलीप शांघवी एक भारतीय अरबपति व्यापारी है, जो देश के सबसे अमीर लोगों में शामिल हैं। उन्होंने दवा निर्माण के क्षेत्र में अग्रणी कंपनी सन फार्मास्यूटिकल्स की स्थापना की। यह कंपनी दुनिया की चौथी सबसे बड़ी स्पेशियलिटी जेनरिक दवा निर्माता है और भारत की सबसे बड़ी फार्मा कंपनियों में शामिल है। उनका विवाह विभा शांघवी से हुआ। उनके दोनों बच्चे आलोक और विधी सूर्य फार्मास्यूटिकल्स में उनके साथ काम करते हैं। दिलीप शांघवी एक जैन परिवार से हैं, गुजरात के छोटे से शहर अमरेली में 1 अक्टूबर 1955 को उनका जन्म शांतिलाल शांघवी और कुमुद शांघवी के घर हुआ।

दिलीप शांघवी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बैचलर ऑफ कॉमर्स की डिग्री हासिल की। उन्होंने अपना बचपन और कॉलेज का जीवन माता-पिता के साथ कलकत्ता के बुर्राबाजार इलाके में बिताया। उन्होंने जेजे अजमेरा हाई स्कूल से स्कूली शिक्षा प्राप्त की और भवानीपुर एजुकेशन सोसाइटी कॉलेज से स्नातक किया। कोलकाता में उनके पिता का थोक जेनेरिक दवाओं का कारोबार था। शुरुआत में उन्होंने अपने पिता को उनके व्यापार में मदद की। इसी दौरान उन्होंने दूसरों की दवाएं बेचने की बजाय अपनी खुद की दवाओं के निर्माण के बारे में सोचा। शांघवी ने वर्ष 1982 में वापी में सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज की शुरुआत 10,000 रुपये की पूंजी से की थी, और उनके पास सिर्फ मनोरोग की एक दवा थी। वर्ष 1997 में, सन फार्मा ने काराको फार्मा का अधिग्रहण किया, जो एक घाटे में चल रही अमेरिकी कंपनी थी। इस सौदे का उद्देश्य संयुक्त राज्य अमेरिका में सन फार्मा की पहुंच बनाना था।

उन्होंने अमेरिका में बढ़िया कारोबार किया और वर्ष 2007 में इज़राइल की टारो फार्मा का भी अधिग्रहण किया। शांघवी ने वर्ष 2012 में एक और अमेरिकी- इजरायली कंपनी टेवा फार्मा का भी अधिग्रहण किया। अप्रैल 2014 में सन फार्मा ने रैनबैक्सी, और उसके प्रमुख हिस्सेदार डाइची सैंक्यो के साथ समझौता किया। यह सौदा मार्च 2015 में फाइनल हो गया और उसने सन फार्मा को भारत की सबसे बड़ी दवा कंपनी बना दिया। जनवरी 2018 में, भारत सरकार ने शांघवी को भारतीय रिज़र्व बैंक की 21-सदस्यीय केंद्रीय बोर्ड समिति में नियुक्त किया। वह आईआईटी बॉम्बे में गवर्नर्स बोर्ड के अध्यक्ष हैं। उन्हें 2017 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में रोड्स छात्रवृत्ति कार्यक्रम का ट्रस्टी बनाया गया था। 2019 में, पत्रकार सोमा दास ने दिलीप शांघवी की पहली और एकमात्र जीवनी द रिलेटेंट बिलियनियर लिखी। पेंगुइन रैंडम हाउस द्वारा प्रकाशित, पुस्तक को नवंबर 2019 में बेस्ट बिजनेस बुक श्रेणी में टाटा लिटरेचर अवार्ड के लिए नामांकित किया गया था। भारत सरकार ने उन्हें 2016 में पद्म श्री से सम्मानित किया। उन्हें एक प्रतिष्ठित पत्रिका ने 2017 की सूची में सबसे शक्तिशाली लोगों में आठवें स्थान पर रखा था। फोर्ब्स के अनुसार, अक्टूबर 2019 तक, वे भारत में 12 वें सबसे अमीर व्यक्ति रहे है।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में दिलीप शांघवी 41वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

57.22

प्रभावशाली भारतीय

42

भारतीय फिल्म व संगीत जगत के सफल कारोबारी

भूषण कुमार

भारतीय सिनेमा और मनोरंजन जगत में टी सीरीज एक ऐसा नाम है जिसके बिना अब इसकी कल्पना भी अधूरी है। इस विश्वविख्यात कंपनी के चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर भूषण कुमार एक फिल्म निर्माता-निर्देशक और म्यूजिक प्रोड्यूसर के तौर पर बॉलीवुड में मशहूर हैं। वे कम उम्र में ही बुलंदियों पर पहुंच गये हैं। उनका परिवार संगीत के क्षेत्र में पहले से ही मशहूर रहा है। भूषण कुमार हिंदी सिनेमा के मशहूर निर्माता और टी सीरीज के संस्थापक गुलशन कुमार के बेटे हैं।

भूषण कुमार का जन्म 27 नवंबर 1977 को दिल्ली में हुआ था। 1997 में पिता गुलशन कुमार की हत्या के बाद भूषण ने टी सीरीज का कार्यभार संभाला। भूषण कुमार ने अचानक आयी जिम्मेदारी को बहुत ही मजबूती के साथ निभाया। उन्होंने टी- सीरीज को आगे बढ़ाने के लिए पूरी शिद्दत के साथ काम की। भूषण कुमार ने कंपनी के कारोबार को आगे बढाने के साथ ही मोबाइल मीडिया, डिजिटल, सैटेलाइट और एफएम रेडियो सहित फिल्म निर्माण के लिए कारगर नए इनोवेशन के जरिए अपने कारोबार को काफी तेजी से बढाया और अपनी अलग पहचान बनाई। म्युजिक इंडस्ट्री में अहम योगदान के लिए और भारतीय संगीत को विदेशों में लोकप्रिय बनाने के लिए भारत सरकार ने उन्हें इलेक्ट्रॉनिक्स एंड सॉफ्यवेयर निर्यात संवर्धन परिषद् में शामिल कर सम्मानित किया है। भूषण कुमार ने कई फिल्में प्रोड्यूस भी की हैं जो रुपहले पर्दे पर खासे कामयाब रहे।

वे फिल्म और संगीत के क्षेत्र में कुछ नया करने के लिए जाने जाते हैं। भारतीय संगीत उद्योग में नयी प्रतिभाओं कों प्रोत्साहित करने में हमेशा आगे रहते हैं। एक टीम के रूप में, टी-सीरीज को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचाने के मामले में वे तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। वे बेहद मिलनासार स्वभाव के व्यक्ति हैं और मेहनत को सफलता का मूलमंत्र मानते हैं। भूषण टीम को साथ लेकर चलने में विश्वास रखते हैं और वे देश दुनिया में अपनी फिल्म और संगीत को उपलब्ध कराने के लिए तेजी से कार्य कर रहे हैं। भूषण को किताब पढ़ने और यात्रा का शौक है। उनकी कंपनी को 2016 में फिल्मफेयर अवॉर्ड्स में फिल्म "रॉय" के लिए सर्वश्रेष्ठ संगीत एल्बम पुरस्कार जबकि फिल्मफेयर अवॉर्ड्स 2018 में "हिंदी मीडियम" के लिए सर्वश्रेष्ठ फिल्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारतीय सिनेमा में अपने योगदान के चलते भूषण कुमार ब्लूमबर्ग इनोवेटर्स सूची में भी जगह बनाने में कामयाब हो चुके हैं। डिजिटल डोमेन में टी सीरीज की उपलब्धियों, दुनिया के सबसे बड़े यू ट्यूब चैनल के तौर पर है और भूषण कुमार के नेतृत्व वाली टी सीरीज से किसी का भी जुड़ना देश में सफलता की गारंटी माना जाता है।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में भूषण कुमार 42वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

87.1

43 ★★★★★

विशाल बिजनेस समूह के निर्माणकर्ता

अजय पीरामल

अजय पीरामल एक भारतीय उद्योगपति और पीरामल समूह के अध्यक्ष हैं, वे फार्मास्युटिकल , वित्तीय सेवाओं , रियल एस्टेट, हेल्थकेयर एनालिटिक्स और ग्लास पैकेजिंग आदि क्षेत्रों के बड़े कारोबारी ग्रुप के मुखिया हैं। भारत के अलावा, पीरामल समूह की अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोपीय संघ, जापान, एशिया-प्रशांत और दक्षिण एशिया सहित 30 से अधिक देशों में मौजूदगी है, इसके प्रोडक्टस की बिक्री 100 से अधिक बाजारों में हो रही है। अजय पीरामल का जन्म 3 अगस्त 1955 को राजस्थान में गोपीकिशन पीरामल और ललिता पीरामल के यहाँ हुआ था। 1977 में, 22 साल की उम्र में, पीरामल ने अपने परिवार के कपड़ा व्यवसाय से अपने बिजनेस कैरियर की शुरुआत की, जिसकी स्थापना 1934 में उनके दादा पीरामल चतुर्भुज ने की थी।

अजय पीरामल के पिता का 1979 में अचानक निधन हो गया, और पांच साल बाद उन्होंने बड़े भाई को कैंसर से खो दिया, जिससे पूरे व्यवसाय की जिम्मेदारी उनके कंधों पर आ गयी। अजय पीरामल के नेतृत्व में एक टेक्सटाइल कंपनी 10 बिलियन अमेरिकी डॉलर वाले विशाल ग्रुप में बदल गई ।उन्होंने पीरामल ग्लास लिमिटेड को 1984 में पीरामल ग्रुप में अधिगृहीत किया और फिर 1990 में इसका विलय पीरामल हेल्थकेयर लिमिटेड (तत्कालीन निकोलस पिरामल इंडिया लिमिटेड) के साथ कर दिया। 1982 में उनकी टेक्सटाइल कंपनी में कुछ परेशानी आ गई। उस समय उनके टेक्सटाइल कंपनी में 7,000 कर्मचारी थे। 1986 में पीरामल ने श्रमिकों के साथ एक बैठक की, जिसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा। 1988 में, उन्होंने एक ऑस्ट्रेलियाई बहुराष्ट्रीय निगम निकोलस लैबोरेट्रीज को खरीदा , जो उस समय फ़ाइजर और ग्लैक्सो जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ प्रतिस्पर्धा करती थी । वर्ष 2010 में, कंपनी ने एबॉट लेबोरेटरीज का डील फाइनल किया ।उसके बाद अजय पीरामल के नेतृत्व में पीरामल ग्रुप की प्रमुख कंपनी, पीरामल इंटरप्राइजेज फार्मास्यूटिकल्स, फाइनेंशियल बिजनेस और हेल्थकेयर इनसाइट्स एंड एनालिटिक्स जैसे प्रमुख व्यवसाय में धीरे धीरे अग्रणी बन गई ।

फार्मा के फिल्ड में अजय पीरामल की कंपनी ओवर-द-काउंटर (ओटीसी) कंज्यूमर गुड्स , वर्ल्ड लेवल जेनरिक, कांट्रेक्ट बेस्ड प्रोडक्शन और इंपोर्टेंट केयर बिजनेस पर फोकस्ड है, वहीं फाइनेंस बिजनेस में उनकी पीरामल कैपिटल एंड हाउसिंग फाइनेंस और श्रीराम ग्रुप साझेदारी में अल्टरनेटिव एसेट्स मैनेजमेंट और इंवेस्टमेंट के व्यापार में शामिल है। पीरामल कैपिटल एंड हाउसिंग फाइनेंस राष्ट्रीय आवास बैंक (एनएचबी) के साथ हाउसिंग फाइनेंस कंपनी के रूप में रजिस्टर्ड है और विभिन्न वित्तीय सेवाओं के व्यवसायों में संलग्न है। अजय पीरामल की पीरामल एंटरप्राइजेज का बाजार पूंजीकरण पिछले सात वर्षों में चार गुना बढ़ा है ।पीईएल बीएसई लिमिटेड और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड में सूचीबद्ध है। अजय पीरामल के बेटे आनंद ने पीरामल रियल्टी प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना की है और दोनो के नेतृत्व में पीरामल ग्रुप दिन दुगुनी तरक्की के राह पर बढता जा रहा है।

FAME INDIA

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में अजय पीरामल 43वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

86.7

प्रभावशाली भारतीय

44

भारतीय डिजिटल पेमेंट के शहंशाह
विजय शेखर शर्मा

पेटीएम को इस मुकाम तक पहुंचाने में सबसे प्रमुख भूमिका रही है कंपनी के संस्थापक चेयरमैन विजय शेखर शर्मा की। वर्ष 2001 में महज 2 लाख रुपए लगाकर कंपनी की शुरुआत करने से लेकर करोड़ों के मालिक बनने तक के सफर की कहानी बेहद दिलचस्प है।

8 जुलाई 1978 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में जन्मे विजय शेखर शर्मा की शुरुआती शिक्षा हिंदी मीडियम स्कूल में ही हुई। उन्होंने दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग से बीटेक की डिग्री हासिल की और इसके बाद उन्होंने वन 97 कम्युनिकेशन की बुनियाद रखी जो कि आगे चलकर पेटीएम की पेरेंट कंपनी बनी। उनकी इच्छा बीटेक करने के बाद हॉर्वर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ने की थी। वे वहां नहीं पढ़ पाये लेकिन उनकी सफलता की कहानी आज हॉर्वर्ड बिजनेस स्कूल में केस स्टडीज़ बन गयी है। मेहनत से कामयाबी के शिखर पर पहुंचे विजय शेखर शर्मा के पास एक समय खाने तक के पैसे नही होते थे। परन्तु उन तमाम दिक्कतों के बीच उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और दिन-रात मेहनत करके एक लाख करोड़ की कंपनी स्थापित कर दी। वे फोर्ब्स की लिस्ट में शामिल सबसे युवा अरबपति रह चुके हैं। पेटीएम की कामयाबी को देखते हुए रतन टाटा सहित कई ग्लोबल निवेशकों ने इसमें निवेश किया हैं । विजय शेखर की पेटीएम को नोटबंदी के बाद डिजिटल पेमेंट मोड का बहुत फायदा हुआ। पेटीएम का मुख्यालय नोएडा में है और मध्य-पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया, अफ्रीका और यूरोप में भी इसके दफ्तर हैं। विजय शेखर की सोच बेहतरीन है। मेहनत और लगन के साथ उन्होंने कम आयु में इंडियासाइट डॉट नेट बनाया जिससे उन्हें महज दो साल में एक लाख डॉलर मिल गये। इतना ही नहीं, उन्होंने अपनी पहली कंपनी एक्सएस कोर को एक दोस्त के साथ मिलकर शुरू की थी। इसका दफ्तर हॉस्टल का कमरा था और फोन नंबर कॉलेज के बाहर एक दुकानदार का था। मतलब साफ है कि अपनी सोच की वजह से उन्होंने साधनों की कमी को कभी बाधा नहीं बनने दिया। उनकी कामयाबी को देखते हुए यूपी सरकार ने उन्हें यश भारती अवार्ड से भी सम्मानित किया है।

देश में बैंकिंग और ई-कॉमर्स के क्षेत्र में तहलका मचा देने वाला पेटीएम कम से कम शहरों में तो एटीएम का पर्याय बन चुका है। सब्जी वाले, रिक्शा वाले और फुटपाथ पर पान-गुटखा बेचने वाले से लेकर बड़े-बड़े माल्स और शोरुम तक पेटीएम से पैसे का ट्रांजैक्शन कर रहे हैं। बिजली-पानी के बिल, टेलीफोन के बिल, डीटीएच रिचार्ज से लेकर गाड़ी में पेट्रोल डलवाने तक इसने अपनी पैठ बना ली है। दुनिया की सबसे मशहूर ई कॉमर्स कंपनियों ने पेटीएम में भारी पूंजी निवेश किया है और आज ये देश की सबसे बड़ी ई कॉमर्स कंपनी के तौर पर स्थापित हो रही है।

FAME INDIA

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में विजय शेखर शर्मा 44वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

86.3

वायरस पर रोक लगाने की अहम योजनाकार

डॉ. निवेदिता गुप्ता

कोरोना से जंग में देश की अहम नीतिकारों में से एक डॉ निवेदिता गुप्ता को बेशक कम लोग जानते हों, लेकिन उनके कार्य करोड़ों देशवासियों का जीवन बचाने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। वे आईसीएमआर की वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं और फिलहाल कोरोना वायरस महामारी पर स्वास्थ्य संबंधी अनुसंधान विभाग की प्रभारी हैं। उनकी प्राथमिक जिम्मेदारी है भारत में परीक्षण और उपचार प्रोटोकॉल का निर्धारण करना और उनके ही प्रयासों का नतीजा है कि भारत में एक दिन में कई लाख लोगों की जांच की जा रही है। उन्हें एक बेहद मेहनती और समझदारी से काम करने वाली वैज्ञानिक माना जाता है।

दिल्ली की लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज से वर्ष 1994-1999 बैच में एमबीबीएस की डिग्री हासिल करने के बाद डॉ. निवेदिता गुप्ता ने वर्ष 2001 से 2004 के बीच जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी से आणविक मेडिसीन में पीएचडी की है। उन्होंने 2005 में इंडियन कॉउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च ज्वाइन किया। वे वायरल इंफेक्शन और वैक्सीन प्रीवेंटेबल डिजीज में रिसर्च कोऑर्डिनेटर हैं। वे पिछले साल केरल में निपाह वायरस के प्रकोप की जांच और रोकथाम में शामिल प्राथमिक वैज्ञानिक भी थीं, लिहाजा उन्हें जानलेवा कोरोना बीमारी पर नियंत्रण की अहम जिम्मेदारी भी सौपीं गयी। 2009 में इन्फ्लूएंजा के प्रकोप के बाद स्थापित लैब को वायरस अनुसंधान और डायग्नोस्टिक प्रयोगशाला बनाने में उनकी भूमिका अहम रही है। उन्होंने एंटरोवायरस, अर्बोविरस (डेंगू, चिकनगुनिया, जापानी एन्सेफलाइटिस और जीका), इन्फ्लूएंजा, खसरा और रूबेला की रोकथाम में अहम भूमिका निभायी है और कई सफल अभियानों का नेतृत्त्व किया है।

वे भारत के विभिन्न हिस्सों में तीव्र एन्सेफलाइटिस सिंड्रोम के लिए एटिओलॉजी को डिक्रिप्ट करने और बड़े पैमाने पर रोकथाम के प्रबंधन की कमान भी सफलतापूर्वक संभाल चुकी हैं। डॉ. निवेदिता गुप्ता एक बेहद संवेदनशील महिला हैं, लेकिन कोविड के दौर में उन्होंने मजबूत इरादों के साथ अपना कार्य किया है। वे वायरस अनुसंधान और डायग्नोस्टिक प्रयोगशाला नेटवर्क की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वे देश भर में कोविड-19 की जांच और परीक्षण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण शख्सियत हैं। काम के प्रति उनकी लगन इतनी है कि वो कई दिनों तक जांच को खत्म करने के लिए कार्यालय में ही रहती है ताकि उनकी टीम का मनोबल ऊँचा रहे।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में डॉ. निवेदिता गुप्ता 45वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

36.2

प्रभावशाली भारतीय

46

हौसलों की ऊँची उड़ान भरने वाले उद्योगपति
पकंज भाई पटेल

कैडिला हेल्थकेयर के मालिक और फार्मा क्षेत्र के मशहूर उद्योगपति पंकज रमण भाई पटेल आज किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। 1995 में अपनी पुश्तैनी कंपनी को नया जीवन देकर दुनिया भर में फैलाने वाले इस कारोबारी ने साबित कर दिखाया कि अगर सपूत के हाथों कारोबार सौंपा जाये तो कई गुना बढ़ जाता है। 1995 में कैडिला लैबोरेट्रीज के विभाजन के बाद, ज़ायडस ग्रुप के तहत कैडिला हेल्थकेयर का नाम अस्तित्व में आया। तब महज 200 करोड़ रुपये का ये समूह 15 साल की छोटी सी अवधि में 3700 करोड़ रुपये तक पहुंच गया और देश का पांचवा सबसे बड़ा फार्मा समूह बन गया।

पंकज भाई पटेल का जन्म एक कारोबारी परिवार में मार्च 1953 को हुआ था। बचपन से ही वे अपने पिता रमणजी भाई और उनके पार्टनर इंद्रवदन मोदी की कंपनी कैडिला लैबोरेट्रीज में बनती हुई दवाएं देखने जाया करते थे। शुरू से ही फार्मा के प्रति रुझान था। उन्होंने गुजरात यूनिवर्सिटी से बैचलर ऑफ फार्मेसी और मास्टर ऑफ फार्मेसी की पढ़ाई की। इसके बाद उन्होंने मुंबई यूनिवर्सिटी से साइंस और कानून की पढ़ाई की। 1976 में उन्होंने अपने पिता की कंपनी में हाथ बंटाना शुरू किया। पंकज भाई ने अपने पार्टनर से अलगाव के बाद कंपनी में जान फूंकने के लिए पुरजोर मेहनत की। आज पंकज भाई की कंपनी तीन सौ से ज्यादा दवाइयां बनाती है। स्वाइन फ्लू जैसी जानलेवा बीमारी के लिए पहला टीका कैडिला कंपनी ने ही बनाया था। इतना ही नहीं पंकज भाई का बिजनेस जापान, फ्रांस समेत दुनिया के 70 से ज्यादा देशों में फैला हुआ है, जिसमें ग्यारह हजार से ज्यादा कर्मचारी काम कर रहे है। साथ ही गुजरात में जायडस के कई हॉस्पिटल भी हैं।

पंकज भाई पटेल ने विदेश की कई कंपनियों को खरीदा है। उन्होंने रिसर्च पर काफी जोर दिया है और आगे वे भारत को फार्मा रिसर्च का हब बनाने के लिए प्रयासरत हैं। उनकी कंपनी में एक हजार से ज्यादा भारतीय साइंटिस्ट अलग-अलग दवाओं पर रिसर्च करते हैं। इसी वजह से उन्हें डीसीजीआई की ओर से कोरोना के वैक्सीन के ह्यूमन ट्रायल की भी अनुमति दी है। पंकज भाई की कंपनी जायडस ने कोरोना का ह्यूमन ट्रायल शुरु कर दिया है। पंकज भाई का मानना है कि मानव हित में वैक्सीन जल्द ही आयेगा। पंकज पटेल ऊँची उड़ान भरने के शौकीन हैं। 2012 में उन्होंने सिंटेक्स इंडस्ट्रीज के चेयरमैन दिनेश पटेल से जुड़ कर एक एविएशन कंपनी शुरू की। 2018 में उन्होंने प्राइवेट जेट भी खरीदा है। वे आईआईएम उदयपुर और आईआईटी भुवनेश्वर के बोर्ड के मेंबर हैं। सामाजिक सरोकार के कामों में लगे रहने वाले पंकज भाई पटेल 2017 में फिक्की के अध्यक्ष भी थे। वे गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स से जुड़े हैं। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र से आने वाली प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने की दिशा में भी काफी कार्य किया है।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में पंकज भाई पटेल 46वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

35.1

प्रभावशाली भारतीय

47

भारत के सवाल पूछते

अर्णब गोस्वामी

अर्णब गोस्वामी नाम है एक ऐसी शख्शियत का जिसे लोग 'इंडिया का सवाल' के नाम से जानने लगे हैं। वे रिपब्लिक मीडिया नेटवर्क के मैनेजिंग डायरेक्टर एंड एडिटर-इन-चीफ हैं और एक दमदार एंकर के तौर पर जाने जाते हैं। बदलते परिवेश में उन्होंने ऑडियो विजुअल मीडिया की परिभाषा ही बदल दी है। उनका सवाल "इंडिया वांट्स टू नो" या "पूछता है भारत" एक राष्ट्रीय नारा बन गया है। पहले जहां टीवी एंकरों को शान्ति से अपनी बातें को रखने के लिए जाना जाता था लेकिन अब अर्णब गोस्वामी ने उसे आक्रमक बना दिया है।

अर्णब गोस्वामी का जन्म असम के गुवाहाटी में 9 अक्टूबर 1973 में हुआ था। उनके पिता मनोरंजन गोस्वामी सेवानिवृत कर्नल हैं। उनके दादा रजनीकांत गोस्वामी वकील और स्वतंत्रता सेनानी थे। उनके नाना गौरी शंकर भट्टाचार्य असम में बहुत वर्षों तक विपक्ष के नेता थे। वे स्वतंत्रता सेनानी और बुद्धिजीवी लेखक थे। अर्णब की स्कूलिंग माउंट सेंट मेरी स्कूल दिल्ली से हुई। दिल्ली यूनिवर्सिटी के हिंदू कॉलेज से समाज शास्त्र में स्नातक करने के बाद 1994 मे ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के सेंट एंटोनी कॉलेज से सोशल एंथ्रोप्लोजी में स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की। इसके बाद उन्होंने पत्रकारिता में आने का फैसला किया। अर्णब गोस्वामी ने मीडिया में करियर की शुरुआत 'द टेलीग्राफ' अखबार से की। इसके बाद उन्होंने दिल्ली में एनडीटीवी ज्वाइन किया। वे वहां न्यूज टु नाइट और न्यूज अवर की एंकरिंग करते थे। 2004 में उन्हें एशिया के बेस्ट एंकर का अवॉर्ड मिला।

इसके बाद 2006 में अर्णब गोस्वामी ने टाइम्स नाउ न्यूज चैनल को बतौर एडिटर-इन-चीफ ज्वाइन किया। रात 9 बजे आने वाला शो न्यूज अवर काफी पसंद किया गया। इसके साथ उन्होंने 'फ्रैंक्ली स्पीकिंग विथ अर्णब' नाम से शो किया जिसमें उन्होंने बेजनीर भुट्टो, इंग्लैंड के पीएम गोर्डन ब्राउन, अफगानिस्तान के राष्ट्रपति हामिद करजई, दलाई लामा और अमेरिकी विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन का जोरदार इंटरव्यू किया। इतना ही नहीं, उन्होंने नरेंद्र मोदी के वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद पहला इंटरव्यू भी लिया। 2016 में अर्णब गोस्वामी ने टाइम्स नाउ को छोड़कर 6 मई 2017 को नये चैनल 'रिपब्लिक' की शुरुआत की। सबसे खास बात ये रही कि रिपब्लिक टीवी खुलने के पहले ही हफ्ते में टीआरपी की रेस में आ गया। अर्णब गोस्वामी बेहद मेहनती और जिद्दी इंसान हैं। वे जिस काम को करने की ठान लेते हैं उसे पूरा किये बगैर मानते नहीं हैं। अंग्रेजी न्यूज के एडिटर इन चीफ होने के बावजूद हिंदी में सफल शो करना उनकी लगन को दर्शाता है। पत्रकारिता उनका जुनून है। उन्होंने 26/11 आतंकी हमले के दौरान 65 घंटे रिपोर्टिंग की थी। उन्हें 2010 में रामनाथ गोयनका अवॉर्ड फॉर एक्सीलेंस इन जर्नलिज़्म मिल चुका है। अर्णब ने 'कॉम्बैटिंग टेररिज्म : द लीगल चैलेंज' नाम से किताब भी लिखी है। फिलहाल वे एनबीएफ के संचालन बोर्ड के अध्यक्ष हैं।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में अर्णब गोस्वामी 47वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

85.0

प्रभावशाली भारतीय

48

कोरोना से जंग में भारतीय महिला शक्ति में अग्रणी

प्रिया अब्राहम

प्रिया अब्राहम केरल के कोट्टायम की हैं। शुरू से ही उनकी रुझान साइंस में रही है। उन्होंने वेल्लोर में क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस, एमडी (मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी) और पीएचडी की हैं। डॉ. प्रिया मेहनती और दायित्व के प्रति समर्पित हैं। वे रॉयल कॉलेज ऑफ पैथोलॉजिस्ट और रॉयल सोसाइटी ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन एंड हाइजीन की सहयोगी हैं।

डॉ. प्रिया सीएमसी वेल्लोर में क्लिनिकल वायरोलॉजी विभाग की पूर्व प्रमुख भी रही हैं। कोरोना काल में उन्होंने अपना पूरा समय इस वैश्विक महामारी के रिसर्च में लगाया है। इस दौरान वे कई कई दिनों तक अपने परिवार से भी बात नहीं कर पाईं। कोरोना संक्रमण के शुरुआती दिनों में देश में एनआईवी कोविड-19 के परीक्षण का एकमात्र परीक्षण केंद्र था। ऐसे में प्रिया की जवाबदेही और बढ़ गई थी। उन्होंने कोरोना मामलों में वृद्धि को देखते हुए एनआईवी की क्षमता को बढ़ाया और कोविड-19 के नमूनों के परीक्षण का समय कम करने में सफलता पाई। प्रिया अब्राहम के नेतृत्व में, एनआईवी ने कई प्रयोगशालाओं के नेटवर्क को तमाम सुविधाएं मुहैया कराई। आज उनकी टीम की मेहनत की वजह से कोरोना की दवा और वैक्सीन तैयार हो रहे है, जिनका करीब-करीब ह्यूमन ट्रायल पूरा हो चुका है। डॉ. प्रिया अब्राहम करीब 6 महीने पहले ही नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी पुणे में निदेशक बनाई गई है। उन्होंने अपने कुशल नेतृत्व से कोरोना को मात देने में काफी हद तक कामयाबी हासिल कर ली है। डॉ. प्रिया अब्राहम विनम्र महिला हैं। उन्हें लैब में सैंपल को मॉनिटर करना बेहद पसंद हैं। डॉ. प्रिया अब्रहाम 2012 में डब्ल्यूएचओ के दिशा निर्देश में हेपेटाइटिस और एचआईवी पर हुई बैठक की प्रमुख सदस्य रही हैं। वर्ष 2017 में उन्होंने हेपेटाइटिस परीक्षण पर म्यांमार में डब्ल्यूएचओ के सलाहकार के रूप में कार्य किया।

डॉ. प्रिया अब्राहम अपनी टीम पर भरोसा करती हैं और वायरोलॉजी के क्षेत्र में महिलाओं को आगे बढने के लिए प्रेरित करने के लिए भी जानी जाती है। इस वैश्विक महामारी के समय डॉ. प्रिया अब्राहम के कार्यो की जितनी सराहना की जाए कम है।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी,पुणे की निदेशक प्रिया अब्राहम कोरोना से जंग में भारतीय महिला शक्ति में अग्रणी हैं। उन्होंने जानलेवा वायरस पर गहन अध्ययन किया और साबित कर दिया कि हालात कितने भी मुश्किल क्यों ना हो सकारात्मक साइंटिफिक रिसर्च से हर बाधा को दूर किया जा सकता हैं। ऐसे में उन्होंने कोरोना वायरस को बेहतर तरीके से समझने और उसका इलाज खोजने की कोशिश को फाइनल स्टेज तक पहुंचा दिया है।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में प्रिया अब्राहम 48वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

35.5

पत्रकारिता जगत में तेवर और प्रोफेशनल नजरिये की पहचान

शशि शेखर

49 ★★★★★

शशि शेखर ने मीडिया की नब्ज को बड़ी ही बारीकी से टटोला है। उन्हें इस बात का अंदाजा है कि जनता की जरूरतें और दिलचस्पी किन मुद्दों में है। बड़ी-बड़ी बातें किये बिना और आदर्श बघारे बगैर भी खबरों को धारदार बनाने की कला उन्हें बखूबी आती है। उन्होंने क्षेत्रीय खबरों को अहमियत दी। बड़ी खबरों का विश्लेषण और उसके गुण-दोष के आधार पर प्रकाशित किया।

शशि शेखर ने आगरा के बी आर अंबेडकर यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन करने के बाद बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी से स्नातकोत्तर किया।

शशि शेखर ने पत्रकारिता में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा भी हासिल किया है। 1980 में उन्होंने पत्रकारिता में कदम रखा। वर्ष 1984 में 'आज' अखबार के रेजिडेंट एडिटर बनाये गये। उन्होंने यूपी, बिहार और मध्यप्रदेश में आज का विस्तार किया। महज 24 साल की उम्र में वे आज अखबार के संपादक बने। इसके बाद जनवरी 2001 से जुलाई 2002 तक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के नंबर 1 'आजतक' में एक्जिक्यूटिव प्रोड्यूसर रहे। जुलाई 2002 से सितंबर 2009 तक 'अमर उजाला' अखबार में ग्रुप एडीटर रहे। सितंबर 2009 में हिंदुस्तान अखबार के प्रधान संपादक बनाए गये, उन्होंने 11 साल में हिंदी के इस अखबार को मेहनत , तेवर और लगन के बल पर 21 संस्करणों और लाइव हिंदुस्तान डॉट काम के साथ बुलंदियों पर पहुंचा दिया। उनके बारे में कहा जाता है कि वो काम करते हुए कभी थकते नहीं हैं।

खामोशी से काम करने वाले शशि शेखर के सामने अपने अखबार को लगातार नंबर वन बनाये रखने की बड़ी चुनौती है। उनकी खासियत रही है कि वे पूरी तरह से स्वनिर्मित पत्रकार हैं। वे होनहार जूनियर को प्रमोट करने में बिल्कुल नहीं हिचकते। शशि शेखर मेहनत, दूरदृष्टि और अनुशासन को सफलता का मूलमंत्र मानते हैं।

उन्होंने 'मिटता भारत बनता इंडिया', 'लीक से हटकर' और 'बदलाव की आहटें' समेत पांच पुस्तकें लिखी हैं। उन्हें 1995 में 'उत्तर प्रदेश रत्न' और 'माधव ज्योति अलंकरण' से सम्मानित किया जा चुका है।

FAME INDIA

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है ।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में शशि शेखर 49वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

85.53

प्रभावशाली भारतीय

मैगसेसे अवॉर्ड से मिली दुनिया भर में शोहरत

रवीश कुमार

रवीश कुमार ऑडियो-विजुअल मीडिया के ऐसे पत्रकार हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि चाहे आप उनसे प्यार करें या नफरत, उन्हें नजरंदाज नहीं कर सकते। अपनी अमिट छाप छोड़ने के तौर पर मशहूर इस शख्स की बातों में एक तरफ जहां गजब की मासूमियत है, वहीं दूसरी तरफ वे अपने शब्दों से जबरदस्त प्रहार करने में माहिर हैं। वे चैनल के प्राइम टाइम पर सबसे ज्यादा देखे जाने वाले टीवी न्यूज शो में अपने मोनोलॉग के लिए जाने जाते हैं।

रवीश कुमार का जन्म 5 दिसंबर 1974 को बिहार के मोतिहारी के जितवारपुर गांव में हुआ। उन्होंने पटना के लोयला हाईस्कूल से अपनी शुरुआती शिक्षा हासिल की और इसके बाद दिल्ली आ गये। दिल्ली यूनिवर्सिटी के देशबंधु कॉलेज से इतिहास में स्नातक किया। बाद में उन्होंने देशबंधु कॉलेज से इतिहास में एमफिल भी की। उन्होंने भारतीय जन संचार संस्थान से पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया।

रवीश कुमार 1996 में एनडीटीवी इंडिया से जुड़े। एक रिसर्चर से सफर की शुरुआत कर वे कुछ ही महीनों में रिपोर्टर बन गये और फिर एंकर और इसके बाद सीनियर कार्यकारी संपादक के पद तक पहुंच गये। उन्हें हर घटनाक्रम पर करीबी नजर रखने के लिए जाने जाना जाता है। 'रवीश की रिपोर्ट' और 'प्राइम टाइम' सहित उनके कई शो भारत ही नहीं, दुनिया भर में मौजूद हिंदी भाषी लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय हैं।

रवीश कुमार ने मीडिया में अपनी अलग पहचान बनायी है और उनका अंदाज औरों से जुदा व दमदार है। वे खुद कहते हैं कि विरोध उनका हथियार भी है और यार भी। उनके बारे में अक्सर कहा जाता है कि वे मुख्यधारा के उलट पत्रकारिता करते हैं। कहते हैं उन्होंने इसी को अपनी शक्ति बना ली। वे सरकार व व्यवस्था के सताये लोगों की सशक्त आवाज बन कर उभरे हैं और भविष्य में वे इस पर पुरजोर तरीके से काम करने की इच्छा भी रखते हैं। उन्होंने लघु कथा लेखन की एक अनूठी शैली विकसित की है और वे इन कहानियों को लप्रेक-लगहु प्रेम कथा कहते हैं। उन्हें पढ़ने-लिखने का शौक है और उन्होंने कई किताबें लिखी है जिनमें इश्क में शहर होना के अलावे देखते रहिये, और रवीशपन्ती अहम हैं।

पत्रकारिता के क्षेत्र में रवीश कुमार के काम को समय समय पर बेहद सराहा गया है। वर्ष 2010 में गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार, 2013 में रामनाथ गोयनका एक्सीलेंस इन जर्नलिज्म अवॉर्ड और 2017 में पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए प्रथम कुलदीप नायर पत्रकारिता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अगस्त 2019 में उन्हें निर्भीक पत्रकारिता के लिए एशिया का नोबेल कहा जाने वाला रैमन मैग्सेसे अवॉर्ड से भी सम्मानित किया गया।

सर्वे स्रोत

व्यक्तित्व	(✓)	आदर्शवादिता	(✓)
लोकप्रियता	(✓)	व्यावहारिकता	(✓)
दूरदर्शिता	(✓)	नेतृत्व क्षमता	(✓)
जागरूकता	(✓)	कल्याणकारी कार्य	(✓)
कार्यशैली	(✓)		

* आदि नौ मानदंडों पर किये गये सर्वे में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के 12700 प्रबुद्ध लोगो की राय शामिल है।

फेम इंडिया मैगजीन और एशिया पोस्ट के '50 प्रभावशाली व्यक्ति 2020' के सर्वे में रवीश कुमार 50वें स्थान पर हैं।

वोट प्रतिशत

35.2

फेम इंडिया के बढ़ते कदम ...
सफलता के 8 वर्ष ....

सोच बदलें, समाज बदलेगा

सदस्यता फार्म

मै फेम इंडिया की सदस्यता ले रहा / रही हूं

श्रीमती/ कुमारी/ श्री ....

पता: ....

.... राज्य ....

फोन (निवास) .... मोबाइल ....

ई-मेल ....

कृपया .... के नाम .... का डी डी

या चेक नं. ....

बैंक का नाम ....

चैक फेम इंडिया के नाम पर देय होगा
दिल्ली के बाहर से भेजे गए चेक में कृपया 30 रूपया अधिक भेजें

कृपया इस फार्म को भरकर डी डी या चेक के साथ हमें इस पते पर भेजें

फेम इंडिया

फेम इंडिया पब्लिकेशन प्रा.लि. 762, F- 8, सेक्टर 50, नोएडा 201304 (उ.प्र .)
फोन नं. 09711535422
ई मेल-ई मेल- info.fameindia.co

अवधि	अंको की संख्या	कवर मूल्य	सब्सक्रिप्शन मूल्य	बचत
1 वर्ष	12	1200	1000	200
2 वर्ष	24	2400	2000	400
3 वर्ष	36	3600	3000	600

POWERFUL. AGILE.
INTELLIGENT.
THE ALL-NEW BMW 5 SERIES. BUSINESS ATHLETE.
M BB4102
Sheer
Driving Pleasure